।।ओ३म्।। प्रत्येक माह दिनांक २५ को प्रकाशित एवं प्रेषित

वैदिक संसार

हिन्दी मासिक

वर्ष : ८ • अंक : ७ • मई २०१९ • मूल्य : २५/-

शाब्दिक ज्ञान के नहीं! आत्मिक ज्ञान के धनी...

मानव जीवन रूपी चादर को इस प्रकार ओढ़ा कि उसमें किसी प्रकार का दाग न लगने दिया।

मत, पन्थ, सम्प्रदाय की दलदल से ऊपर उठकर, धर्म के नाम पर प्रचलित अन्धविश्वास, पाखण्ड व मूर्तिपूजा पर करारा प्रहार कर मानव मात्र को ईश्वर के वास्तविक स्वरूप व मानव जीवन के मर्म को उपदेशित करने वाले, प्रभु भक्ति के साथ आजीविका कर्म को समर्पित

सादगी, सरलता, सौम्यता की प्रतिमूर्ति

कीर्ति शेष : सन्त कबीर

दिवंगत पुण्यात्मा को जयन्ति दिवस ज्येष्ठ पूर्णिमा पर कृतज्ञ मानव जाति की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि

वैदिक संसार परिवार हुआ गौरवान्वित

वैदिक संसार के सम्पादक गजेश शास्त्री द्वारा संस्कृत विषय में एम.ए. (आचार्य) परीक्षा वर्ष २०१५-१६ में अटल बिहारी वाजपेयी कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर से ७० प्रतिशत अंक प्राप्त कर सफलता अर्जित की।

गजेश शास्त्री द्वारा यह सफलता देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के स्तर पर सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर आपको कै. अन्नपूर्णाबाई पत्नी कै. गंगाधर राव वाखले स्वर्ण पदक एवं स्व. पण्डित रामनारायण शास्त्री स्वर्ण पदक (दोहरे स्वर्ण पदक) प्रदान कर देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर द्वारा सम्मानित किया गया। विश्वविद्यालय प्रशासन की घोर लापरवाही के कारण आपको दीक्षांत समारोह की समय पर सूचना न दी जाकर सामान्य दिवस में महाविद्यालय बुलाकर साधारण रूप से दो स्वर्ण पदक (मैडल) तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये। स्वर्ण पदक प्राप्ति का समाचार प्राप्त होने पर गुरुजनों, महाविद्यालयीन अध्यापक गणों, परिवारजनों, मित्रगणों एवं स्नेहीजनों में हर्ष व्याप्त हो गया तथा आप सभी ने गजेश शास्त्रीजी को इस उपलब्धि पर शुभकामनाएँ प्रेषित की।

उल्लेखनीय है कि शास्त्रीजी महर्षि दयानन्द सरस्वती उपदेशक महाविद्यालय, टंकारा (गुजरात) से स्नातक (शास्त्री) तथा राष्ट्रीय संस्कृत शिक्षा संस्थान के त्रिशुर (केरल) स्थित महाविद्यालय से शिक्षा शास्त्री की उपाधि अर्जित कर चुके हैं। शास्त्रीजी के द्वारा दादरा नगर हवेली में आयोजित शिक्षक भर्ती परीक्षा में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा मध्यप्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा में संस्कृत विषय में १०० में से ९६ अंक प्राप्त किये। शास्त्रीजी ने विश्वगुरु के पद पर प्रतिष्ठापित आर्यावर्त्त की इस भूमि की सर्वोत्कृष्ट तथा समस्त भाषाओं की जननी देवभाषा संस्कृत में उपरोक्त कीर्तिमान ऐसे समय में प्राप्त किया है जब देवभाषा संस्कृत तो दूर, हमारी राजभाषा हिन्दी से भी मुख मोड़कर लोग अंग्रेजीयत की ओर भाग रहे हैं।

आर्य समाज, ग्राम : खामखेड़ा (बैजनाथ), जनपद : सीहोर (म.प्र.) का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

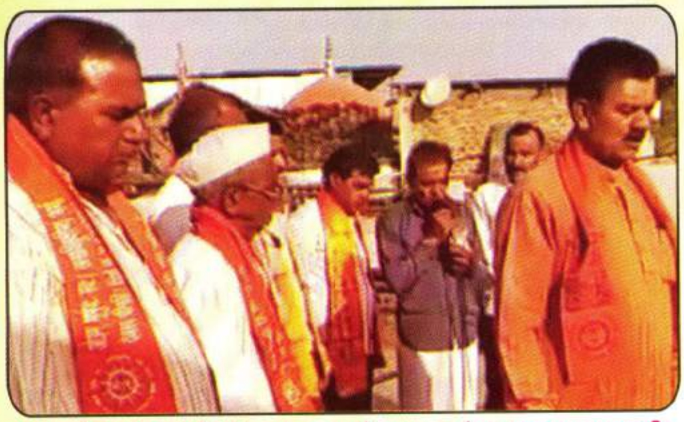

उत्सव के प्रारम्भ में ओ३म् ध्वजारोहण करते प्रधान प्रकाश जी आर्य, मंत्री श्री नरेन्द्र जी एवं अन्य आर्यजन।

मंचस्थ भानुप्रकाश जी शास्त्री, बरेली (उ.प्र.) एवं आचार्य योगेन्द्र जी याज्ञिक, होशंगाबाद (म.प्र.) भजन-उपदेश करते हुए।

आर्य समाज भवन पर आचार्य योगेन्द्र जी याज्ञिक के ब्रह्मत्व में सम्पन्न देवयज्ञ में आहुतियाँ प्रदान करते आर्यजन।

महर्षि दयानन्द सरस्वती मांगलिक भवन पर प्रवचन सत्र में वेद अमृत पान करते हुए श्रद्धालु। (विस्तृत विवरण यात्रा वृत्तान्त में)

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
वैदिक संसार

वैदिक संसार

आरएनआई–एमपीएचआईएन
२०१२/४५०६९
डाक पंजीयन : एमपी/आईडीसी/ २०१८–२०
वर्ष : ८, अंक : ०७
अवधि : मासिक, भाषा : हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ मई, २०१९
आर्ष तिथि : ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठी
सृष्टि सम्वत् : १,९७,२९,४९,१२१
शक सम्वत् : १९४१
विक्रम सम्वत् : २०७६, दयानन्दाब्द : १९६

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इन्दौर ०९४२५०६९४९१
(सायं ६ बजे से प्रातः ८ बजे तक मौन काल)

सम्पादक
गजेश शास्त्री, इन्दौर (म.प्र.)

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इन्दौर–१८, मध्यप्रदेश

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

संरक्षक (१५ वर्ष)	२५,०००/–
आजीवन सहयोग (१५ वर्ष)	२,५००/–
पंचवार्षिक सहयोग :	१,१००/–
त्रैवार्षिक सहयोग	७००/–
वार्षिक सहयोग	३००/–
एक प्रति	२५/–
अन्य सहयोग	स्वैच्छानुसार

बैंक खाता धारक– वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक
शाखा : ओल्ड पलासिया, इन्दौर
चालू खाता क्र. ३२८५९५९२४७९
आईएफएससी : एसबीआईएन०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज : 'वैदिक संसार'

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ क्र.
वेद मन्त्र : भावार्थ एवं वैदिक संसार के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
महत्वपूर्ण पर्व–दिवस, जयन्तियाँ–पुण्यतिथियाँ	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०४
जागो! विश्वगुरु श्रेष्ठ महापुरुषों के वंशजों...	सम्पादकीय	०५
विवाह पर्व 'अनुशासन पर्व'	गजेन्द्रसिंह आर्य	०७
एक बार फिर आओ	डॉ. लक्ष्मीनिधि	०८
महान् विभूति– सन्त कबीर	डोंगरलाल पुरुषार्थी	०९
जीवन को महान बनाने के... वैदिक सन्देश	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती	११
प्रभु प्रार्थना	आर्य पी.एस. यादव	११
ब्रह्म का स्वरूप	मृदुला अग्रवाल	१२
आनन्द किन–किन परिस्थितियों में मिलता है	खुशहालचन्द्र आर्य	१५
पर स्वयं नजर न आया	ओमप्रकाश आर्य	१५
ज्योतिष पाठ–४ : हेमन्त व शिशिर ऋतु	आचार्य दार्शनेय लोकेश	१६
महर्षि दयानन्द भाष्यानुसार– ऋग्वेद ज्ञानागार के	पं. सत्यपाल आर्य	१७
अपनी आँखों से	ओमप्रकाश बजाज	१८
जय श्री कृष्णा अथवा कृष्ण?	आचार्य रामगोपाल सैनी	१८
महर्षि दयानन्द जगा गये	अम्बालाल विश्वकर्मार्य	१८
मन्त्रविद् और आत्मविद्	रामफलसिंह आर्य	१९
पौरुषेय शक्ति उगाती देश की दिव्य नारियाँ	देवनारायण भारद्वाज	२१
सैद्धान्तिक चर्चा–३ व आर्ष बोध–१३	पं. कमलेश कुमार अग्निहोत्री	२३
प्रदूषण का पाप	मोहनलाल दशोरा	२४
भारत वीर सपूत : नरेन्द्र मोदी	नन्दलाल निर्भय	२५
सुख का आधार : गृहस्थ आश्रम	डॉ. अशोक आर्य	२५
यजुर्वेद में गणतन्त्रात्मक शासन	शिवनारायण उपाध्याय	२७
आर्य समाज कल आज और कल	नरसिंह सोनी आर्य	२८
राजनीति में कैसे व्यक्तियों का नेतृत्व हो	पं. उम्मेदसिंह विशारद	२९
भगवान विश्वकर्माजी की ज्ञान गंगा : वेद...	पुरुषोत्तम गोठवाल	३०
अनेक रोगों में हितकारी : प्याज	हरिश्चन्द्र 'आर्य'	३१
तथाकथित जन्मना ब्राह्मणवाद की गिरफ्त से	आचार्य रामगोपाल सैनी	३२
यात्रा वृत्तांत : परमपिता परमात्मा की असीम...	सुखदेव शर्मा	३३
वैदिक संसार को आप महानुभावों का आर्थिक...	वैदिक संसार	३९
शोक सूचना	संकलित	४२

वेद मन्त्र एवं भावार्थ

ओ३म् मस्त्वा सुशिप्र मन्दिभिः स्तोमेभिर्विश्वचर्षणं। सचैषु सवनेष्वा।।ऋ.१.९.३

भावार्थ : जिसने संसार के प्रकाश करने वाले सूर्य को उत्पन्न किया है, उसकी स्तुति करने में जो श्रेष्ठ पुरुष एकाग्रचित्त है, अथवा सबको देखने वाले परमेश्वर को जानकर सब प्रकार से धार्मिक और पुरुषार्थी होकर सब ऐश्वर्य को उत्पन्न और उसकी रक्षा करने में मिलकर रहते हैं, वे ही सब सुखों को प्राप्त होने के योग्य वा औरों को उत्तम-उत्तम सुखों के देने वाले हो सकते हैं।

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार आर्यावर्त्त के माह जून २०१९ के महत्वपूर्ण पर्व एवं दिवस

१५ गते	शुचि मास	१९४१ शक सं.	आषाढ़ शुक्ल द्वितीया २०७६	५ जून	विश्व पर्यावरण दिवस
१७ गते	शुचि मास	१९४१ शक सं.	आषाढ़ शुक्ल चतुर्थी २०७६	७ जून	क्षय तिथि पंचमी २९:१९, पुष्य– २४:१३
१९ गते	शुचि मास	१९४१ शक सं.	आषाढ़ शुक्ल सप्तमी २०७६	९ जून	सचिच्दानन्द हीरानन्द वात्सायन पुण्यतिथि
२१ गते	शुचि मास	१९४१ शक सं.	आषाढ़ शुक्ल नवमी २०७६	११ जून	रामप्रसाद बिस्मिल जयन्ति
२२ गते	शुचि मास	१९४१ शक सं.	आषाढ़ शुक्ल दशमी २०७६	१२ जून	चित्रा– २४:०२
२७ गते	शुचि मास	१९४१ शक सं.	आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा २०७६	१७ जून	गुरु पूर्णिमा
२८ गते	शुचि मास	१९४१ शक सं.	आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा २०७६	१८ जून	पूर्वाषाढ़– २१:४९, उत्तराषाढ़– २७:२७, रानी लक्ष्मीबाई पुण्यतिथि
२९ गते	शुचि मास	१९४१ शक सं.	आषाढ़ कृष्ण द्वितीया २०७६	१९ जून	गुरु हरगोविन्द जयन्ति
३१ गते	शुचि मास	१९४१ शक सं.	आषाढ़ कृष्ण चतुर्थी २०७६	२१ जून	पंचक प्रारम्भ– १६:३४, कर्क सक्रान्ति– २१:२५ वर्षा ऋतु दक्षिणायन एवं श्रावण प्रारम्भ, सूर्य परम उत्तर क्रान्ति पर्व उत्तरी गोलार्द्ध में दीर्घतम दिनमान व लघुतम रात्रिमान (दक्षिणी गोलार्द्ध में विपर्यय), अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस
०२ गते	नभस् मास	१९४१ शक सं.	आषाढ़ कृष्ण षष्ठी २०७६	२३ जून	श्यामाप्रसाद मुखर्जी पुण्यतिथि
०३ गते	नभस् मास	१९४१ शक सं.	आषाढ़ कृष्ण सप्तमी २०७६	२४ जून	रानी दुर्गावती पुण्यतिथि
०६ गते	नभस् मास	१९४१ शक सं.	आषाढ़ कृष्ण नवमी २०७६	२७ जून	पंचक समाप्त– २७:०८, बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय जयन्ति, विश्व मधुमेह दिवस
०८ गते	नभस् मास	१९४१ शक सं.	आषाढ़ कृष्ण एकादशी २०७६	२९ जून	भरणी– २७:०९
०९ गते	नभस् मास	१९४१ शक सं.	आषाढ़ कृष्ण द्वादशी २०७६	३० जून	क्षय तिथि त्रयोदशी– २८:५८, नागार्जुन जयन्ति, दादाभाई नौरोजी पुण्यतिथि

नवीन पंचांग छप चुका है, अतिशीघ्र मँगवाएँ, लाभ उठाएँ

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

किसी भी शंका–समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनेय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें

अन्य स्रोतों से प्राप्त जून माह के कुछ विशेष दिवस

०१ बाल सुरक्षा दिवस
०३ महेश जयन्ति
०६ महाराणा प्रताप एवं वीर छत्रसाल जयन्ति
०९ विरसा मुण्डा बलिदान दिवस
११ आर्य स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती बलिदान दिवस
१३ सरदार उधमसिंह बलिदान दिवस
१५ आर्य पं. चमूपति एम.ए.पुण्यतिथि
१६ सिन्धु सम्राट दाहिरसिंह बलिदान दिवस
१८ आर्य मा. आत्माराम अमृतसरी जयन्ति
२६ अन्तरराष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस
२७ शास्त्रार्थ महारथी आर्य गणपति शर्मा पुण्यतिथि

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान– वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि-मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्व राष्ट्रप्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित–पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन–मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्–साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी दयानन्द के समस्त मानव जाति पर किये गये उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार–प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

सम्पादकीय

जागो! विश्वगुरु, श्रेष्ठ महापुरुषों के वंशजों जागो...

प्राणी मात्र के लिए हितकारी परमपिता परमेश्वर की वाणी वेद तथा वेद ज्ञान पर आधारित वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना हेतु महर्षि दयानन्द सरस्वती का सम्पूर्ण जीवन समर्पित रहा। आपने मानव मात्र से आह्वान किया **'वेदों की ओर लौटो'**। वेद तथा वैदिक धर्म सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार हेतु आपने १८७५ में **'आर्य समाज'** की स्थापना की। आर्य समाज की स्थापना का मुख्य लक्ष्य जन-जन तक वैदिक ज्ञान पहुँचा कर समूचे संसार में सुख-शान्ति स्थापित करते हुए प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को सफलीभूत करना था। आर्य समाज के सुचारू संचालन तथा लक्ष्य प्राप्ति हेतु १० नियमों का निर्धारण किया गया। अन्तिम नियम मानव मात्र को दिशा देता है कि **'सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।'** कितना सुन्दर नियम है, इस नियम के माध्यम से महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी ने संसार को उत्कृष्ट व्यवस्था देने का प्रयास किया है।

नियम कहता है **'सब मनुष्यों को'** अर्थात् प्रचलित जाति, मत-पन्थ, सम्प्रदाय से ऊपर उठकर मनुष्य मात्र को **'सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए'** अर्थात् जो नियम-व्यवस्था से अन्य प्राणियों के हित जुड़े हुए हों ऐसे नियम के पालने में परतन्त्र रहना चाहिए। परतन्त्र से आशय व्यवस्था के अधीन है। महर्षि का आशय है कि व्यक्ति स्वतन्त्रता के नाम पर स्वच्छन्द-उच्छृंखल न बने बल्कि सबके हित के नियमों का पालन प्रसन्नतापूर्वक कर एक सभ्य नागरिक बनें।

नियम का अन्तिम वाक्य है **'प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें'** ऐसे नियम जिनके पालन से स्वयं का हित तो सिद्ध होता है किन्तु अन्यों को भी हानि नहीं पहुँचती ऐसे नियमों का पालन अथवा कार्य करने में प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र रहे तो किसी को क्या आपत्ति हो सकती है?

वर्तमान के वातावरण में हम देख रहे हैं व्यक्ति मात्र अपना हित देखता है। चाहे स्वयं का हित साधने में औरों का अहित होता हो तो होता रहे उन्हें इससे कोई सरोकार नहीं। और यह सब वह स्वतन्त्रता के नाम पर करता है। स्वतन्त्रता का यह आशय कदाचित नहीं है। यह स्वतन्त्रता का दुरुपयोग होकर स्वच्छन्दता है। महर्षि के नियमानुसार आप ऐसे कार्य करने में स्वतन्त्र हैं जिनसे आपका हित होता है और उन कार्यों को करने में अन्य किसी को भी कोई कष्ट नहीं पहुँचता अथवा अन्य का किसी प्रकार का अहित नहीं होता।

सामाजिक सर्वहितकारी नियम हो अथवा कार्य उसका परिपालन प्रत्येक व्यक्ति को चाहे उसे थोड़ा बहुत कष्ट हो, उसके हित में थोड़ी न्यूनता भी क्यों न आ जाए उसे ऐसे नियम तथा कार्य को सहर्ष स्वीकारना चाहिए अर्थात् एक पक्षीय स्वार्थी न होकर सबके लिए चिन्तनशील रहना चाहिए।

वैदिक शिक्षा प्रणाली में बालक ७-८ वर्ष आयु पश्चात् गुरु के आश्रम में विद्या अर्जन हेतु प्रस्थान कर जाता था और अपने आपको सामाजिक सर्वहितकारी नियमों से सम्बद्ध कर लेता था। इस प्रकार गुरुकुल की व्यवस्था- नियम में रहने से उसकी स्वतन्त्रता नष्ट न होकर केवल स्वच्छन्दता नष्ट होती है। जबकि प्रत्येक हितकारी नियम भोजन, वस्त्र, विद्यार्जन आदि में वह स्वतन्त्र है। गुरुकुल में रहकर नियम-व्यवस्था के अधीन नहीं रहेगा तो उसे क्षणिक सुख तो मिल जाएगा किन्तु गुरुकुल के अन्य विद्यार्थियों के साथ-साथ उसके स्वयं के लिए भी उसका व्यवस्था विरुद्ध व्यवहार हानिकारक रहेगा।

विद्यार्जन के पश्चात् वह बालक स्वतंत्र है कि वह संन्यास आश्रम को स्वीकार करें अथवा गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करें। संन्यास आश्रम हो अथवा गृहस्थाश्रम दोनों में स्वतन्त्रता के नाम पर स्वच्छन्दता कहीं नहीं है। ब्रह्मचर्य आश्रम (विद्यार्जन काल) हो अथवा गृहस्थाश्रम या वानप्रस्थ या संन्यास आश्रम प्रत्येक आश्रम की अपनी-अपनी व्यवस्था है, अपने-अपने नियम हैं। जो ब्रह्मचर्य आश्रम में व्यवस्था के अधीन नहीं रह पाया वह किसी भी आश्रम में सफल नहीं हो सकता।

मेरी सुपुत्री भाग्यश्री के विवाह संस्कार उपलक्ष्य पर लिए गए चित्रों को वैदिक संसार के जनवरी २०१९ के अंक में प्रकाशित किया गया था। पृष्ठ क्र. ०२ पर सबसे ऊपर दायीं ओर के चित्र में मेरी सुपुत्री का परिधान व्यवस्था और नियम विरुद्ध था। जिससे आर्यों विशेषकर वैदिक धर्म-संस्कृति के प्रति चिन्तनशील महानुभावों का मन आहत हुआ। सर्वप्रथम मुझे ज्येष्ठ भ्राता का सम्मान देने वाली बहन मृदुला अग्रवाल तथा अन्य अनेक महानुभावों के साथ-साथ ऋषि भक्त-वेदनिष्ठ भ्राता श्री गजेन्द्रसिंह जी आर्य की प्रतिक्रिया प्राप्त हुई। यह भी सम्भव है कि पत्रिका में उपरोक्त चित्र को देखकर अन्य अनेक बन्धुओं तथा विवाह संस्कार के समय उपस्थित महानुभावों

श्रीयुत शर्माजी, सादर नमस्ते अस्वस्थ होने के कारण बिटिया भाग्यश्री के विवाह संस्कार में नहीं आ सका, नवदंपत्ती को आशीर्वाद स्वरूप अपनी भावनाएँ प्रेषित करता हूँ-

भाग्यश्री अर्जुन शर्मा का, पाणिग्रहण संस्कार हुआ।
पढ़कर के यह समाचार, हृदय को हर्ष अपार हुआ।।
ये दोनों प्यारे पति पत्नी, सिया राम समान महान बनें।
बन करके रुक्मणि श्रीकृष्ण, ये सर्व गुणों की खान बने।।

ईश्वर की कृपा हो इन पर, सौ वर्ष जगत में ये जियें।
सत्संग करें, स्वाध्याय करें, जीवन भर वेद सुधा पीये।।
हे जगत् पिता, हे जगदीश्वर, कर दो कृपा इन दोनों पर।
ये तीनों लोकों में आदर पाएँ, हो इनका नाम अमर।।

जगत गुरु ऋषि दयानन्द से, बन जाएँ, अद्‌भुत ज्ञानी।
कर्ण और भामाशाह जैसे, बन जाएँ दोनों दानी।।
विद्वानों का सम्मान करें, बन वैदिक मर्यादा पालक।
कह नन्दलाल निर्भय ये दोनों, बन जाएँ, मानव लायक।।

अन्त में मैं दोनों के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ। मेरी ओर से समस्त परिजनों- स्नेहीजनों को सादर नमस्ते तथा बच्चों को शुभाशीष विदित हो।

● **नन्दलाल निर्भय पत्रकार**
चलभाष : ९८१३८४५७७४

को भी अप्रिय लगा हो किन्तु संकोचवश वे कोई प्रतिक्रिया नहीं दे पाए। उपरोक्त कृत्य असामाजिक, सर्वअहितकारी, संस्कृति विरुद्ध, पारिवारिक तथा मानवीय मर्यादाओं के प्रतिकूल अत्यन्त भर्त्सनीय था। जिसकी जितनी भर्त्सना की जाए कम है। इसके लिए मैं खेद व्यक्त करता हूँ और समस्त महानुभावों से क्षमा याचना करता हूँ।

वैसे तो वेदादि शास्त्रों के ज्ञान प्रकाश अभाव में तथा पाश्चात्य भोगवाद की आंधी में सांस्कृतिक वैचारिक प्रदूषण चहूँ ओर नग्न नृत्य कर रहा है किन्तु उन महानुभावों का दायित्व ऐसे घोर पतनकाल में और बढ़ जाता है जो अपने आपको धर्म–संस्कृति रक्षक, ऋषि दयानन्द भक्त तथा समाजसेवी कहते हैं अथवा मानते हैं। मेरे द्वारा आयोजित विवाह संस्कार मेरी अपनी व्यक्तिगत लौकेषणा तथा असत्य वाह–वाही का कुदर्शन न होकर वैदिक धर्म–संस्कृति के प्रचार–प्रसार को समर्पित होकर, अन्यों के लिए कुछ प्रेरणा प्राप्त होने हेतु यह आयोजन था। इसी कारण इसे **'आर्यों का महाकुम्भ'** नाम दिया गया था और पत्रिका में भी इसे विस्तार से प्रकाशित करने का भी यही उद्देश्य था कि हम अन्यों के समक्ष संस्कृति के अनुकूल आयोजन का उदाहरण प्रस्तुत कर पाए जिससे अन्यों को भी प्रेरणा प्राप्त हो। जिसका पूर्ण प्रयास था और उसे करने का भी प्रयास किया गया किन्तु संस्कारों, आदर्शों और संस्कृति की विकराल जलती होली से मैं भी नहीं बच पाया। क्या करता? अल्पज्ञ–अल्प शक्तिमान जीवात्मा जो हूँ। सुपुत्री के विवाह के कार्यभार बोझ तले दबे एक पिता जो बेटी को जीवनभर प्रत्येक अकरणीय कर्मों के लिए सचेत करता रहा, जागरूक करता रहा। अन्य पिताओं के जैसे आँख पर पट्टी बाँधकर सुपुत्री तो क्या सुपुत्रों को भी स्वच्छन्दता को अंगीकार नहीं करने दिया। आज भी सुपुत्र–सुपुत्री, पुत्रवधुएँ, माता–पिता बनने के बाद भी अच्छी तरह परिचित हैं कि किन–किन कार्यो से मैं प्रसन्न–अप्रसन्न होता हूँ। मुझे तो स्वप्न में भी विश्वास नहीं था कि इस प्रकार का घटनाक्रम घटित हो जाएगा। क्या एक पिता अपनी सुपुत्री के पहने जाने वाले वस्त्रों की पड़ताल करता रहे? मुझे तो यह जानकारी में तब आया जब चित्र सामने आए। अब तो एक ही उपाय था कि चित्र पत्रिका में प्रकाशित नहीं करूँ। यह तो और अधर्म की बात हो जाती कि किया कुछ और प्रदर्शित किया कुछ और, यह भी तो असत्य व्यवहार है। अत: जैसा था वैसा ही प्रकाशित किया गया।

भ्राता श्री गजेन्द्रसिंहजी आर्य ने इस विषय पर प्रतिक्रिया देते हुए कुछ लिखने पर उसे प्रकाशित करने का अनुरोध किया। मैंने आपको कहा आप इस विषय पर कोई संकोच न करते हुए खुलकर लिखें अवश्य प्रकाशित करूँगा। **आर्य! आर्य ही होते हैं** आपने संकेत रूप में ही लिखा किन्तु अत्यन्त सुन्दर, प्रेरणास्पद लिखा आपने **'विवाह पर्व'** को **'अनुशासन पर्व'** नाम दिया कितना सुन्दर है। जो विद्यार्जन काल में नियम, व्यवस्था में अपने–आपको ढाल लेता है वह नियमों का दृढ़ व्रती होकर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता है। मनु महाराज ने भी मानव जीवन के प्रथम संविधान **'मनुस्मृति'** में व्यवस्था दी है कि वैदिक ज्ञान विहीन व्यक्ति गृहस्थाश्रम में प्रवेश नहीं करे। क्यों? कारण सामने आया कि वेद ज्ञान विहीन व्यक्ति गृहस्थाश्रम में प्रवेश करेंगे तो संसार की व्यवस्था नष्ट–भ्रष्ट हो जाएगी क्योंकि वे अपनी सन्तान को उत्तमोत्तम शिक्षा– गुण–संस्कार नहीं दे पाएँगे।

प्रस्तुत है पृष्ठ ७ पर उत्तमोत्तम माननीय मूल्यों से युक्त प्रेरणास्पद 'शास्त्र संस्कृति सम्मत लेख' **'विवाह पर्व–अनुशासन पर्व'**। उपरोक्त लेख के आलोक में मैकाले द्वारा थोपी गई दूषित शिक्षा–दीक्षा द्वारा भोगवाद से ग्रसित हमारी सन्तती को बचाने का प्रयास करें और जैसा मेरे साथ घटित हुआ और मैं दु:खी और संतप्त हुआ, ऐसा औरों के साथ न हो।

इसके लिए आवश्यक है हम सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहें तथा ऋषि के आह्वान **'वेदों की ओर लोटो'** को आत्मसात करते हुए हम वेद मार्ग के पथिक बनें। ऋषि ऋण से उऋण होने का और कोई उपाय नहीं हो सकता कि हम **मानव मात्र की हितकारी वैदिक संस्कृति के विरुद्ध उपजी दूषित शिक्षा, भाषा, भूषा, भोजन और व्यवहारों की खरपतवार को उखाड़ फेंके।** अन्यथा सामाजिक सर्वहितकारी नियम में परतन्त्र नहीं रहने वाले व्यक्ति का गृहस्थाश्रम प्रयोजन विफल होकर उसका मानव जीवन निष्फल हो जाता है।

मैं भ्राताश्री गजेन्द्रसिंहजी आर्य का आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने अनुज स्नेह की वर्षा से युक्त इस सम्बन्ध में वार्तालाप किया और इस विषय को केन्द्र में रखकर हम सभी का मार्गदर्शन किया। ■

भारतीय नव संवत्सर पर यज्ञ का आयोजन

सोजत, जनपद– सिरोही (राज.)। नगर के केंद्र धानमण्डी प्रांगण में नगर के सभी धार्मिक संगठनों के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय नव संवत्सर के उपलक्ष्य में विश्व–शान्ति, राष्ट्र समृद्धि एवं पर्यावरण शुद्धि के लिए यज्ञ किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य समाज सोजत के मन्त्री हीरालाल आर्य ने वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ यज्ञ करवाया। इस विशाल यज्ञ कार्यक्रम में नगर के गणमान्यजनों, जिला संघ चालक डॉ. श्रीलालजी, सम्पादक : गीता स्वाध्याय, बजरंग दल के अविनाश जांगिड, हनुमानचन्द गहलोत, आर्य समाज के साँवतराज सिंगाड़िया, जगमोहन गुप्ता तथा विभिन्न संगठनों जैसे गायत्री परिवार, सनातन धर्म ट्रस्ट, धर्म जागरण मञ्च आदि के पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं ने उपस्थित रहकर यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए हीरालाल आर्य ने यज्ञ का महत्व बताते हुए कहा कि **''यज्ञौ वै श्रेष्ठतमं कर्म:''** अत: हमें मानव जीवन पाकर धर्म–अर्थ–काम व मोक्ष (पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति करना है तो निश्चय ही यह यज्ञ हमें उपरोक्त लक्ष्य तक पहुँचा सकता है। वैदिक युग की भाँति हम घर–घर यज्ञ प्रारम्भ कर देते हैं तो पृथ्वी की अनेक प्रदूषण सम्बन्धी समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं। पूर्व की भाँति पुन: पूरी पृथ्वी पर सर्दी–गर्मी–वर्षा, ऋतुएँ पूर्ण ऊर्जा के साथ आकर हमारी पृथ्वी को अन्न, जल, फल–फूलों तथा औषधियों से परिपूर्ण करती रहेंगी। पृथ्वी पर जीवमात्र सुखपूर्वक जीवन–यापन कर सकेंगे।

डॉ. श्रीलाल सुथार ने आपसी मतभेद भुलाकर प्रेम, सौहार्द व मिल–जुलकर रहने की प्रेरणा दी। धर्म जागरण मंच के प्रचारक गोविन्द सिंह ने वैदिक संस्कृति की श्रेष्ठता पर प्रकाश डाला। इस विशाल कार्यक्रम में सांवतराज सिंगाड़िया, अरविन्द द्विवेदी, सुगन सिंह दिव्यांशु, कैलाश चावला, सुरेश ओझा, हजारी राम प्रजापत, यशवन्त सोनी, अशोक सेन, सोहनलाल मेवाड़ा, एडवोकेट चन्द्रशेखर श्रीमाली उपस्थित रहे।

● हीरालाल आर्य

विवाह पर्व 'अनुशासन पर्व'

● **गजेन्द्रसिंह आर्य** *वैदिक प्रवक्ता,*
जलालपुर, जनपद : अनूप शहर (उ.प्र.)
चलभाष : ९७८३८९७५११

वैदिक काल से ही ऋषि, महर्षि एवं महान दिव्यात्माओं ने विवाह को सृष्टि संचालन में अनुशासन पर्व नाम से सम्बोधित किया है। समाज में एक पवित्र सुचारू व्यवस्था बनी रहती है सभी मनुष्य एक सामाजिक संविधान में रहने से उनकी चारित्रिक एवं सांस्कृतिक मर्यादाएँ बनी रहती हैं। चारित्रिक एवं सांस्कृतिक की सुबोधता से ही मनुष्य का मानसिक विचार उच्च कोटि का बना रहता है। यही कारण है कि **विवाह समाज को सुदृढ़ करने की एक आधारशिला है।**

विवाह युवावस्था में ही होना चाहिए क्योंकि युवावस्था में शरीर सुदृढ़ और सुडौल हो जाता है अर्थात् परिपक्वता आ जाती है और विचार भी सुस्पष्ट हो जाते हैं। इसी कारण युवावस्था ही विवाह की सांस्कृतिक अवस्था मानी जाती है। अन्य समस्त अवस्थाएँ बेमेल एवं निरर्थक होती हैं जो पूर्णतः अवैदिक एवं अवैज्ञानिक हैं। अतः विवाह को सदैव वैदिक मतानुसार सांस्कृतिक अवस्था में ही करना चाहिए। **वैदिक युग में बाल विवाह या अनमेल विवाह जैसी कुप्रथाएँ नहीं थीं।**

वेद में लिखा है- **'ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्'** कन्या ब्रह्मचर्य धारण करने से पति को प्राप्त होती है। वेद में एक दूसरे स्थान पर आता है- **'सोमः प्रथमो विवदे गन्धर्वो विवद उत्तरः। तृतीयो अग्निष्टे पति स्तरीयस्ते मनुष्य जाः।'** यहाँ सोम का तात्पर्य कन्या के शारीरिक विकास से है और गन्धर्व का अर्थ शारीरिक विकास के साथ-साथ शरीर में प्राकृतिक दृष्टिकोण से सुडौलता आती है उस सुडौलता से उसके सौन्दर्य में स्निग्धता से निखार आता है अर्थात् गन्धर्व का अर्थ है- सौन्दर्य। तृतीयावस्था होती है अग्नि। और अग्नि का अर्थ है– पूर्ण यौवन की तेजस्विता। अब सृष्टि क्रम से उस कन्या को पुरुष के साथ पाणिग्रहण (विवाह) किया जाता है जो उसी के गुणकर्म स्वभाव योग्यता का हो।

आज सरकारें जो जनसंख्या का रोना रोती है उसका कारण है कि चुनी सरकारें भी वेदानुसार चलती हो यह जनसंख्या का घनत्व और अनुपात इतना नहीं बिगड़ता। **'ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विंदते पतिम्।** का सही अर्थ है राष्ट्र को स्वस्थ संतान देना तथा साथ ही जनसंख्या को भी नियंत्रण करना है। परन्तु राज्य एवं केन्द्र की सरकारें भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् से तुष्टिकरण की नीति अपनाकर अभी तक कोई कठोर कानून नही बना पाई। यह नारा तो दिया जाता है कि हम दो हमारे दो परन्तु इसकी बजाए यह अनमोल वचन होता कि 'हम दो हमारे दो और सब के दो तो संभवतः जनसंख्या का अनुपात नहीं बिगड़ता। परन्तु ऐसा **'ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विंदते पतिम्।** के कारण ही संभव है। इस सूत्र को समस्त पन्थों पर कठोरता से लागू करना चाहिए।

विवाह हमारे यहाँ एक धार्मिक संस्कार है, अटूट पवित्र सम्बन्ध हैं जो गृहस्थ के समस्त प्रयोजनों को पूर्णता की ओर ले जाता है और चरैवेति–चरैवेती का संदेश देता है अर्थात् जब तक चलते रहो तब तक आप मन्तव्य–गन्तव्य को प्राप्त करें अर्थात् तब तक, जब तक अपने प्रयोजन की सिद्धि न हो जाए। यह कोई पश्चात्य संस्कृति की तरह नहीं है कि ठेका दो या चार साल का हो गया फिर कोई और कॉन्ट्रेक्ट होगा। हमारे यहाँ तो यह एक संस्कार है इसीलिए इसे अनुशासन पर्व की संज्ञा दी गई। आपने श्री राम एवं योगीराज कृष्ण के गृहस्थ धर्म के बारे में सुनाई भी है और पढ़ा भी है। यदि हम और आप उन महान ऋषियों की संतान हैं तो हमारा और आपका परिधान भी सनातन हो केवल उनके नाम के स्मरण करने से काम नहीं चलेगा। जितने भी मत-मतान्तर हैं वे सब आर्य समाज की ओर देखते हैं क्योंकि आज आर्य समाज ही एक ऐसा राष्ट्रीय संगठन है जो सत्य सनातन वैदिक परम्परा का संवाहक है। अतः वैदिक पाणिग्रहण संस्कार में उसी प्रकार के परिधान का धारण करना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है क्योंकि परिधान (गणवेश) एक वस्त्र ही नहीं होता है एक विचार भी होता है। अतः वर एवं कन्या को इस पुनीत अवसर पर वरण करते समय एवं पाणिग्रहण संस्कार पर हम मर्यादा में रखने वाले भारतीय परिधान में नख से शिख तक रहें तो यह अधिक प्रेरणास्प्रद होगा। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में कितना सुन्दर परिधान के सन्दर्भ में उल्लेख किया है कि **'अंग्रेज (यूरोपियन) लोग हमारे गर्म देश में भी अपने यहाँ के पेंट-बूट आदि परिधान को नहीं छोड़ते तो फिर हम अपने सुन्दर पहनावे का क्यों त्याग करें।'**

हमारी सामाजिक परम्परा में विवाह के तीन उद्देश्य माने गए हैं। धर्म, प्रजा एवं रति। अर्थात् वैदिक विवाह में प्रथम उद्देश्य धर्म का पालन करना है। धर्म का पालन करते हुए दूसरा उद्देश्य संतान प्राप्ति है जिससे सृष्टि का क्रम आगे बढ़ सके, वंश टूटने न पाए तथा तीसरा उद्देश्य रति अर्थात् ऋतुगामी बने जिससे प्रकृति के नियमानुसार सृष्टि में मनुष्य अनुशासन में रहकर समाज में कुचेष्टा से बचा रहे इसलिए विवाह में दोनों पक्षों के गणमान्य एकत्रित होकर संकल्प के साथ किसी विद्वान पुरोहित की उपस्थिति में वर एवं कन्या को सामाजिक संविधान में ग्रन्थि बन्धन किया जाता है ताकि वर-वधू एक केन्द्र से जुड़े रहे। अतः हम और आप (वर-वधू) हृदय से एक दूसरे से समवेत रहेंगे। आज से हमारे व्रतानुसार हृदय, चित्त और आत्मा एक-दूसरे को प्रजापति ने नियुक्त किए हैं अर्थात्

यह चित वह चित एक है एक प्राण है गात।
अपने हिय से जानिए, मेरे हिय की बात।।

ऋग्वेद का वेद मन्त्र और अधिक हमारे संकल्प को शक्ति प्रदान करता है। यथा

ओम समंजन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ।
सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ।।

यज्ञशाला में बैठे हुए विद्वान लोगों आप दोनों का निश्चय करके जाने कि हम प्रसन्नतापूर्वक गृहस्थ आश्रम एकत्र रहने के लिए, एक दूसरे को स्वीकार करते हैं। हमारे दोनों के हृदय जल के समान शीतल, शान्त रहेंगे।

जैसे प्राणवायु हमको प्रिय है इसी प्रकार हमारे दोनों के आत्मा एक-दूसरे के साथ दृढ़ प्रेम को धारण करें। यों तो सप्त पदी भी हमारे इन समस्त उक्त विचारों के साथ सब संकल्पों का सार है यहाँ तक कि भारत का मुख्य न्यायालय बिना सप्त पदी के विवाह पद्धति को अपूर्ण मानता है क्योंकि सप्त पदी ही विवाह का उपसंहार एवं अनुशासन पर्व है जिसमें वर-वधू को सात प्रतिज्ञाएँ उत्तराभिमुख कर कराई जाती है। यथा-

१. पहला कदम वर वधू के दाहिने स्कन्ध पर दाहिना हाथ रखकर संकल्प लेता है। **पहला कदम (प्रयत्न) अन्न के उपार्जन को करना है अर्थात अन्न औषध है प्राण है और आतिथ्य की आधारशिला है।**

२. **उर्जं : दूसरा पग शारीरिक बल हितार्थ है अर्थात् जान है तो जहान है।**

३. **रायस्पोष : तीसरा कदम धन के लिए है। अपने ऊर्जावान बल से (श्रम साधना) पवित्र धन की प्राप्ति सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य के लिए है।** पहला सुख निरोगी काया, दूसरा सुख घर में हो माया।

४. **मयोभव : वर कहता है सुख की प्राप्ति को चौथा कदम है सुख कैसा हो। दुःख आने पर भी सुख की अनुभूति करें। आज रात है तो कल प्रभात भी होगा। दुःख में कराहो नहीं और सुख को सराहो नहीं। समता का भाव रखें।**

५. **प्रजा : पाँचवा कदम प्रजा (उत्तम संतान) के लिए है। राष्ट्र ऋण से उऋण होना है तो संस्कार विधि अनुसार उत्तम संतान के जनक-जननी बनने का सौभाग्य प्राप्त करें क्योंकि उत्तम संतान से ही माँ की कुक्षि पवित्र होती है और पिता का भाल आकाश से ऊँचा हो जाता है।**

६. **ऋतु : हम छठा कदम ऋतुकारी होने को बढ़ाते हैं। जीवन में ऋतभ्यी बनें। चारों तरफ की प्राकृतिक परिस्थिति का अवलोकन करते हुए चलें।**

७. **सखा :** सातवाँ कदम (पग) में सखापन का भाव है। हमसे अच्छा मित्र कोई और हो ही नहीं सकता है। साथ-साथ चलने का अर्थ यही है कि जीवन में निरन्तरता बनी रहे। अर्थात् अंतिम श्वांस तक कर्मशील बने रहें। श्वांसों का उद्देश्य कर्म है।

थककर क्यों मर जाएँ।
मरने से पहले कुछ कर जाएँ।
हम याद सभी को आएँ।

अंत में प्रिया भाग्यश्री एवं प्रिय अर्जुन को इस पावन अवसर पर शुभकामनाएँ देता हूँ। आपका जीवन समस्त परिवार जनों, इष्टमित्रों, पड़ोसियों, सगे–सम्बन्धियों को सुख प्रदान कर यश कीर्ति की सुगन्धि फैलाए।

अर्जुन (बन्ना) बना रहे, भाग्यश्री (बन्नी) बनी रहे।
और बन्ना–बन्नी की सदा–सदा बनी रहे।।

इन्ही शुभकामनाओं के साथ सादर। ■

एक बार फिर आओ

शपथ तुम्हें सौ बार शहीदों!
अपना जौहर दिखलाओ,
माँ की हुई पुकार वतन में,
एक फिर आओ।

मुर्दों से जो पड़े हुए हैं,
आकर उन्हें जगाओ,
महासमर का मार्ग शहीदों!
उनको आज दिखाओ।

महाक्रान्ति की आग तुम्हीं हो,
तुम ही हो जयगान,
युग–युग का सन्देश बना है,
तेरा ही बलिदान।

तेरे चरणों की धूल बनेगी,
जब ललाट का चन्दन,
सारा विश्व करेगा फिर से
भारत का अभिनन्दन।

हर शहीद की चिता बनेगी,
भारत में जब मेला,
महासमर में खड़ा रहेगा,
भारत सदा अकेला।

फिर भी जीत उसी की होगी,
गूँजेंगी जय–जयकार,
सारी दुनिया में गूँजेंगी
भारत की ललकार।

ओ सपूत! भारत के बेटों!
तेरी अमर कहानी,
भारत के कण–कण में भर दे
फिर से वही जवानी।।

● **डॉ. लक्ष्मी निधि**
निधि बिहार १७२, न्यू बारादरी, ह्यूम पाइप रोड (नया कोर्ट रोड)
पो. साकची, जमशेदपुर–१ (झारखण्ड)
चलभाष : ९९३४५२१९५४

कीर्ति शेष : सन्त कबीर

• **डोंगरलाल पुरुषार्थी**
सेवानिवृत्त, प्रधान पाठक
आर्य समाज कसरावद, जिला खरगोन (म.प्र.)
चलभाष : ८९५९०५९०९९

भक्ति विमुख जो धर्म सो अधरम करि गायो।
जोग जग्य व्रत दान, भजन बिनु तुच्छ दिखायो।।
हिन्दू तुरक प्रमान, रमैनी, शबदी साखी।
पक्षपात नहिं बचन सबहि के हित की भाखी।।
प्रिया दास, भाखी = भाषा

संत कबीर के बारे में विभिन्न विद्वानों के मत–

आर्य समाज के परम भक्त अलगूराम शास्त्री : 'संत कबीर ने आत्मा का वर्णन किया है, शरीर का नहीं। हिन्दू–मुस्लिम सभी उनके भक्त थे और शिष्य बने। सभी ने उनके काव्य, साहित्य और संगीत के मधुर स्वर का आनन्द लिया। हमें उस महात्मा का स्मरण करके साम्प्रदायिक एवं धार्मिक विद्वेष की भावना भूलकर मानव समानता के महान मन्त्र को हृदयंगम करना चाहिए।''

डॉ. रामकुमार वर्मा : ''सन्त कबीर की उच्च आध्यात्मिकता का प्रभाव युग–युग में सर्वसाधारण पर पड़ा है। वे हृदय की सूक्ष्म भावनाओं की तह तक पहुँच गए हैं। समालोचकगण कबीर की रचना को सामने रखकर उनके काव्य रत्नाकर से रत्न पाने का प्रयत्न करें, चाहे वे जगमगाते हुए जीवन के सिद्धान्त रत्न हो या आध्यात्मिक जीवन के झिलमिलाते हुए रत्न–कण हों।''

डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी : ''सन्त कबीर धर्मगुरु थे। इसलिए उनकी वाणियों का आध्यात्मिक रस ही आस्वाद्य होना चाहिए। किन्तु विद्वानों ने विविध रूपों में उन वाणियों का अध्ययन और उपयोग किया है। हिन्दी साहित्य के हजार वर्षों के इतिहास में कबीर जैसे व्यक्तित्व वाला कोई कवि, लेखक नहीं उत्पन्न हुआ।''

डॉ. सम्पूर्णानन्द : ''सन्त कबीर जैसे महापुरुष का जीवन उस हीरे के समान है। जिसके कई पहलू होते हैं। हर पहलू में अपने सम्पूर्ण, सुन्दर एवं ज्योतिर्मय होता है।''

डॉ. रामचन्द्र तिवारी : ''सन्त कबीर ने सारे आडम्बरों और मिथ्याचारों को ध्वस्त करके उसके भीतर से उज्ज्वल मनुष्य को ढूँढने की चेष्टा की है। कबीर एक पारदर्शी अस्तित्व, एक प्रकाशपुंज और प्रखर, प्रज्वलित महात्मा थे।''

भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है। क्योंकि इस काल में जितना भी काव्य लिखा गया, वह कला पक्ष और भाव पक्ष की दृष्टि से उत्कृष्ट कोटि का था। भक्तिकाल में भक्ति की दो धाराएँ थीं, पहली निर्गुण, दूसरी सगुण धाराएँ। निर्गुण धारा के कवि– कबीर, दादू, मलूकदास। कबीर अनुसार

कामी क्रोधी लालची, इनसे भक्ति न होय।
भक्ति कहे कोई सूरमा, जाति बरन कुल खोय।।

सगुण धारा के प्रमुख कवि तुलसी, केशव, सूरदास, रस खान आदि। निर्गुण धारा के कवियों में कबीर का ज्ञान सर्वोपरि है। हिन्दी साहित्य में कबीर ने रहस्यवादी कवि होने के नाते जो स्थान पाया है, उसे आज तक कोई कवि नहीं पा सका। इसलिए कबीर को रहस्यवादी प्रणेता कहा जाता है। पाखण्ड और पाखण्डियों पर करारी और सीधी चोंट करने वालों में सन्त कबीर अग्रणी हैं।

'पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहार।
ताते वो चाकी भली, पीस खाय संसार।।
काँकर पाथर जोरि के, मसजित कई चनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, बहरा हुआ खुदाय।।
न्हाये धोये क्या भया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहे, धोये बास न जाय।।

विश्व के सारे धर्मों की दीवारों को तोड़कर कबीर ने मानवतावाद का स्पष्ट सन्देश दिया है।

हिन्दुओं को– ***'तिल भर मछली खाय के, कोटि गऊ दे दान।***
काशी करवट ले मरे, तो भी नरक निदान।।
मुस्लिमों को– ***पीर सबन की एक सी, मूरख जाने नाहिं।***
अपना गला कटाय के, भिस्त बसे क्यों नाहिं।। भिस्त = जन्नत

कबीर के रहस्यवाद का प्रमुख आधार अद्वैतवाद है। अद्वैतवाद के अनुसार आत्मा और परमात्मा एक ही सत्ता है। इसके बीच माया का पर्दा है–

माया मुई न मन मुआ, मरि मरि गया शरीर।
आशा तृष्णा न मुई, यो कहत सन्त कबीर।।
मुई = मरी, मुआ = मरा

जल में कुम्भ, कुम्भ में जल, बाहर भितर पानी।
फूटा कुम्भ जल में समाना, यह सत कहत ज्ञानी।।

घड़ा, आत्मा और परमात्मा के बीच माया का पर्दा बना होता है। जैसे ही घड़ा फूटता है दोनों जल में एकाकार हो जाते हैं। माया से छुटकारा देने वाला मात्र सतगुरु होता है। तभी तो कबीर ने कहा–

गुरु गोविन्द दोऊँ खड़े, काके लागू पाँय।
बलिहारी गुरु आपकी, गोविन्द दियो बताय।।

किन्तु आज गुरु और चेले दोनों माया के फँदे में जकड़े हुए हैं, भवसागर से पार होने के बजाए डूबते जा रहे हैं–

गुरु लोभी शिष्य लालची, दोनों खेले दाँव।
दोनों डूबे बापुरे, चढ़ पाथर की नाव।।

विश्व भर के सन्तों में सन्त कबीर की गणना सच्चे सन्तों में की जाती है और सन्त कबीर इस प्रकार कहते हैं– **'कहत कबीर सुन भाई साधो।'**

अर्थात् कबीर का सन्देश– जो मनुष्य मन, वचन और कर्म सज्जन हैं, उन्हीं लोगों पर कबीर की वाणी कारगर है। न कि हिन्दी साहित्य में कबीर पर स्नातकोत्तर या पीएच.डी. आदि की उपाधि से अलंकृत होने वालों के लिए नहीं। कबीर की रहस्यवादी वाणी का सन्देश ऐसे लोगों के लिए इस प्रकार है–

कबीरा हम पैदा हुए, जग हँसा हम रोये।
ऐसी करनी कर चलो, हम हँसे जग रोये।।

कबीर का सत्य, भक्ति, ज्ञान और वैराग्य से भरपूर कल्याण के पथ–प्रदर्शक मानवता का परम आदर्श का सार– **'साखी, रमैनी और सबद'** में लबालब समाया हुआ है। कबीर ने राम को ईश्वर कहा है, वह जन्मा, अवतारी दशरथ पुत्र राम नहीं। जैसे–

राम नाम की लूट है, लूट सके तो लूट।
अन्तकाल पछताएगा, प्राण जाएँगे छूट।।

कबीर कहीं–कहीं अपने परमात्मा के महत्व का वर्णन साईं द्वारा करते हैं तो कहीं साहेब के द्वारा सीख और विनती करते हैं–

साईं से सब होत है, बंदे से कछु नाहिं।
राई ते परबत करे, परबत राई माहिं।।
कबीर कहे कमाल से, दो बातें ले सीख।
कर साहेब की बन्दगी, भूखे को दे भीख।।

प्राय: सूफी, सन्त, फकीर, प्राय: बेखौफ, निडर, निर्भय होते हैं। अपनी यथार्थ बातें कहने में हिचकिचाते नहीं हैं। कबीर ने सिकन्दर शासक की तानाशाही, अत्याचार को देखते हुए समाज में अपनी यथार्थता इस प्रकार से प्रस्तुत की–

बड़ा हुआ सो क्या भया, जैसे पेड़ खजूर।
पंछी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

उक्त पंक्तियों से पोंगापंथी, सामंत– जमींदार और शहंशाह सिकन्दर लोधी तिलमिला गए। कबीर को हाथी के पाँवों तले कुचलवाने और दरिया में डुबोए जाने की कोशिशें भी की गईं। तभी तो कबीर ने कहा–

जाको राखे साइंया, मार सके न कोय।
बाल न बांको कर सके, चाहे जग बैरी होय।।

कबीर का जन्म ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा, सोमवार के दिन संवत् १४५६ में हुआ था। कहा जाता है कि एक विधवा ब्राह्मणी कन्या से पैदा हुए थे। जिसे लोक लाज के भय से काशी से दो मील दूर लहरतारा तालाब में फेंक दिया था। नीरू और नीमा नामक जुलाहा दम्पति ने शिशु को लाकर और खुदा का नूर समझकर पालन–पोषण किया। बालक का नामकरण एक मुल्ला ने अरबी भाषा का शब्द कबीर (महान, परमात्मा) रखा। कबीर ने घर या पाठशाला या किसी मदरसे से कोई भी शिक्षा न पाई थी। अर्थात् **मसि कागज छुओ नाहिं, कलम धरयो नाहिं हाथ।**

कबीर अपने माता–पिता के साथ करघा चलाकर सूत कात कर कपड़ा बुनते और पिता के साथ कपड़ा कंधे पर लादकर गाँव–गाँव बेचते। कबीर का विवाह लोई नाम की कन्या के साथ हुआ। जिनसे दो संतानें पुत्र कमाल और पुत्री कमाली पैदा हुई। अचानक कमाली की तबीयत खराब होना तथा उचित इलाज के अभाव में पुत्री भवसागर से चल बसी। कबीर के हृदय से

''पानी केरा बुदबुदा, असमानुस की जात।
एक दिन छिप जाहिगा, ज्यूँ तारा परभात।।

काशी में उन दिनों स्वामी रामानन्द की बहुत ख्याति थी। कबीर ने उनको गुरु बनाने का निश्चय किया। मुसलमान होने के कारण रामानन्द ने कबीर को गुरुमन्त्र देने से मना कर दिया। जैसे द्रोणाचार्य ने एकलव्य को धनुष विद्या से। कबीर ने सोचा कि सब मनुष्यों को पैदा करने वाला एक है, फिर मनुष्य, मनुष्य में फर्क क्यों? कबीर एक दिन सुबह ब्रह्म मुहूर्त में काशी के पंचगंगा घाट की सीढ़ियों पर लेट गए। प्रतिदिन की भाँति जब रामानन्द गंगा स्नान कर लौट रहे थे तो अन्धेरा होने के कारण रामानन्द का पैर कबीर के शरीर पर पड़ गया और पश्चाताप में राम–राम शब्द निकल पड़ा। जो कि कबीर ने राम शब्द को ब्रह्म गुरु मन्त्र मानते हुए आध्यात्मिक क्षेत्र में **गुरु गुड़, चेला मिश्री** की भाँति विश्व विख्यात हो गये।

आज भारत में साधु–सन्तों, उपदेशक चारित्रिक दृष्टि से नंगे होकर जेलों में सजा भोग रहे हैं। सन्त कबीर के अनुसार भी–

'ज्ञानी ध्यानी संयमी, दाता शूर अनेक।
जपिया तपिया बहुत हैं, शीलवंता कोई एक।।

चरित्रवान विरला होता है। मनु के धर्म के दस लक्षणों में पहला लक्षण धैर्य है। किन्तु विज्ञान की उपलब्धि में आज मनुष्य अपने समय की बचत में कुत्ते–बिल्ली जैसे, दुर्घटना के शिकार हो रहे हैं। जबकि कबीर ने धैर्य की महत्ता पर कितना अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया–

धीरे–धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, रितु आए फल होय।।

विश्व की महामारी मदिरा एवं दुर्व्यसन के कारण मानव जन्म नष्ट हो जाता है, समाज में अनेक विकृतियाँ घर कर जाती है। जो सन्त कबीर ने मात्र दो पंक्तियों द्वारा कितना बड़ा सन्देश एवं दर्शन दिया है–

मदिरा पिवै मांस भखै, धन वेश्या सो खाय।
जुआ खेली चोरी करै, अन्त समूला जाय।।

हमारे भारत में फलित ज्योतिष के चक्कर में भारतीय बहुत उलझे हैं। समय और धन दोनों का अपव्यय हो रहा है। सन्त कबीर ने पाखण्डी पण्डितों पर व्यंग्य करते हुए यह फटकार लगाई–

पण्डित छोड़ो पातरा, काजी छोड़ कुरान।
वह तारीख बताय दे, थे न जमीन–आसमान।।

हिन्दू–मुसलमानों में दया के हनन की बातों पर सन्त कबीर ने इस प्रकार की चेतावनी प्रतिपादित की–

इन झटका उन बिस्मिल कीनी, दया दोऊँ से भागी।
कहत कबीर सुन भाई साधो, आग दोऊँ घर लागी।।

सन्त कबीर ने मनुष्य को मुक्ति पाने के लिए बड़े ही सहज रूप प्रतिपादित करते हुए समय का वर्गीकरण कर बताया–

पाँच पहर धन्धे गया, तीन पहर गया सोय।
एक पहर सुमिरन बिनु, मुक्ति कैसे होय।।

हिन्दू समाज में फैली धर्मान्धता के अनुसार काशी में प्रायः लोग स्वर्ग पाने के लिए जाते हैं। इस भ्रम को तोड़ने के लिए सन्त कबीर ने अन्तिम समय में काशी को छोड़ मगहर चले गए। जो संवत् १५४९ अगहन शुक्ल एकादशी को देहावसान हुआ। सन्त कबीर को हिन्दू जलाना चाहते थे तो मुसलमान दफनाना। दोनों में विवाद छिड़ गया। विवाद के बाद जब उन्होंने चादर हटाई तो कबीर का शरीर वहाँ नहीं था। उस स्थान पर दो फूल थे। उन फूलों को हिन्दू और मुसलमानों ने अपने-अपने संस्कारों के अनुसार अन्तिम संस्कार कर दिया गया। सन्त कबीर की इस प्रकार की घटना को विज्ञान एवं आर्य सभाज नहीं मानता है। फिर भी यह संसार विचित्राओं से भरा है। अन्ततः-

रोगी मुआ वैद्य मुआ, मुआ सकल संसार। मुआ = मरा
एक कबीरा ना मुआ, जाकुँ राम आधार।। जय भारती

जीवन को महान् बनाने के लिए मानव मात्र के जीवनोपयोगी

वैदिक सन्देश

१. प्रातः सोकर उठते ही व रात्रि में सोने के पहले कम से कम पाँच बार गायत्री मन्त्र का जाप करना चाहिए।
२. शरीर को स्वस्थ निरोग हृष्ट-पुष्ट बनाने के लिए नित्य प्रातः आसन, व्यायाम, प्राणायाम करना चाहिए।
३. नित्य प्रातः सायं ईश्वर की उपासना- ध्यान करना चाहिए।
४. सुबह उठने से लेकर रात्रि सोने पर्यन्त ईश्वर की स्मृति मन में बनाकर सब क्रिया-कलाप व्यवहार करना चाहिए।
५. माता-पिता, गुरु-आचार्य, अतिथि-विद्वानों का सम्मान करना व हर समय प्रसन्न रहना कभी भी हताश-निराश-उदास नहीं होना चाहिए।
६. सरलता-विनम्रता, निरभिमानता, दयालुता, सहनशीलता, वाणी में मधुरता आदि गुणों को धारण करना चाहिए।
७. दया-दान, धैर्य, क्षमा, सेवा, स्वाध्याय, साधना, सत्संग, परोपकार को जीवन का अंग बनाना चाहिए।
८. विषय भोगों व धन-सम्पत्ति के प्रति आसक्ति को नष्ट करना व निष्काम भाव से सदा शुभ कर्म करना चाहिए।
९. समय का सदुपयोग करना, मेहनती बनना ईमानदारी से बुद्धिमत्तापूर्वक सब कार्य करना किन्तु आलस्य, प्रमाद, गपशप (व्यर्थ वार्तालाप) में समय नष्ट नहीं करना चाहिए।
१०. काम-क्रोध, लोभ-लालच, ईर्ष्या-अहंकार, राग-द्वेष आदि दोषों से दूर करना चाहिए।
११. सबके प्रति प्रेमपूर्वक धर्मानुसार व्यवहार करना चाहिए।
१२. विवेक तत्वज्ञान को उत्पन्न करना एवं इन्द्रियों पर संयम रखना चाहिए।
१३. सात्विक-पौष्टिक खान-पान रखना परन्तु मांसाहार, मदिरापान, धूम्रपान आदि दुर्व्यवसनों से दूर रहना चाहिए।
१४. याज्ञिक-धार्मिक परोपकारी जीवन बनाना चाहिए।
१५. यम-नियम का पालन करते हुए अष्टांग योग का अनुष्ठान करना।

इस प्रकार ऋषि, महर्षि, गुरु, आचार्य, वैदिक विद्वानों के वचनों को धारण करने का व्रत लेना व व्रतमय, जपमय, तपमय जीवनव्रत लेकर श्रेष्ठ, सुखमय, महान, व्यक्तित्व का निर्माण कर आध्यात्मिक उन्नति करना चाहिए। ■

● **स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती**
दर्शन योग महाविद्यालय
प्रभु आश्रित कुटिया, जलेबी रोड, सुन्दरपुर
जनपद : रोहतक, हरियाणा,
चलभाष : ९६६४६३०११६, ९९१३९४८१०

प्रभु से प्रार्थना

हे प्रभु यह तेरी है माया।
जो तूने ऐसा जगत् बनाया।।
तेरे इस जटिल संसार में।
मुझको मेरा मार्ग सुझाया।।

जन्म मृत्यु का बन्धन कैद है।
मुक्ति का वो मार्ग वेद है।।
जग में माया और ज्ञान दोनों है।
पर बुद्धिमान के पास भेद है।।

जिसने धियो बुद्धि को है पाया।
आत्म ज्ञान को अपने जगाया।।
अज्ञान को खुद से दूर भगाया।
उसन्‍ो ही फिर प्रभु को है पाया।।

प्रभु को बसाया मन के अन्दर।
जीवन भोगा सफल सुन्दर।।
कर्म किया फिर पूरा शक्ति से।
आत्मा भीगा रहा भक्ति से।।

सारा सफल बने फिर तन्त्र।
ये ही है वह सच्चा मन्त्र।।
जिससे हो जाए जीवन शुद्धि।
माँगो ईश से धियो बुद्धि।।

कैद से आत्मा होवे स्वतन्त्र।।
जप लो एक छोटा सा मन्त्र।

इतना छोटा मन्त्र है फिर जपते क्यों नहीं हम।
ओ३म् भू र्भुवः स्वः तस्सवितुर्वरेण्यम्।।

इसमें जोड़ो इतना ही।
भर्गो देवस्य धीमही।।

लो फिर खतम हो गई बात।
धियो यो नः प्रचोदयात्।।

● **आर्य पी.एस. यादव**
प्रधान आर्य समाज मण्डीदीप
जनपद : रायसेन (म.प्र.)
चलभाष :

ब्रह्म का स्वरूप

संकलनकर्ता
• मृदुला अग्रवाल
१९-सी, सरत बोस रोड, कोलकाता
चलभाष : ९८३६८४१०५१

राजा जनक स्वयं पूर्ण ब्रह्म-ज्ञानी थे। अतः वे सभी तत्त्वज्ञानियों एवं ब्रह्मवेत्ताओं का हार्दिक आदर किया करते थे। एक बार घूमते-फिरते ब्रह्मर्षि याज्ञवल्क्य राजा जनक के पास आ पहुँचे। जनक ने पाद्य-अर्ध्य आदि से उनका स्वागत करके उनके शुभागमन का कारण पूछा- "भगवन्! आप गौएँ लेने यहाँ पधारे हैं अथवा मुझे उपदेश देने।" "मैं दोनों ही उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उपस्थित हुआ हूँ राजन्!" ऋषि ने कहा- "किन्तु आपको ज्ञान प्रदान से पूर्व मैं यह जानना चाहता हूँ कि अब तक आपने इस विषय में क्या-क्या सीख रक्खा है?" राजा बोले- "भगवन्! मुझे शैलिनि जित्वा नामक ब्राह्मण ने यही उपदेश दिया था कि **'वाग्वै ब्रह्म इति'** (वाणी ही ब्रह्म है)। **वाणी से ही अर्थ का प्रकाश होता है इसलिए यहाँ वाणी को ही ब्रह्म बताया गया है।"** ऋषि ने पुनः प्रश्न किया- "राजन्! क्या उन्होंने आपको ब्रह्म के आयतन एवं प्रतिष्ठा (स्थान) के विषय में भी कुछ बताया है?" जनक ने कहा- **"न म ब्रवीदिति'** नहीं भगवन्! इस सम्बन्ध में तो उन्होंने मुझे कुछ भी नहीं बताया।" इस पर ऋषि ने कहा- " **'एकपाद वा एतत्'**- राजन्! उसने तो आपको ब्रह्म के केवल एक पाद का ही उपदेश दिया है।" यह सुनकर जनक ने अनुरोध किया- "भगवन्! आप पूर्ण समर्थ हैं। अब आप ही इस विषय का विस्तारपूर्वक उपदेश दें।"

मूल लेखक

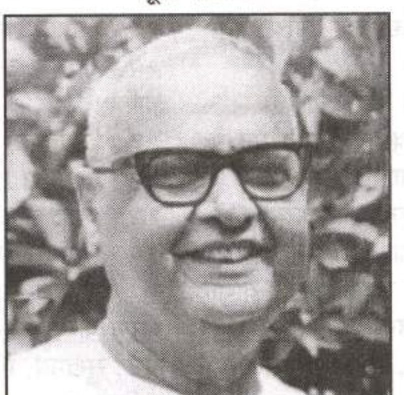

स्मृति शेष :
शान्तिस्वरूप जी गुप्त

ऋषि कहने लगे- **"राजन्! वाग् इन्द्रिय ही वाणी का आयतन अथवा शरीर है और आकाश ही उसकी प्रतिष्ठा है। अर्थात् ब्रह्म की सत्ता से ही हमारी वाक् इन्द्रिय अनेक शब्दों का प्रयोग करती है।** अतः, आप प्रज्ञा नाम से वाग् रूप ब्रह्म की उपासना करें।" "यह **'प्रज्ञा'** क्या है?" राजा ने प्रश्न किया। ऋषि ने समझाया- "यहाँ वाक् ही प्रज्ञा है। वेद-रूपी वाणी से ही सर्व-हितकारी परमात्म का ज्ञान होता है। **स नो बन्धुर्जनिता स विधाता (यजु. ३२/१०) राजन्! चारों वेद, इतिहास, पुराण, उपनिषद्, सूत्र, व्याख्यान, अनुव्याख्यान, नक्षत्रादि की विद्या, लोक, परलोक एवं सब भूतों का ज्ञान वाणी से ही होता है, अतः, वाक् इन्द्रिय ही सब से महान् है। जो इस प्रकार वाणी को ब्रह्म समझकर उसकी उपासना करता है, वह विद्वानों के मध्य देव के समान समादृत होता है।**

ऋषि ने राजा से पुनः प्रश्न किया- "क्या इसके अतिरिक्त भी किसी ने इस विषय में आपको कुछ उपदेश दिया है?" राजा ने स्वीकार किया- "हाँ! भगवन्! शौल्यायन के पुत्र उदंक ने उपदेश दिया था?- **'प्राणो वै ब्रह्मेति' अर्थात् प्राणवायु ही ब्रह्म है।"** ऋषि ने पूछा- "क्या प्राण के आयतन एवं प्रतिष्ठा के विषय में भी उन्होंने कुछ बताया था?" इस प्रश्न का नकारात्मक उत्तर पाकर ऋषि पुनः जनक को इस विषय का विस्तृत उपदेश देते हुए कहने लगे- **"राजन्! अध्यात्म वायु-सहित घ्राणेन्द्रिय (नासिका) ही उसका आयतन है एवं आकाश ही उसकी प्रतिष्ठा है। परमात्मा की सत्ता के बिना घ्राणेन्द्रिय कोई कार्य नहीं कर सकती। अतः, 'प्रिय' नाम से प्राण रूप ब्रह्म की उपासना करो। प्राण ही सबसे प्रिय है एवं इसी की रक्षा के लिए मनुष्य विधि, निषेध आदि सभी कर्मों का सम्पादन करता है। अतः, जीवन का कारण और आधार होने से प्राण ही ब्रह्म है। जो इस प्रकार प्राण का महत्व जानकर उसकी उपासना करता है, उसकी कभी अल्पायु में मृत्यु नहीं होती। सब भूत उसकी रक्षा करते हैं और प्राणवित् विद्वानों में वह सम्मान का भाजन बनता है।"**

ऋषि पुनः राजा से पूछने लगे- "राजन्! इस विषय में क्या इसके अतिरिक्त भी आपने कुछ सुना है?" राजा ने कहा- **'चक्षुर्वै ब्रह्म' - चक्षु ही ब्रह्म है,** ऐसा मुझे वृष्णा के पुत्र वर्कु ने उपदेश दिया था। "क्या चक्षु के आयतन एवं प्रतिष्ठा के विषय में भी उन्होंने आपको कुछ उपदेश दिया था?" "नहीं भगवन्! आप ही अब इस अधूरे उपदेश को पूरा करें।' ऋषि ने कहा- **"देखो चक्षु इन्द्रिय ही उसका आयतन हैं एवं आकाश ही उसकी प्रतिष्ठा है। परमात्मा की सत्ता से ही चक्षुरिन्द्रिय रूप का अनुभव करती है। आदित्य के प्रकाश में ही रूप देखना सम्भव है। अतः, 'सत्य' नाम से आदित्य की उपासना करो।"** "इसमें 'सत्य' क्या है?" राजा ने प्रश्न किया। ऋषि ने उत्तर दिया- **"चक्षु इन्द्रिय ही इसका सत्यपन है** क्योंकि मनुष्य प्रश्न करते हैं- **'अद्राक्षीरिति?' क्या आपने देखा है?** उत्तर मिलता है **'अद्राक्षमिति'- "हाँ, मैंने देखा है। यहाँ प्रत्यक्ष देखना सत्य है। यहाँ चक्षु की महत्ता उसके सत्य पदार्थ का ज्ञान होने के कारण ही है। जो मनुष्य इस प्रकार इस इन्द्रिय की महत्ता समझता है उसकी आँखों में कभी तिमिरादि दोष उत्पन्न नहीं होते। चक्षुर्वित् मनुष्य ही विद्वानों में प्रतिष्ठा पाता है।"**

इतना उपदेश दे चुकने के पश्चात् ऋषि ने पुनः राजा से प्रश्न किया- "राजन्! क्या इसके अतिरिक्त भी कभी आपने इस विषय में किसी से कुछ सुना है?" राजा ने कहा- **'श्रोत्रं वै ब्रह्मेति'** (श्रोत्र ही ब्रह्म है) "ऐसा उपदेश मुझे गर्दभी-विपीत नामक ब्राह्मण ने दिया था।" ऋषि ने पूछा- "क्या उसके आयतन एवं प्रतिष्ठा के विषय में भी उन्होंने कुछ बताया था?" जनक ने उत्तर दिया- "नहीं भगवन्! इस विषय में तो उन्होंने कुछ नहीं बताया। अब **आप ही विस्तार-पूर्वक बता डालने की कृपा करें।"** ऋषि कहने लगे-

'श्रोत्रेन्द्रिय ही इसका आयतन एवं आकाश ही इसकी प्रतिष्ठा है। परमात्मा की सत्ता से ही श्रोत्रेन्द्रिय को शब्द ग्रहण करने की शक्ति मिली है। अतः, 'अनन्त' नाम से क्षोत्र की उपासना करो।'' राजा ने पुनः प्रश्न किया– **''इसमें अनन्तता क्या है?'' ''दिशाएँ अनन्त हैं राजन्! पुरुष किसी भी दिशा में क्यों न जाए उसका अन्त नहीं मिलता। इस प्रकार जो पुरुष दिशाओं को अनन्त मानकर क्षोत्र–रूपी ब्रह्म की उपासना करता है उसे सर्वत्र शब्द–साक्षात्कार में परमात्मा की सत्ता का अनुभव होता है। ऐसे श्रोत्रवित् की विद्वान् बड़ी श्रद्धा करते हैं।''**

इसके पश्चात् उसी प्रश्न को पुनः दुहराते हुए ऋषि ने राजा से प्रश्न किया– ''राजन्! क्या इस विषय में आपने अन्य किसी से कुछ सुना है?'' राजा बोले– ''हाँ, जाबाला के पुत्र सत्यकाम ने मुझे उपदेश दिया है– **'मनो वै ब्रह्मेति' (मन ही ब्रह्म है)।''** ऋषि कहने लगे– **''उपदेश तो ठीक ही दिया है। मन के बिना प्राणी कर ही क्या सकता है?** किन्तु उसके आयतन एवं प्रतिष्ठा के विषय में भी क्या उन्होंने उपदेश दिया है?'' राजा ने निवेदन किया– ''नहीं भगवन्! इस विषय में तो आप ही सविस्तार उपदेश प्रदान करने की कृपा करें।'' ऋषि बोले– **''मन ही इसका आयतन है एवं आकाश ही प्रतिष्ठा है।'' परमात्मा की सत्ता से ही मन में संकल्प–विकल्प–रूपी वृत्तियाँ उठती हैं। अतः, 'आनन्द' नाम से इस मन की उपासना करो।''** राजा ने पुनः प्रश्न किया– ''इसमें आनन्दपन क्या है?'' ऋषि कहने लगे– **''मन ही तो आनन्द का केन्द्र है। इसमें आनन्द की जो कल्पनाएँ उठती हैं वही इसका आनन्दपन है। जो मनुष्य इस प्रकार मन का महत्त्व समझकर इसकी उपासना करता है उसके मन में दुर्विचार कभी उत्पन्न नहीं होते। इसी हेतु वह विद्वानों के मध्य सदा आदर प्राप्त करता है।''**

इसके पश्चात् ऋषि ने वही प्रश्न पुनः दुहराया– ''राजन्! क्या इसके अतिरिक्त भी इस विषय में आपने किसी से कुछ सुना है?'' राजा ने उत्तर दिया– **'हृदयं वै ब्रह्मेति' (हृदय ही ब्रह्म है)** ''ऐसा उपदेश मुझे शकल के पुत्र विदग्ध ने दिया था।'' ऋषि ने कहा– **''हृदय निश्चित रूप से प्रजापति है।** ऐसा उपदेश उन्होंने ठीक ही दिया। किन्तु क्या इसके अतिरिक्त उसके आयतन एवं प्रतिष्ठा के विषय में भी उन्होंने कुछ बताया था?'' राजा कहने लगे– **''नहीं भगवान्! यह तो उन्होंने नहीं बताया।''** अतः, ऋषि पुनः समझाने लगे– **''हृदय ही उसका आयतन है एवं आकाश ही उसकी प्रतिष्ठा है। परमात्मा की सत्ता से ही हृदय बलवान् हो पाता है। अतः, 'स्थिति' नाम से इसकी उपासना करो।''** राजा ने पुनः प्रश्न किया **'इसमें स्थितिपन क्या है?'** ऋषि मे कहा– **''हृदय ही सब भूतों (प्राणियों) का आयतन तथा प्रतिष्ठा है। भूत इसमें प्रतिष्ठित हैं, इस कारण यह महान् है। जो ब्रह्म समझकर इसकी उपासना करता है वह पुरुष कभी हतोत्साह नही होता एवं विद्वानों के बीच प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।''**

यहाँ महर्षि ने जो इन्द्रियों को ब्रह्म बताया है वह उपासना के अभिप्राय से नहीं वरन् ज्ञान के अभिप्राय से बताया है। अर्थात् वाग् आदि समस्त इन्द्रियाँ ब्रह्म–ज्ञान का साधन होने के कारण ही महान् हैं। यदि उन्होंने उपासना के अभिप्राय के कथन किया होता तो आयतन तथा प्रतिष्ठा का प्रश्न ही कहाँ उठता? ब्रह्म का न तो कोई आयतन है और न प्रतिष्ठा। उपनिषदों ने केवल एक ब्रह्म को ही उपास्यदेव मानकर उसकी उपासना जताई है। 'अथ यो अन्यां देवतां उपासते' इन वाक्यों में अन्य देवताओं की उपासना का स्पष्ट निषेध है ही। इसी प्रकार केनोपनिषद् में भी 'तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं मदिदमुपासते' एकमात्र ब्रह्म की ही उपासना की बात कही है। 'मनो वै ब्रह्म' का अभिप्रायः यहाँ प्रतीकोपासना नहीं है। इसका अभिप्रायः है कि मनस्वी पुरुष ही ब्रह्म–ज्ञान प्राप्त करने के वास्तविक अधिकारी है। वे ही, केवल उसका साक्षात्कार करने में समर्थ हो सकते हैं। महर्षि याज्ञवल्क्य से यह उपदेश सुनकर राजा जनक ने उन्हें एक सहस्त्र दुग्ध देने वाली हृष्ट–पुष्ट गौएँ देकर उनका सम्मान किया।

राजा जनक ने याज्ञवल्क्य जी से कहा– ''भगवन्! आपके उपदेश से मेरी तृप्ति नहीं होती, अतः भगवन्! आप मुझे इस विषय में और उपदेश दीजिए कि पुरुष किसके प्रकाश से जाग्रत अवस्था में खान–पानादि व्यवहार करता है?'' ऋषि ने उत्तर दिया– **''आदित्य की ज्योति में यह जीव नाना प्रकार के सांसारिक व्यवहार किया करता है।''** राजा ने प्रश्न किया– ''भगवन्! सूर्यास्त के पश्चात् किसकी ज्योति का उपयोग करता है?'' चन्द्रमा के प्रकाश का राजन्'', ऋषि ने उत्तर दिया। ''सूर्य और चन्द्र दोनों के अस्त होने के पश्चात् यह किसकी ज्योति से सब व्यवहार करता है?'' राजा ने प्रश्न किया। ''अग्नि की ज्योति से राजन्!'' ऋषि कहने लगे। ''सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि तीनों के शान्त होने पर सर्वथा अन्धकार में यह किसकी

सत्य है धर्म- ध्वजा

हे परमेश्वर जग–विधाता, विवेक हमको दीजिये।
सत्य की पहचान बनें, कृपा हम पर कीजिये।।
सत्य है धर्म–ध्वजा, जीवन में धारण करें।
दीजिये आत्म–बल, सत्य से हम न डिगें।।
अहित किसी का हम, भूल कर भी न करें।
परनिन्दा से रहें दूर, प्रेम–पथ पर बढ़ते रहें।।
मेल–आपस में रखें, मन में कटुता न रहे।
हे प्रार्थना भगवन, भक्तों का कल्याण करें।।
मात–पिता ने हम पर, उपकार ही उपकार किये।
चरणों की रज, शीश पर धारण करें।।
मन मन्दिर को हम, सद् विचारों से भरें।
गुरु वन्दना करते हुए, प्रभु वन्दना करते रहें।।
देश–रक्षक, धर्म–रक्षक, सत्य की पतवार बनें।
करें राधे–श्याम प्रार्थना, विश्व का कल्याण करें।।
हे दयालु, हे कृपालु, कृपा हम पर कीजिये।
सत्य की पतवार बनें, शक्ति हमको दीजिये।।

• **राधेश्याम गोयल (ढाणीवाला)**
२२८, तिलक मार्ग, नीमच–२ (म.प्र.)
चलभाष : ७५०९६८०३३८

ज्योति से काम चलाता है?'' राजा ने पूछा? ''वाणी के द्वारा'' मुनि ने कहा।

''मनुष्य की स्वप्नावस्था में जब सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वाणी आदि किसी की भी ज्योति काम में नहीं आती उस समय यह जीव किसकी ज्योति में काम करता है?'' राजा ने प्रश्न किया। **'आत्मैवास्य ज्योतिभर्वति'– ''उस काल में आत्मा ही इसकी ज्योति होती है एवं उसी के प्रकाश में जीव अनेक प्रकार की चेष्टा करता है'', ऋषि ने उत्तर दिया। राजा ने पूछा– ''वह आत्मा कौन है जो स्वप्नावस्था में मार्ग–प्रदर्शन करता है?'' ऋषि ने समझाया– 'योऽयं विज्ञानमयप्राणेषु हृद्यन्तर्ज्योतिः पुरुषः'– ''बुद्धि का स्वामी, सब प्राणों को चेष्टा में लगाने वाला, वह आत्मा स्वयंप्रकाश है। बुद्धि के योग से वही आत्मा सब ज्ञानेन्द्रियों को विषयों का अनुभव कराता एवं वही कर्मेन्द्रियों से अनेक प्रकार की चेष्टाएँ करवाता है।** यही आत्मा कभी जाग्रत से स्वप्नावस्था में तथा कभी स्वप्नावस्था से जाग्रत के भोग भोगकर भोगप्रद कर्मों के समाप्त हो जाने पर पुनः जन्मान्तर को प्राप्त होता है। यही जीव अपने कर्मानुसार जिस–जिस योनि में प्रवेश करता है उसी उसी योनि के धर्म धारण करके कर्म–फल भोगकर पुनः जन्मान्तर को प्राप्त हो जाता है। इस लोक और परलोक का भोक्ता जीव स्वतन्त्र ज्योति है। वह कर्म के अनुसार अनेक जन्म धारण करके सुख–दुःख भोगता चलता है। पर उस अवस्था में भी उसके अपने स्वरूप की ज्योति ही काम करती रहती है। स्वप्नावस्था में जब सभी कर्मेन्द्रियाँ निश्चेष्ट हो जाती हैं, उस अवस्था में भी जीव जाग्रत वासनाओं के प्रभाव से नाना पदार्थों की कल्पना करके जाग्रत अवस्था के समस्त दृश्य– नदी, पहाड़, वन, उपवन, स्त्री, पुरुष, पुत्र आदि समस्त सम्बन्धीगण की रचना कर लेता है एवं उनके व्यवहार से सुखी और दुःखी भी हो लेता है। पर अपने प्रकाश स्वरूप से वह पुनः जाग्रत अवस्था प्राप्त कर लेता है। **चूँकि यह जीव जाग्रत, स्वप्न, लोक, परलोक में सदा सर्व एकाकी गमन करता है। अतः, इसकी 'हंस' संज्ञा मानी गई है।** जिस प्रकार पक्षी देश–देशान्तर का चक्कर लगाकर पुनः श्रान्त होकर अपने नीड में वापस लौट आता है उसी प्रकार हंस–रूपी यह जीव भी अपनी रक्षा करता हुआ पुनः स्वप्न से जाग्रत में वापस लौट आता है। स्वप्नावस्था में जीव अनेक प्रकार के पशु–पक्षी आदि के रूपों की कल्पना करता हुआ तदनुसार सांसारिक सुख–दुःखों से दुःखी–सुखी होता रहता है। **यद्यपि मनुष्य की स्वप्नावस्था का ज्ञान तो सबको है लेकिन स्वप्नावस्था में जिस ज्योति के सहारे क्रिया करता है उससे लोग अवगत नहीं हैं। इस स्वप्नावस्था का साक्षी स्वयं–ज्योति आत्मा कर्म के अनुसार सुख–दुःख भोग कर सुषुप्ति अवस्था को प्राप्त होता है और वहाँ सब वृत्तियों के शेष हो जाने के कारण ब्रह्मानन्द का अनुभव करता है।** फिर सुषुप्ति से स्वप्नावस्था को प्राप्त करके उस अवस्था का भोक्ता होने पर भी वह अपने स्वरूप में असंग रहता है। कभी सुषुप्ति से जाग्रत अवस्था को प्राप्त होकर कर्मानुसार यथाप्राप्त भोगों को भोगकर भी स्वरूप से विकारी नहीं होता। जैसे मत्स्य नदी में लहरों के साथ–साथ चलकर नदी के दोनों किनारों पर विचरता है इसी प्रकार यह पुरुष भी कभी स्वप्न कभी जाग्रत अवस्था को प्राप्त होता रहता है एवं जिस प्रकार थका हुआ पक्षी पुनः अपने नीड में वापस लौट आता है उसी प्रकार जीव भी स्वप्न और जाग्रत अवस्था में परिभ्रमण करते–करने श्रान्त होकर सुषुप्ति अवस्था को प्राप्त हो जाता है। इस अवस्था को प्राप्त होकर न तो वह कोई स्वप्न देखता है और न कोई कामना ही करता है। हृदयस्थ हित नामक जिस सूक्ष्म नाड़ी में से होकर भुक्त अन्न का सारभूत रस बहता है उसमें संचरण करता हुआ जीव जब स्वप्न को प्राप्त होता है तो कभी चोरों से पिटता–सा, कहीं जंगली पशुओं के भय से अपनी रक्षा करता हुआ–सा जाग्रत अवस्था के संस्कारों के वशीभूत होकर दुःखादि का अनुभव करता है। **लेकिन जब जीव को पूर्ण बोध हो जाता है कि प्रत्येक जाग्रत–स्वप्न–सुषुप्ति तीनों ही अवस्थाओं में मैं साथी देह के धर्मों से असंग हूँ, मेरा नियंता, एकमात्र परमात्मदेव एक–रस एवं परिपूर्ण है तब ऐसी अवस्था को प्राप्त करके जीव परमानन्द को प्राप्त कर दैदीप्यमान हो जाता है और इसी अवस्था का नाम परम लोक है।**

जिस प्रकार कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका के प्रेम में तन्मय होकर बाह्य एवं आभ्यन्तर सभी विषयों को भूल जाता है उसी प्रकार जीव भी परमात्मा के साथ मिलकर उसके अपहृदपाप्मा आदि धर्मों वाले शान्त स्वरूप का अनुभव करके बाह्य जगत् के विषयों से अनासक्त होकर शोक मोह से दूर हो जाता है। उस समय वह सांसारिक कामना–वासनाओं से अलिप्त रहता है। इस असम्प्रज्ञात समाधि की अवस्था में जीव ब्रह्मानन्द में ही लीन रहने के कारण सांसारिक विषयों से उपरत होकर हृदयगत शोक–मोह से सर्वथा रहित हो जाता है। जीव की ऐसी अवस्था होने पर वह देखकर भी नहीं देखता, सुनकर भी नहीं सुनता, कर्म करता हुआ भी अकर्मकृत सा रहकर ब्रह्म के गुण को धारण करके तद्वत् हो जाता है। परमात्मा के साथ एक–रस हो जाने पर वह समस्त सांसारिक विषयों के रस से सर्वथा पृथक् हो जाता है। वह अगर बात नहीं करता तो इसका यह अर्थ नहीं कि इसकी वाक् शक्ति लुप्त हो जाती है अपितु जब वह शब्द–रहित परमात्मा से एक–रस हो गया, तब वह बात करे तो किसके साथ करे। इस अवस्था में न सुनने, स्पर्श न करने, संकल्प न करने आदि का कारण इन शक्तियों का लोप होना नहीं अपितु परमात्मा के साथ एक होने पर समस्त विषय–ज्ञान स्वयं ही शान्त हो जाता है। जब तक वृत्तियों के विषय बाह्य पदार्थ उपस्थित रहते हैं तभी तक जीव बात करता, देखता, सूँघता, रस लेता और मनन करता है। लेकिन जब जीव अपनी परम गति, अपनी सबसे उत्कृष्ट संभूति, अपने परमात्मा को प्राप्त कर लेता है तब इन सब सांसारिक भोगों की कामना स्वतः ही नष्ट हो जाती है एवं उस आनन्द को प्राप्त करके जीव आनन्दवान् हो जाता है।

समस्त भोग–साधनों से सम्पन्न होना ही मनुष्य–जीवन का सबसे बड़ा आनन्द है किन्तु मनुष्य के सौ आनन्दों के समान पितरों का एक आनन्द, पितरों के सौ आनन्दों के समान गन्धर्वों का एक आनन्द, गन्धर्वों के सौ आनन्दों के समान देवों का एक आनन्द, देवों के सौ आनन्दों के समान परम्परा से स्वयं–सिद्ध विद्वानों का एक आनन्द, विद्वानों के सौ आनन्दों के समान निष्काम श्रोत्रिय का एक आनन्द, निष्काम श्रोत्रिय के सौ आनन्दों के समान प्रजापति का एक आनन्द और प्रजापति के सौ आनन्दों के समान ब्रह्मलोक का चरम आनन्द है। **सबसे श्रेष्ठ, सबसे उत्कृष्ट निरतिशय तो एकमात्र परमात्मा का ही आनन्द है, जिसे प्राप्त करके मनुष्य आवागमन के बन्धन से छूटकर मुक्त हो जाता है।'' महर्षि याज्ञवल्क्य का यह उत्तर सुनकर जनक तृप्त हो गए।**

(शेष अगले अंक में)

आनन्द किन-किन परिस्थितियों में मिलता है

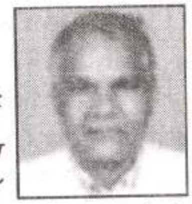

• **खुशहालचन्द्र आर्य**
१८०, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता, प. बंगाल
चलभाष : ८२३२०२५५९०, ९८३०१३५७९४

मैं लेख के शीर्षक के सम्बन्ध में कुछ लिखूँ उससे पहले मैं सुख और आनन्द में क्या अन्तर है यह लिखना उचित समझता हूँ। सुख में दो अक्षर हैं। पहला 'सु' दूसरा 'ख'। 'सु' का तात्पर्य होता है अचछा और 'ख' का तात्पर्य होता है इन्द्रियाँ। सुख का तात्पर्य हुआ जो पाँचों इन्द्रियों को अच्छा लगे वह सुख होता है। और जो अच्छा न लगे वह दु:ख होता है। जैसे अच्छा दृष्य, आँखों को अच्छा लगता है, यह आँखों का सुख हुआ। अच्छा गाना या भजन, कानों को अच्छा लगता है, यह कानों का सुख हुआ। इसी प्रकार अच्छा स्वादिष्ट भोजन जिह्वा (मुख) का सुख हुआ। अच्छा स्पर्श त्वचा (चमड़ी) का सुख हुआ और अच्छी गन्ध, नाक का सुख हुआ। जिस काम को करने से आत्मा को सुख होता है, वह आनन्द कहलाता है। जैसे आपने किसी का उपकार किया और वह प्रसन्न होकर धन्यवाद देता, तब जो आत्मा को प्रसन्नता होती है, वह आनन्द कहलाता है। यहाँ यह बतलाना भी आवश्यक है कि पाँच ज्ञानेन्द्रियों के पाँच सुख या गुण और पाँच ही देवता होते हैं। जैसे आँखों का गुण है रूप और इसका देवता है अग्नि। जहाँ अग्नि यानि रोशनी होगी वहीं रूप दिखाई देगा। इसी प्रकार कान का गुण है शब्द और देवता है आकाश। जहाँ आकाश होगा यानि खाली जगह होगी, वहीं शब्द (आवाज) सुनाई देगा और वह कानों से सुना जाएगा। इसी प्रकार जिह्वा का गुण है स्वाद और देवता है पानी। नाक का गुण है गन्ध (अच्छी या बुरी) और देवता है पृथ्वी। त्वचा का गुण है स्पर्श और देवता है हवा। इस प्रकार मनुष्य के पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ नाक, कान, आँख, जिह्वा और त्वचा। गुण है कान का शब्द, देवता आकाश, नाक का गुण गन्ध, देवता पृथ्वी, जिह्वा का गुण स्वाद, देवता पानी। जहाँ पानी होगा वहीं स्वाद होगा और वह जिह्वा द्वारा जाना जाएगा। त्वचा का गुण स्पर्श और देवता हवा। जहाँ हवा होगी तभी स्पर्श होगा और वह त्वचा द्वारा जाना जाएगा। इसी प्रकार आँखों का देवता अग्नि है, जहाँ अग्नि होगी वहीं रूप दिखाई देगा और वह आँखों के द्वारा देखा जाएगा। इस प्रकार हमारी पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। आँख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा और पाँचों के पाँच गुण रूप, शब्द, गन्ध, स्वाद और स्पर्श है और इनके पाँच देवता अग्नि, आकाश, पृथ्वी, पानी और हवा क्रमश: है।

अब हमारे लेख का मुख्य उद्देश्य है, आनन्द किन-किन परिस्थितियों में आता है, सो आनन्द के भी दो भाग हैं। पहला आनन्द दूसरा परम आनन्द। इनक दो-दो स्थितियाँ हैं। आनन्द की स्थिति परोपकारी कार्यों में और गहरी निद्रा यानि सुषुप्ति अवस्था में। जब हम किसी दूसरे की भलाई कर कार्य करते हैं, तो उस कार्य में हमें जो सुख मिलता है वह आनन्द कहलाता है कारण वह सुख किसी ज्ञानेन्द्रिय से नहीं ज्ञात होता बल्कि आत्मा को प्रतीत होता है, इसलिए वह आनन्द कहलाता है। इसी प्रकार गहरी निद्रा में हमें जो सुख प्राप्त होता है वह भी किसी ज्ञान इन्द्री को नहीं होता बल्कि आत्मा को होता है इसलिए यह भी आनन्द कहलाता है।

इसी प्रकार परम आनन्द भी दो अवस्था में आता है। पहला समाधि की स्थिति में और दूसरा मोक्ष की स्थिति में। जब मनुष्य अष्टांग योग करता है तब वह यम, नियम, आसान, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा की स्थिति से गुजर कर समाधि अवस्था में पहुँचता है। तब जीवात्मा को अति सुख मिलता है, इसी को परम आनन्द कहते हैं। वह समाधि की अवस्था में ही मिलता है। दूसरा परम आनन्द मोक्ष की स्थिति में मिलता है। जब मनुष्य की मृत्यु हो जाती है तब जीवात्मा या तो दूसरी योनि, यानि दूसरे शरीर में चली जाती है, तब वह जीवात्मा परम आनन्द से वंचित रहती है। परन्तु यदि उस जीवात्मा को मोक्ष मिल जाता है, तब वह जीवात्मा एक लम्बे समय तक यानि ३१ नील १० खरब ४० अरब वर्षों तक ईश्वर के सान्निध्य में रहते हुए परम आनन्द की स्थिति में रहता है। अब प्रश्न उठता है कि मोक्ष तो मृत्यु के बाद मिलता है तो इसको शरीर से क्यों जोड़ा जाता है। इसका उत्तर यही है कि जीवात्मा तो अमर है, मरता तो शरीर है। चूँकि मोक्ष में जीवात्मा तो रहती ही है, परम आनन्द तो जीवात्मा का विषय है, इसलिए हम मोक्ष की स्थिति को भी मानते हैं, जो जीवात्मा को शरीर छोड़ने के बाद मिलता है। इस प्रकार लेख के शीर्षक के अनुसार आनन्द और परम आनन्द की स्थितियों का वर्णन कर दिया। अब लेखनी को विराम देते हैं। ■

पर स्वयं नजर न आया

सारा संसार बनाया, पर स्वयं नजर न आया।
बिना कर सर्वस्व रचाया, पर स्वयं नजर न आया।।
ऊपर साम्राज्य गगन का, प्रतिपल सम्वन्ध नयन का।
सारी बारात सजाया, पर स्वयं नजर न आया।।
तारे, ग्रह, उपग्रह कितने, कोई बता सका न इतने।
सबको नभ में लटकाया, पर स्वयं नजर न आया।।
गोल सारे पिण्ड व्यवस्थित, मर्यादा में सब स्थित।
गोले पर सिन्धु बहाया, पर स्वयं नजर न आया।।
वन-उपवन विविध मनोहर, खिले सरसिज त्रिविध सरोवर।
फूलो का जग महकाया, पर स्वयं नजर न आया।।
जड़-चेतन की हर रचना, खूबसूरत ढंग से गढ़ना।
स्व-स्व पथ पर दौड़ाया, पर स्वयं नजर न आया।।
कण-कण में व्यापक सत्ता, कहता है पत्ता-पत्ता।
गुरु बन वेदों को पढ़ाया, पर स्वयं नजर न आया।।
दिन-रात संग में रहता, सारे कर्मों को लिखता।
फल तद्नुसार भुगवाया, पर स्वयं नजर न आया।।
स्थान हृदय है मिलन का, यह बाह्य जगत् भटकन का।
''**ईशावास्य.**'' बतलाया, पर स्वयं नजर न आया।।

• **ओमप्रकाश आर्य**
आर्य समाज, रावतभाटा (राज.)
चलभाष : ९४६२३१३७९७

ज्योतिष पाठ : भाग–४

हेमन्त एवं शिशिर ऋतु

● **आचार्य दार्शनेय लोकेश**

सम्पादक : श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्

(एकमात्र वैदिक पञ्चाङ्ग)

सी–२७६, गामा–१, ग्रेटर नोएडा

दूरभाष : ०१२०–४२७१४१०

५. हेमन्त एवं शिशिर ऋतु : ये हैं वर्ष या संवत् की अन्तिम २ ऋतुएँ। हेमन्त ऋतु के वैदिक नाम से कहे गए **सहस औ सहस्य** (लोक में **मार्गशीर्ष** और **पौष** नाम से भी प्रचलित) जिनको ज्योतिषीय दृष्टिकोण से **वृश्चिकार्क** और **धन्वार्क** भी कहा जाता है। और **तपस** एवं **तपस्य** (लोक में **माघ** और **फालगुन** नाम से भी प्रचलित हैं) जिनको ज्योतिषीय दृष्टिकोण से **मकरार्क** और **कुम्भार्क** भी कहा जाता है। **शिशिर ऋतु** के महीने होते हैं। पहले भी स्पष्ट कहा गया है कि ऋतुएँ सूर्य और केवल सूर्य से निर्मित हैं। अस्तु ऋतुओं के आधार सौर मॉस हैं। इसी तथ्य को स्पष्ट करते हैं **मीनार्क (अर्थात् मीन राशि में सूर्य), मेषार्क (मेष राशि में सूर्य) और वृषभार्क (वृषभ राशि में सूर्य)** इत्यादि जैसे नामकरण किए गए हैं।

संक्रान्ति का तात्पर्य सूर्य की नवीन राशि प्रविष्टि है। अगर आप गते (सौर क्रम में भारतीय दिनांकन व्यवस्था) पर गौर करें तो पाएँगे कि गति के अर्थ में गते, सूर्य के एक–एक अंश आगे होते जाने की स्थिति है। **अर्थात् हम भारतीयों की दिनांकन व्यवस्था खगोलिकी के सिद्धांतों का ही अनुशरण है** जो कि जहाँ तक मेरी जानकारी है भारत और नेपाल के सिवाय विश्व में अन्यत्र कहीं भी नहीं है। प्रचलित भारतीय या नेपाली पंचांग इस खगोलिकी को तथाकथित निरयण विधा में देने से ऋतु बद्ध तरीके से नहीं दे पा रहे हैं। **ये एक प्रमुख संशोधन है जो श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् (एकमात्र वैदिक पञ्चाङ्ग) में किया गया है। इस विधा को कथित रूप से सायन विधा भी कहते हैं।**

धन्वार्क की समाप्ति के साथ अर्थात् वैदिक तपसमास (मकरार्क या माघमास) की शुरुआत के साथ ही शिशिर ऋतु का महीना शुरू हो जाता है। ये एक अति विलक्षण दिवस होता है। क्योंकि यही दिन माघ संक्रांति के साथ–साथ उत्तरायण संक्रांति का दिन भी होता है। **इस प्रकार इस दिन मास संक्रांति, ऋतु संक्राति के साथ–साथ अयन संक्रान्ति भी घटित होती है।** ऋतुओं का निर्धारण देने वाली ये, संवत् की चतुर्थ नियामक तिथि है। इस दिन सूर्य परम दक्षिण क्रान्ति पर पहुँच के बाद उत्तरायण होता है। इस दिन उत्तर गोल में रात्रि सबसे बड़ी और दिन सबसे छोटा होता है और आज से दिनमान अर्थात् प्रकाश उपलब्धि का बढ़ते जाने का क्रम बन जाता है। खगोलिकी की भाषा में कहें तो रात्रिमान सबसे बड़ा और दिनमान सबसे छोटा होता है। यदि आप मकर रेखा क्षेत्र पर हों तो उस दिन **(२१ या २२ दिसंबर)** वहाँ आपकी छाया का लोप होगा। इस प्रकार सूर्य की **२७०+ अंश से ३३०** अंश तक की स्थिति शिशिर ऋतु की होती है। यदि आप अपने स्थान की किसी भी छाया को ठीक से नोट करते रहें तो उस छाया में होने वाले परिवर्तन से भी आप अयन विषयक एक खास संज्ञा ले सकते हैं।

दिनमान का बढ़ते जाना अर्थात् आपको प्रकाश का अधिकाधिक मिलना। सूर्य जगत् की आत्मा अर्थात् ऊर्जा का मूल स्रोत है। आप इस अयन में अधिक ऊर्जा पाते रहते हैं, अधिक ऊर्जस बने रहते हैं। प्रकाश अच्छाई का और अन्धकार बुराई का प्रतीक है इसी से उत्तरायण को शुभ कहा गया है। प्रकाश सन्दर्भ से ही शुक्ल पक्ष को अधिक शुभत्व की भावना से लिया गया है। उत्तरायण का शुक्ल पक्ष इस दृष्टि से और भी उत्तम समझा गया है। सर्वदा स्मरणीय महर्षि दयानन्द ने भी इस ही प्रकाश पूर्ण स्वाभाविक अच्छाई के कारण संस्कार विधि में **'चूड़ाकरणसंस्कारविधिं वक्ष्यामः'** में, 'उत्तरायण शुक्ल पक्ष में जिस दिन आनन्द मंगल हो, उस दिन यह संस्कार करें।' लिखा है।

आगे की ये चार पंक्तियाँ आपके विषय सन्दर्भ के संज्ञा को ठीक–ठीक बनाए रखने हेतु दुबारा लिखी जा रही है।

सम्पात को अंग्रेजी में Equinox और अयन को Solstice कहते हैं। **सम्पात के बारे में एक बहुत ही आवश्यक जानकारी ये है कि इस दिन हर स्थान पर उसके अक्षांश के अनुरूप छाया कोण बनता है। भूमध्य रेखा क्षेत्र अर्थात् अक्षांश पर छाया शून्य किन्तु यदि आप राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में हैं तो छाया का कोण २८ अंश और ३९ कला का बनेगा। इस ही सुविधा से आप विषुव के दिन प्रायोगिक अनुसरण पूर्वक अपने स्थान का अक्षांश भी जान सकते हैं।**

क्रान्ति गणितीय प्रमाण है। छायालोप प्रायोगिक या वैद्य सिद्ध प्रमाण हैं तो दिनमान और रात्रिमान का छोटा, बड़ा या बराबर होना प्रत्यक्ष प्रमाण है। **(क्रमशः)**

नववर्ष पर श्रृंगार नगर में १०१ कुण्डीय यज्ञ

वैदिक नव संवत्सर पर चैत्र शुक्ला प्रतिपदा, वैक्रमाब्द २०७६, सृष्टि संवत् १९७२९४९१२०, शनिवार, ६ अप्रैल, २०१९ को आर्य समाज श्रृंगारनगर, लखनऊ (उ.प्र.) द्वारा निकटवर्ती पार्क में १०१ कुण्डीय यज्ञ किया गया। यज्ञ के सञ्चालक आचार्य रूपचन्द्र 'दीपक' तथा सह–सञ्चालक पं. गिरजेश कुमार रहे। यज्ञोपरान्त चार आर्य महानुभावों को शॉल उढ़ाकर सम्मानित किया गया– (१) पं. प्रताप कुमार 'साधक', (२) श्री राम गोविन्द ठाकुर, (३) श्रीमती सूर्यकान्ता दीक्षित, (४) श्रीमती आशा मेहता। प्रातः ७.१५ से ९.१५ तक आयोजित समारोह जलपान के साथ सम्पन्न हुआ।

● **राकेश माहना**

मन्त्री–आर्य समाज श्रृंगारनगर, लखनऊ (उ.प्र.)

ज्ञान का सागर चार वेद, यह वाणी है भगवान की। इससे मिलती सब सामग्री, जीवन के कल्याण की।।

महर्षि दयानन्द के भाष्यानुसार– ऋग्वेद ज्ञानागार के कुछ मोती

गतांक से आगे...

अथ ऋग्वेद षष्ठम् मण्डलम्

सूक्त	मन्त्र क्र.	विषय
३७	१,३,४व५	मनुष्य क्या करे
	२	फिर मनुष्य परस्पर कैसा वर्ताव करे
३८	१	मनुष्यो को कैसे विद्वानों की सेवा करनी चाहिए
	२ व ३	फिर मनुष्य क्या ग्रहण कर सेवा करे
	४ व ५	अब मनुष्य क्या करे
३९	१ व २	विद्वानों को क्या करना चाहिए
	३ से ५ तक	विद्वानजन कैसा वर्ताव करें
४०	१	राजा को क्या करना चाहिए
	२	अब मनुष्यों को क्या खाना और पीना चाहिए
	३	फिर राजा और राजा के जन क्या करे
	४ व ५	फिर राजादि को क्या करना चाहिए
४१	१	राजा को क्या करना चाहिए
	२	प्रजा क्या करे
	३	फिर वे किसके लिए क्या करें
	४ व ५	फिर वह राजा क्या करे
४२	१	राजा और प्रजा जन परस्पर कैसा वर्ताव करें
	२ व ४	फिर मनुष्य क्या करे
	३	फिर वे (राजा और प्रजा) प्ररस्पर क्या करे
४३	१, ३ व ४	मनुष्य क्या करे
	२	फिर राजा क्या करे
४४	१, ७ व ८	राजादि को क्या करना चाहिए
	२, ३ से ६व १४ से १७ तक	फिर मनुष्य क्या करे
	४	मनुष्यों को किसकी स्तुति करना चाहिए
	९	राजा और प्रजाजन परस्पर का हित कैसे करे
	१०	फिर राजा और प्रजाजन परस्पर कहाँ प्रेरणा करें
	११	मनुष्य को क्या नहीं करके क्या करना चाहिए
	१२	फिर वह राजा किसके सदृश क्या करे
	१३	कौन इस पृथ्वी पर राजा होने योग्य है
	१८	राजा और प्रजाजन को निरन्तर क्या करना चाहिए
	१९, २०	राजा और मन्त्री जन क्या करें
	२१	फिर वह राजा कैसा होवे
	२२	फिर वह राजा किसका सत्कार करे
	२३	विद्वान कैसे होवे
	२४	विद्वानजन ईश्वर के साथ सदृश व्यवस्था करे
४५	१ से ३,६, १३ व १४	राजा क्या करे
	४	फिर मनुष्य को किसका सत्कार करना चाहिए
	५	राजा और मन्त्रियों को कैसा वर्ताव करना चाहिए।
	७	मनुष्यों को क्या करना चाहिए
	८	फिर क्या करके राजा ऐश्वर्य को प्राप्त होवे
	९	मनुष्य किसका निवारण करके किसको प्राप्त होवे
	१०, ११ व २३	राजा और प्रजाजन परस्पर कैसा वर्ताव करे
	१२	राजादि को क्या, प्राप्त करके क्या प्राप्त करना चाहिए
	१५	राजा क्या करे
	१६	फिर वह राजा किससे किसको जीते
	१७,२४व२७	फिर वह राजा कैसा होवे
	१८	राजादि क्या ध्यान करके क्या करे
	१९	मनुष्य कैसे जन की प्रशंसा करे
	२०	फिर मनुष्यों को कैसा राजा करना चाहिए
	२१	फिर राजा और प्रजाजन परस्पर किसकी शोभा करे
	२२	फिर मनुष्य किसके लिए क्या करे
	२५	फिर धर्मात्मा राजा की सब प्रशंसा करे
	२६	किनकी मित्रता नहीं जीर्ण होती
	२८	किसके लिए कहाँ क्या प्राप्त करें
	२९	फिर कौन उत्तम है
	३०	राजा और प्रजाजन एक मति करे
	३१	व्यापार के विषय में
	३२ व ३३	श्रेष्ठ आदि के दान से क्या होता है
४६	१ व २	शिल्प विद्या के बारे में
	३	फिर मनुष्य सङ्ग्राम (सङ्ग्राम)में कैसा वर्णन करे
	४	फिर राजा और प्रजाजन किसकी प्रतिज्ञा करे
	५,८,१०, ११,१२व१४	फिर राजा क्या करे
	६	फिर वह राजा कैसा होवे
	७	फिर राजा को कहाँ क्या धारण करना चाहिए
	९	मनुष्य कैसे गृह को बनावे
	१३	फिर मनुष्य को कैसे गमनादिक करना चाहिए
४७	१	क्या करके राजा शत्रुओं से नहीं सहने योग्य होवे
	२	फिर मनुष्य किसका सेवन करके क्या करे
	३ से ५ तक	फिर सोम औषधि क्या करती है
	६,७, १६	फिर राजा कैसा होवे
	८	राजा अपने आश्रितों के प्रति कैसा व्यवहार करे
	९	फिर वह राजा किसके प्रति कैसा व्यवहार करे **(शेष आगामी अंक में)**

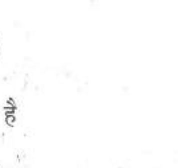

● पं. सत्यपाल शर्मार्य
आर्य समाज देहरी, जिला मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ८४३४७४६४७४

अपनी आँखों से

यह सुनी सुनाई बात नहीं है
अपनी इन्हीं आँखों से देखा है।
तब रुपए के सोलह आने
और चौसठ पैसे होते थे।
एक पैसे में भुने चने और
मीठी खील से पूरी जेब भर जाती थी।
आना दुअन्नी में ही भरे पूरे घर की
साग सब्जी आराम से आ जाती थी।
साइकिल होना परिवार के लिए
बड़ी शान की बात मानी जाती थी।
एक आने से लेकर आठ आने तक
पहली से दसवीं की फीस ली जाती थी।
पढ़ने में होशियार विद्यार्थियों की
वह भी माफ हो जाती थी।
सवा आने का एक सेर दूध
खुले आम बाजार में मिलता था।
दो से अढ़ाई रुपए में सेर भर
शुद्ध देसी घी घर पहुँचाया जाता था।
अच्छे दिन वही थे शायद! कौन बताए?

● **ओमप्रकाश बजाज**
१६६, कालिन्दी कुंज, पिपलियाहाना इन्दौर (म.प्र.)
दूरभाष : ०७३१–२५९३४४३

जय श्री कृष्णा अथवा कृष्ण?

एक भाई ने अपनी कार पर पेंटर से लिखवा रखा था– 'जय श्री कृष्णा'। मैंने उस भाई से पूछा कि "आपने यह किसका नाम लिखवा रखा है?"

वह बन्धु बोला कि "भगवान का।"

मैंने पूछा "कौनसे भगवान का?"

बन्धु– "कृष्ण भगवान का।"

मैं– "लेकिन यह तो कृष्ण भगवान का नाम नहीं है। यह तो स्त्री का नाम है। क्योंकि 'कृष्णा' नाम स्त्रीलिंग है।"

वह– " 'कृष्णा' किस स्त्री का नाम है?"

मैं– "महाभारत कालीन पाँच पांडवों में से तीसरे भाई अर्जुन की पत्नी का नाम 'कृष्णा' था। कृष्णा को राजा द्रुपद की पुत्री होने के कारण 'द्रौपदी' तथा पांचाल देश की बेटी होने के कारण 'पांचाली' भी कहा जाता था।"

तो इस तरह आपने जो वाक्य लिख रखा है उसका अर्थ है– "अर्जुन पत्नी द्रौपदी की जय।" यदि आप कृष्ण भगवान का ही नाम लिखना चाहते हैं तो इस प्रकार लिखें– **'जय श्री कृष्ण'।**

● **आचार्य रामगोपाल सैनी**

महर्षि दयानन्द जगा गये

हमारा पुरातन आदर्श 'आर्य' पवित्र नाम है।
हम भारती उपासक भारतीय ज्ञानी उपनाम है।।१।।
हमारा सर्व प्राचीन आर्यावर्त पुण्य धाम है।
हमारा देश भारत ज्ञानी राष्ट्र उप धाम है।।२।।
हमारे आराध्य पूर्वज राम और कृष्ण आर्य हैं।
आदर्श मर्यादा, संस्कृति व संस्कारों के कृत कार्य हैं।।३।।
यहाँ पूज्य शंकर, बुद्ध, महावीर, नानक महान हुए।
यहीं आचार्य चाणक्य, भोज, विक्रंस से विद्वान हुए।।४।।
यहाँ राणाप्रताप, वीर शिवा वीरता की पहचान हुए।
शीश अपना झुकाया नहीं, ऊँचा रख भारत मान जीए।।५।।
हमारे नाम धाम आदर्श थे, क्यों ये बदल गए।
गुलाम 'हिन्दू इडियेट इण्डियन' में कैसे ढल गए।।६।।
हम विश्व गुरु थे, बौद्धिक साम्राज्य था हमारा।
आओ विचारें उस पद पर पहुँचे कैसे दुबारा।।७।।
फूट की महाभूल से हम अति भारी पिट गए।
विदेशी दासता में हम सम्पूर्ण ही लुट गए।।८।।
दुश्मनों की मार से हम थोड़े में सिमट गए।
ठाट–बाट, ज्ञान–गौरव सभी कुछ मिट गए।।९।।
सुप्त आर्य जाति को महर्षि दयानन्द जगा गए।
भारत में संगठन व स्वराज लगन लगा गए।।१०।।
ज्ञानी राष्ट्र का प्राचीन गौरव दयानन्द बता गए।
अपमान जनक दास, विदेशी नाम महर्षि जता गए।।११।।
महान राष्ट्र का प्राचीन गौरव अब बढ़ाना होगा।
अपमानजनक दासता कलंक, अब हमें हटाना होगा।।१२।।
कितने गिरे अपमानित हुए, और कितने गिरेंगे अभी।
आओ मिल चिन्तन करें, अपनी गिरावट पर सभी।।१३।।
विश्वकर्मार्य राष्ट्र उत्थान–पतन खेद से बता रहा।
शीघ्र सम्भल जाओ अन्यथा संकट पुनः आ रहा।।१४।।
हम स्वाधीन हैं स्वाभिमान अपना अब बचाना है।
शक्ति सम्पन्न गणराज का गौरव अब बढ़ाना है।।१५।।
हम प्राचीन पवित्र आर्यों की श्रेष्ठ सन्तान हैं।
हमें हमारे प्राचीन पूज्य पुरखों पर स्वाभिमान है।।१६।।
हमारे उपास्य एक परम पिता परमेश्वर सर्वमहान हैं।
परब्रह्म, सर्वव्यापक, सृष्टिकर्ता अज अकाय शक्तिमान हैं।।१७।।
हमारा सर्व प्राचीन, सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
सत्य का प्रचार, असत्य का खण्डन हमारा कर्म है।।१८।।

● **अम्बालाल विश्वकर्मार्य**
बरखेड़ा पंथ, जनपद : मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ८९८९५३२४१३

मन्त्रविद् और आत्मविद्

● रामफल सिंह आर्य
सी–१८, तृतीय तल, आनन्द विहार,
उत्तमनगर दिल्ली–५९
चलभाष : ९४१८४७७७१४

वैदिक दर्शन की यह विशेषता है कि उसमें उहा–पोह करते समय जगत् के बाह्य स्वरूप की अपेक्षा मनुष्य को अपने अन्दर झांककर स्वयं को जानने पर अधिक बल दिया गया है। संसार के अन्य विचारक जहाँ केवल पदार्थों के बाह्य स्वरूप में ही उलझे रहे। वहीं पर वैदिक लोग इन्हें पार करते हुए कई पग आगे बढ़ कर आत्मा तक और अन्ततः परम आत्मा तक पहुँच गए। यह भी विचारणीय है कि यद्यपि जीवन का अन्तिम लक्ष्य उन्होंने मोक्ष को प्राप्त करना निश्चित किया परन्तु ऐसा करते समय उन्होंने कहीं पर भी प्रकृति की उपेक्षा नहीं की। इसके ज्ञान को अर्थात् भौतिक ज्ञान विज्ञान को कहीं पर भी आत्म प्राप्ति में बाधक न मानकर साधक ही माना गया। परन्तु केवल प्रकृति तक सीमित रहना श्रेयस्कर नहीं माना गया अपितु इसे तो अन्धकार में ले जाने वाला माना गया। महर्षि दयानन्दजी महाराज वेद भाष्य करते समय अनेक स्थलों पर यह उल्लेख बार–बार करते हैं कि राज्य व्यवस्था, समाज व्यवस्था, शिक्षा, उद्योग, कला–कौशल, ज्ञान विज्ञान का उद्देश्य मानव को सुख की प्राप्ति करवाना है, इन्हें सुख के साधन तो अवश्य माना है परन्तु जब उपासना की बात आती है या आनन्द प्राप्ति की बात आती है वे ईश्वर को ही सर्वोपरि स्थान पर रखते हैं। भौतिक ज्ञान विज्ञान का विकास करके जहाँ हम अपना जीवन सरल, सुखी और समृद्ध बनाते हैं वहीं इस सुख समृद्धि का भी अन्तिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति ही है। वस्तुतः भौतिकता से ऊपर उठकर जब हम आत्मा के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं तो यह विषय इतना सूक्ष्म और विशाल हो जाता है कि उसके लिए बहुत ऊँची योग्यता की अपेक्षा रहती है। यह सत्य है कि भौतिक ऐश्वर्य, धन सम्पत्ति का संग्रह करने में बहुत श्रम करना पड़ता है, समय भी लगता है और वह व्यक्ति जिसने ऐसा किया है, सुख भी भोग लेता है परन्तु जिसने इनका त्याग कर दिया है जो इनके आकर्षण को, लालच को पार करके आगे निकल गया वह तो वास्तव में वन्दनीय है उसका स्थान तो बहुत ऊँचा हो गया। धन कमाना बिल्कुल भी बुरा नहीं है, वेद ने इसके लिए स्वयं आज्ञा दी है, परन्तु केवल वहीं तक रह जाना तो डुबा देने वाला बोझ है। यह बहुत उलझन भरा रहस्य है जिसे समयझ पाना बड़ा कठिन कार्य है।

आज जिस व्यक्ति को थोड़ा बहुत ज्ञान भी हो जाता है वह सोचने लग जाता है कि उससे बड़ा ज्ञानी संसार में दूसरा नहीं है। लेकिन जब वह वास्तव में किसी ज्ञानी से मिलता है तो उसे अपनी स्थिति का ज्ञान हो जाता है। छान्दोग्य उपनिषद् में इस बारे में बहुत ही रोचक वर्णन मिलता है। नारद मुनि आचार्य सनत्कुमार के पास जाकर कहते हैं कि भगवन् मैंने बहुत कुछ पढ़ लिया है, ज्ञान–विज्ञान प्राप्त कर लिया है। परन्तु फिर भी मैं आत्मविद् न हो पाया हूँ। और क्या–क्या पढ़ लिया है, तनिक अवलोकन तो कीजिए– **ऋग्वेद, भगवोऽध्येमि, यजुर्वेद, सामवेद भाथर्वणं चतुर्थं, इतिहास पुराणं पञ्चं, वेदानां वेदं, पित्र्यं, राशिं, दैवं, विधिं वाक्योक्भेकायनं, देवविद्यां, ब्रह्मविद्यां, भूतविद्यां, क्षत्रविद्यां, नक्षत्रविद्यां, सर्पदेवयजनविद्यां एत्द्धग–वोऽध्योमि।।** (छान्दो. ६/१/२/ अर्थात् मैं ऋण, यजु., साम. अथर्व इन चारों वेदों को जानता हूँ। इसके अतिरिक्त इतिहास पुराण (ब्राह्मण तथा कल्पादि), वेदों का वेद व्याकरण तथा विरुक्त, पिञ्य = वायुविज्ञान, राशि = गणितविद्या, दैव = प्रकृति विज्ञान, विधि = भूगर्भ विद्या, वाक्योवाक्य = तर्क शास्त्र, एकायन = ब्रह्मविज्ञान, इन्द्रिय विज्ञान, भक्ति शास्त्र, पञ्चभूतज्ञान, धनुर्वेद, ज्योतिष शास्त्र, सर्प विज्ञान, देवजन विज्ञान = सर्पों को वश में करने वाली = गन्धर्व विद्या को मैं जानता हूँ। परन्तु इतना सब कुछ जानने के उपरन्त भी **'सः अहम् मन्त्रविद् एवं अस्मि न आत्मविद्'**– मैं मन्त्रविद् ही हुआ हूँ– आत्मविद् नहीं।

अहो आश्चर्य! घोर आश्चर्य!! इतना विद्वान पुरुष, इतनी विद्याओं का जानने वाला। पाठकगण! तनिक आज के इस युग में किसी को ढूंढने के लिए दृष्टि तो घुमाइये। क्या ऐसा कोई व्यक्ति मिलने की सम्भावना भी है? हमारी दृष्टि से तो बिल्कुल– बिल्कुल भी नहीं। ऊपर से उनकी विनम्रता देखिए कितनी स्पष्ट घोषणा कर रहे हैं कि मैं मन्त्रविद तो हूँ परन्तु आत्मविद् नहीं। आज वे लोग आत्मा और परमात्मा पर व्याख्यान देते हैं जिन्हें कुछ भी नहीं आता। जिनकी योग्यता शून्य है। परिणाम– बाबा जेल में और भक्त रेलमपेल में। अपना भी विनाश और भक्तों की दुर्दशा का तो वर्णन ही क्या करें? **''खुद तो डूबेंगे सनम, साथ में तुम्हें भी ले डूबेंगे।'** आश्चर्य तो इस बात पर भी होता है कि ऐसे विद्वान व्यक्ति की जो कि विद्या का चलता फिरता रूप था पुराणकारों ने क्या दशा बना दी। उन्होंने तो उन्हें चुगली निन्दा करने वाला, लड़ाई–झगड़े कराने वाला, उधर की बात उधर और उधर की बात इधर करने वाला बना डाला। कलह कराने वाला यदि कोई व्यक्ति होता है तो उसकी उपमा भी नारद मुनि कह कर दी जाती है। अरे! उसकी बातों में मत आ जाना, वह तो पक्का नारद मुनि है। कहाँ तो विद्या का ऐसा महाधनी व्यक्ति और उसके साथ–साथ निराभिमानी भी और कहाँ यह प्रचलित रूप। सत्य है कि पुराणकारों ने किसी भी महान व्यक्ति की दुर्गति करने में कोई कृपणता नहीं की।

तो नारदजी आगे कहते हैं– **श्रुतं हि स्व मैं भगवद् दृश्येस्य** = मैंने आप जैसे विद्वानों से सुना है– **तरति शोकं आत्माविद् इति** = जो आत्मा का ज्ञान प्राप्त कर लेता है, वह शोक से तर जाता है। **सः अहम् शोचामि** = वह मैं शोक मग्न रहता हूँ, **तं मा भगवान् शोकस्य पारं तारयतु** = आप कृपा करके मुझे शोक सागर से पार कर दें। इस वर्तालाप से दो बातें सिद्ध हो जाती हैं एक तो यह कि भौतिक विद्या चाहे कितनी भी अर्जित क्यों न कर ली जाएँ, वह कभी स्थायी सुख प्रदान करने वाली नहीं हो सकती और दूसरी यह कि यदि स्थायी सुख प्राप्त करना है तो आत्मविद्या जाननी आवश्यक है। इसी इच्छा को लेकर नारदजी सनत्कुमारजी के पास आए हैं। सनत्कुमारजी ने उपदेश प्रारम्भ किया कि– **यद् वै किंच एतद् अध्यगीष्ठाः नाम स्व एतत्** = तुम केवल शास्त्र पढ़कर जहाँ पहुँचे हो उसे नाम ब्रह्म कहते हैं, इसके आगे वाणी ब्रह्म है। वाणी से भी आगे मनब्रह्म

है, फिर संकल्प ब्रह्म है उससे आगे चित्त ब्रह्म है, उससे आगे ध्यान ब्रह्म है, फिर विज्ञान ब्रह्म हैं। नारदजी ने फिर पूछा कि क्या विज्ञान ब्रह्म ही अन्तिम है? सनत्कुमारजी उन्हें शारीरिक क्षेत्र में लाते हुए कहते हैं कि नहीं, बल ब्रह्म है, फिर अन्न ब्रह्म है, इसके आगे जल ब्रह्म है, तेज ब्रह्म है फिर आकाश ब्रह्म है, स्मृति ब्रह्म है, आशा ब्रह्म है और प्राण ब्रह्म है। फिर नारदजी ने सुख के सम्बन्ध में पूछा तो गुरु ने कहा– **ये वै भूमा तत् सुखम्, न अल्पे सुखं आस्ति** = जो भूमा है– निस्सीम है, वही सुख है, जो अल्प है एवं ससीम है उसमें सुख कहाँ? नारदजी ने पूछा कि भूमा क्या है? तो गुरुजी बोले– 'यत्र न अन्यत पश्यति, यत्र न अन्यत् ऋणोति, न अन्यत् विजानाति = जहाँ पहुँच कर व्यक्ति दूसरे किसी को नहीं देखता, किसी दूसरे को नहीं सुनता, न किसी दूसरे को जानता है, य: वै भूमा तद् अमृतम् = यह भूमा है और वही अमृत है। (धान्योग्य: सप्तम प्रपाठक)

सनत्कुमारजी का नारदजी को यह उपदेश बड़ा मार्मिक है। वास्तव में ऋषिवर सनत्कुमारजी से जो विद्या नारदजी ने अर्जित की थी उसमें ही सर्वत्र उस ब्रह्म की स्थिति दर्शा दी। साथ ही यह भी बतला दिया कि संसार के सारे पदार्थ और उनका ज्ञान सीमित है, परिवर्तनशीलन है और ऐसे पदार्थ कभी भी स्थायी सुक प्रदान करने वाले नहीं हैं। इन सभी पदार्थों का और उनके ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य ब्रह्म ही है। उसको जाने बिना सुख कहाँ? ब्रह्म अनन्त है, निस्सिम है, अपरिवर्तनशील, अविकारी है, अत: सुख चाहिए तो उसकी ओर चलो। हमने अपने इस लेख के प्रारम्भ में ही कहा था कि वैदिक दर्शन में प्रकृति को या उसके ज्ञान को नहीं भी नकारा नहीं गया है अत: उपनिषद् का यह वर्णन सर्वत्र उसी की विद्यमानता दिखला कर ऐसी विशाल दृष्टि प्रदान करता है कि मनुष्य केवल उसी का दर्शन करता है और जैसे ही ब्रह्म का स्पर्श सर्वत्र देखा तो सब सीमाएँ स्वत: ही समाप्त हो गई और भूमा का दर्शन हुआ, अमृत मिल गया।

बात प्रारम्भ हुई थी आत्मविद् होने से। इस ब्रह्म का दर्शन वही कर सकता है जो पहले आत्मा को जानता है जो आत्मा को नहीं जानता वह परमात्मा को कैसे जानेगा? यह आत्मविद् होना भी बड़ा ही कठिन कार्य है। हम लोग दूसरों के बारे में सब कुछ जानना चाहते हैं उस ज्ञान में बड़ा आनन्द आता है। अमुक व्यक्ति ऐसा है, अमुक ऐसा है, वह बड़ा चोर है, बड़ ठग है, झूठा है, भ्रष्ट है, लालची है आदि–आदि जानकर या सुनकर संतप्त हृदय को बड़ी शान्ति मिलती है। चुगली–निन्दा में वाणी का बड़ा रस मिलता है। परन्तु अपने बारे में हम कुछ भी नहीं जानते न जानना चाहते हैं। यहाँ विद्वान नारद महर्षिजी तो जिज्ञासा लेकर सनत्कुमारजी के पास जाते हैं कि मुझे आत्म दर्शन करवा दो परन्तु हमारे जैसे शूद्र जीव अन्यों को जानने में ही सारी आयु नष्ट कर देते हैं यह कैसा खेल है? वास्तव में देखा जाए तो यह बड़ा ही कठिन प्रश्न है कि यदि कोई हम से पूछ ले कि क्या आप स्वयं को जानते हैं? हम में से प्रत्येक का उत्तर अशुद्ध ही आएगा। क्यों? क्योंकि हम कभी भी इस बारे में सोचते ही नहीं। अच्छा एक और भी प्रश्न कर लेते हैं कि हम अपने आपको कब से जानते हैं? एक साल, दो साल, दस साल, बीस साल, पचास साल या अस्सी साल से? अब आप जो भी उत्तर दंगे वह निश्चित रूप से अशुद्ध होगा। हम जो भी समय इसका बतलाएँगे वास्तव में हम उससे बहुत पुराने हैं। आत्मा की आयु क्या है? हम कितने पुराने हैं? क्यों हो गया ना कठिन प्रश्न? इसका उचित उत्तर उसी समय मिलता है जब निरन्तर योगाभ्यास के द्वारा हम स्वयं को जानने का प्रयत्न करते हैं। शरीर से हटकर, इस परिवर्तनशील देह के अभिमान को छोड़कर जब हम अविनाशी, अजर, अमर आत्मा को जान लेते हैं तो पता चलता है कि–

न जायते भ्रियते वा कदाचिन् नायं भूला भविता व न भूय:।
अजो नित्य: शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यभाने शरीरे।।

(गीता २/२०)

अर्थात् अनादि अनन्त जीवात्मा न कभी पैदा होता है न मरता है, यह कभी होकर और फिर कभी नहीं होगा, ऐसा नहीं है। यह अजन्मा अर्थात् अनादि, नित्य, शाश्वत अर्थात् निरन्तर चेष्टाशील सनातन तत्व है। शरीर के मारे जाने पर यह नहीं मरता। पढ़ने के लिए तो नारदजी की भाँति हमने यह पढ़ लिया, शब्दों को तो जान लिया परन्तु इसकी अनुभूति करने के लिए तो कठिन साधना की आवश्यकता है। जब हम प्रात:काल एवं सायंकाल दोनों समय बैठकर यह अभ्यास करेंगे कि मैं शरीर नहीं हूँ, आत्मा हूँ, दिखाई देने वाला, बदलने वाला. मरने वाला यह शरीर, लम्बा, ठिगना, गोल या पतला, गोरा या काला मैं नहीं हूँ, मैं तो निराकार, अविनाशी, अनादि, चेतन आत्मा हूँ। शरीर के मरने पर मैं नहीं मरता तुरन्त ही कर्मानुसार दूसरा शरीर धारण कर लेता हूँ तो शनै:–शनै: हमें स्पष्ट अनुभव होने लगता है कि शरीर से नितान्त भिन्न एक पृथक सत्ता हूँ। शरीर तो मेरे रहने का घर है। कार्य करने का एक साधन है। ऐसी अवस्था आने पर ही मानो ईश्वर हमें चुन लेता है, अपना लेता है। जब तक शरीर और प्रकृति में उलझे हैं तब तक ईश्वर का ज्ञान कहाँ? उचित एवं उपरोक्त स्थिति प्राप्त होने पर संसार की सब वस्तुएँ हमें फीकी लगने लगती है, नीरस लगने लगती है। कोई प्रलोभन हमें डिगा नहीं सकता, कोई भय हमें विचलित नहीं कर सकता। महर्षि दयानन्दजी को उदयपुर के राणाजी अकूत धन सम्पत्ति का लालच देते हैं, मान–सम्मान, प्रतिष्ठा का लालच देते हैं और ऋषिवर उत्तर देने में कोई भी विलम्ब न करते हुए कहते हैं कि राणा जी! आपके राज्य से तो मैं एक छलांग लगाकर भाग जाऊँगा परन्तु ईश्वर के राज्य से भागकर कहाँ जाऊँगा। अपनी सम्पत्ति अपने पास रखिए, मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है। यह है आत्मविद् का उत्तर। आज का कोई गुरु घण्टाल होता तो कहता कि महाराज देर मत करो, इससे शुभ मुहूर्त इस कार्य के लिए फिर आने वाला नहीं है।

परदारा पर धन का करते जो अभिमान।
ऐसे गुरु बाँटते अब भक्तों को ज्ञान।।
इन गुरुओं के पास है, चेला चेली की धक्कमपेल।
आँखें तब भी नहीं खुलती जब गुरुवर जाते जेल।।

यह आत्म ज्ञान की विद्या सब विद्याओं से ऊपर है ज्ञान की पराकाष्ठा है। इसे जान लेने पर तो कुछ भी जानना शेष नहीं रहता। यह विद्या सूक्ष्मातिसूक्ष्म है। आत्मा सूक्ष्म, परमात्मा सूक्ष्म तो उनका ज्ञान स्थूल कैसे हो सकता है? जो कुछ नारदजी ने जाना था, पढ़ा था, उसी में ब्रह्म का स्पर्श देकर सनत्कुमारजी ने सब कुछ समझा दिया। ब्रह्म के स्पर्श के बिना सब ज्ञान, सब पदार्थ नीरस हैं, सूने हैं, जैसे ही उनके स्पर्श को देखा सब कुछ अपना सा दिखने लगा, सबमें स्वयं को ही देखने लगा। आओ। हम भी मन्त्रविद् से आत्मविद् होने की यात्रा आरम्भ करें। हम भी अविनाशी आत्मा को जानें, हम भी सर्वत्र ब्रह्म का स्पर्श देखें ऐसा होने पर तो–

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मनेवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं तो न वि जुगुप्सते।।

पौरूषेय शक्ति उगाती देश की दिव्य नारियाँ

● देवनारायण भारद्वाज 'देवातिथि'
'वरेण्यम' अवंतिका (प्रथम),
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ.प्र.)
दूरभाष : ५७१–२७४२०६१

जिन दिनों यह पंक्तियाँ ऊभरकर अंकित हो रही हैं, उन दिनों अपने भारत देश में देवी के नव रूपों को लक्ष्य कर नवरात्रि जागरण पर्व मनाया जा रहा है, जो नवसम्वत्सर के प्रथम दिवस से प्रारम्भ होकर श्री राम के जन्म दिवस रामनौमी पर पूर्ण होता है। कतिपय पुरुष व अतिशय नारियाँ व्रत–उपवास करके देश में संस्कारित सौरभ का प्रवाह कर देते हैं। विभिन्न नामरूप धारी इन पौराणिक देवियों में एक अद्‌भुत समानता पाई जाती है। वह इनके वाहन एवं हाथ में अस्त्र–शस्त्र के रूप में देखी जा सकती हैं। इनके वाहन इनके स्वरूप के अनुरूप शक्तिशाली होते हैं और अस्त्र–शस्त्र राक्षसी शत्रुओं के संहारक होते हैं। इनका वर्णन करके पंक्तियों को भारी भरकम न करते हुए प्रथमा विश्ववारा भारतीय संस्कृति की उस झांकी की ओर झांकते हैं, जिसके द्वारा सोलह संस्कार श्रेणी के द्वितीय पुंसवन संस्कार द्वारा, गर्भस्थ शिशु में नर–नारी के भेद को ध्यान में न रखते हुए पुरुत्व को प्रतिरोपित किया जाता है। माता को ऐसे ही चित्र एवं कथा–गान श्रवण की सीख दी जाती है।

'पुर'– अभिगमने, अग्रसर होने, मुख्य होने के लिए अपने क्षेत्र में वसने वाले व्यक्ति को, चाहे वह नर या नारी हो, शक्ति सम्पन्न और शत्रु हन्ता होना चाहिए। ऐसा ही भारत के इतिहास में होता देखा गया है और आज के भोगवाद में भी यह संयोग, निर्विवाद होता देखा जा सकता है। हर धर्म पत्नी के यही वीर भाव हों, जो ऋषिका शची पौलोमी व्यक्त करती है–

मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो मे दुहिता विराट्।
उताहमस्मि संजया पत्यौ मे श्लोक उत्तमः।। *ऋ.१०.१५९.३।।*

मेरे पुत्र शत्रुओं का हनन करने वाले हैं, मेरी पुत्री भी महानतम विराट–दीप्तिमती है, मैं सम्यक रूप से विजयशालिनी हूँ, क्योंकि मेरे पति का यश उत्तम, लोक विश्रुत है। वैदिक शची के इसी प्रण को दोहराते हुए पौराणिक शची इसी भावना को भव्य बनाते हुए देवताओं के नायक निज पति इन्द्र को, हाथ में रक्षा–बन्धन और माथे पर तिलक–वन्दन करके राक्षसों से युद्ध कर विजय अभियान हेतु प्रेरित करती है। चैत्र के शुक्ल पक्ष में देवी जागरण और ठीक छः महीने बाद फिर से देवी– दुर्गा जागरण के उत्सव मनाए जाते हैं। जैसे देवी दुर्गा की शक्ति–सामर्थ्य हमारे दुर्गति–दुर्बलता के दोष समाप्त करती है, वैसे ही देश की नारियों भी प्रत्यक्ष में ऐसा ही करती हैं। क्रान्तिवीर बलिदानी सरदार भगतसिंह के साथ स्व. भगवती प्रसाद व उनकी धर्मपत्नी, जिनको सभी साथी दुर्गा भाभी कहते थे। उन्होंने भगत सिंह की क्रान्ति योजना की सफलता के लिए, मिस्टर एवं मिसेज के अभिनय से एक बार उन्हें बचा लिया था। पं. रामप्रसाद बिस्मिल की बहिन शास्त्रीदेवी धन्य हैं, जिन्होंने अपने पैरों में बन्दूकें बाँधकर, जख्मी होते रहने के बाद भी क्रान्तिकारियों तक पहुँचाईं। श्रीमती ललिता शास्त्री कम वीरांगना नहीं थीं, जिन्होंने आर्थिक तंगी रहते स्वतन्त्रता सेनानी अपने पति लाल बहादुर शास्त्री के उत्साह को बनाए रखा; जिसके बल पर ही प्रधानमन्त्री शास्त्री ने भारत को प्रति सोमवार उपवास कराके न केवल भोजन की पूर्ति की, अपितु सैनिक सहायता बढ़ाकर भारत को विजयी बनाया और स्वयं बलिदान हो गए। इस शृंखला में शास्त्रीजी के बाद पदासीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने भयावह संकटों के मध्य उसी शत्रु स्वभावी देश को न केवल पराजित ही किया, उसके तिरानवें हजार सैनिकों को आत्म समर्पण कराते हुए एक नवीन बांग्ला देश नाम के मित्र देश का उदय कर दिया। इस उपलब्धि के लिए खचाखच भरी हुई संसद में विरोधी दल के नेता अटल बिहारी बाजपेयी ने श्रीमती इन्दिरा की साक्षात् महान दुर्गा कहकर सराहना की थी।

महारानी लक्ष्मीबाई, महारानी अवन्तीबाई, महारानी अहिल्याबाई आदि आमने–सामने के युद्ध में बलिदान हो गईं, किन्तु **'खूब लड़ी मरदानी'** काव्यालंकार की अधिकारिणी बन गईं। छत्रफति शिवाजी की माता वीरवती जीजाबाई ने बचपन से ही पुत्र को इस रूप में संस्कारित किया था कि वह मुगल शासकों को धूल चटा सके। वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप का बादशाह अकबर से स्वातन्त्र्य युद्ध चरम पर पहुँच गया था, इसके लिए उन्होंने महलों को छोड़कर वन–पर्वत में अपना बसेरा बना लिया था। जिस दिन बच्चों के लिए बनाई गई घास–पात की रोटी भी जंगली बिलाव चुराकर ले जाने लगा, उस दिन उनका दिल दहल गया, वे अकबर को सन्धि पत्र लिखने को उद्यत हो गए; तब उनकी धर्मपत्नी ही थीं, जिन्होंने उनके कर की कलम को छीन कर, उनकी कीर्ति पताका को झुकने नहीं दिया था। राजपूताना की अनगिनत वीरांगनाओं ने जौहर की ज्वाला में जलकर भी अपने पति व कुल को कलंकित होने से बचाए रखा था, और इतिहास में तारों की भाँति ज्योतिर्मय बन गईं। कतिपय ऐसे भी कुलहीन थे, जिन्होंने अपनी सुख–सुविधा के लिए आत्म–समर्पण करके अन्धकार में समा गए, उन्हें यहाँ प्रकाश में लाना उचित नहीं है। पर एक छोटे राज्य की राजकुमारी का उदाहरण वेद मन्त्र को सम्पुष्ट करता प्रतीत होता है।

लघु राज्य रूपनगर की राजकुमारी चंचल कुमारी के अनिद्य सौन्दर्य का पता जब बादशाह औरंगजेब को चला; तो उसने कुमारी के पिता–राज्य के शासक राजा को सन्देश भेजा– अपनी पुत्री को हमारी बेगमों की सेवा के लिए दिल्ली पहुँचा दीजिए, अन्यथा मैं आक्रमण करके राज्य को धूल में मिला दूँगा। राजा इस आदेश से घबड़ाकर बेटी को दिल्ली जाने के लिए जब उकसाने लगे, तब चंचल कुमारी ने अपने व राज्य के रक्षण का एक ही उपाय सोचा– स्वयंवर। स्थिति का उल्लेख करते हुए उसने महाराणा राजसिंह को अपना पत्र राज पुरोहित के द्वारा पहुँचाया। उसने लिखा था– आपकी वीरता व धर्म परायणता को देखकर मैंने हृदय से आपको अपने पति रूप में वरण कर लिया है। अब मेरी रक्षा का दायित्व

आपके ऊपर है। आप रूपनगर आकर प्राणिग्रहण कर मुझे मेवाड़ ले जाएँ, अन्यथा मैं बादशाह के चंगुल से बच न सकूँगी। यदि ऐसा हुआ तो रूपनगर के राजा की बेटी नहीं, महाराणा राजसिंह की पत्नी दिल्ली जाएगी। भरे दरबार में यह पत्र पढ़कर राणा कुछ सोच में पड़ गए; और अपने राज पुरोहित को पत्र दरबार को सुनाने के लिए दे दिया। पत्र पढ़कर सुनाने के बाद राज पुरोहित ने अपनी कड़ी आँखों से देखते हुए आवेश पूर्ण मुद्रा में कहा– **''इसमें संकोच की क्या बात है? क्या अपनी पत्नी की रक्षा का साहस भी महाराणा में नहीं है?''**

महाराणा ने कहा– ''रक्षा तो अवश्य होगी; बात केवल सीमित समय में कार्य पूरा करने की है। राणा ने घोषणा की; तलवार व पान का बीड़ा दरबार में रखा गया। सन्नाटा छाते देखकर नवयुवा सरदार वीर चूड़ावत की ओर राणा ने अपेक्षा पूर्ण नेत्रों से देखा, और चूड़ावत ने चुनौती को स्वीकार कर लिया। दरबार जयकारों व तलवार की झंकारों से गूँज उठा। वे अपनी सेना को कूच का आदेश देकर बिदाई के लिए अपने महल गए। उनकी नवयुवती पत्नी के विवाह समय लगाई हल्दी का पीलापन हाथ में अभी फीका नहीं पड़ा था, सरदार के हाथ का कंगन भी नहीं खुलने पाया था। नवयुवा हाड़ी रानी इस प्रस्थान को सुनकर कृतकृत्य होकर बोली– ''वीरों की भूमि मेवाड़ में अपने पति की धाक सुनकर मैं अभिभूत हूँ। पर आप मुझे देखकर पहले प्रसन्न फिर अवसन्न क्यों हो गए? आप मेरी चिन्ता छोड़कर निश्चिन्त जाइए, मैं आपके नाम पर बट्टा न लगने दूँगी। सरदार चले तो गए, किन्तु एक सैनिक को भेजकर युवा रानी से कोई चिह्न देने को कहा। रानी ने सोचा– ''मेरी चिन्ता से सरकार अपने कर्तव्य का पालन ठीक से कर न सकेंगे। उन्हें निश्चिन्त करना चाहिए। वे अन्दर से एक थाल व रूमाल लेकर आई– **''बोली चिह्न के रूप में मैं अपना शीश पति को भेंट करती हूँ।''** युद्ध भूमि में सरदार इस भेंट को देखकर चकित तो हुए किन्तु उसे अपनी गर्दन में मुण्डमाल बनाकर, ऐसा युद्ध किया कि औरंगजेब को भी उससे अपने प्राणों की भीख माँगनी पड़ी।

यद्यपि शत्रु–सैनिकों के सामूहिक आक्रमण से सरदार चूड़ावत बलिदान तो हो गए; किन्तु उन्होंने शत्रु दल का अत्यधिक संहार किया, और महाराणा राजसिंह को अपनी प्रतिज्ञा का पालन कर राजकुमारी चंचल कुमारी की शील–सुरक्षा का अवसर प्रदान कर दिया। यद्यपि इस रण–समरांगण के उदाहरण ने लेख का प्रभूत भाग घेर लिया, किन्तु भारतीय इतिहास के स्वर्ण–कण अवश्य बिखेर गया।

भारत भूमि पर यदि चन्द जयचन्द अपनी स्वार्थ ध्वनि को मन्द रखें तो निःस्वार्थ वीर बलिदानी हुंकारें का गुंजार असंभव नहीं है। वैदिक काल की ऋषिकाओं की भाँति वर्तमान मातृक्ति भी फिर से उनका समर्थन करते हुए उनके महाघोष का उद्घोष करती हैं।

अहं केतुरहं मूर्धाऽहमुग्रा विवाचनी।
ममेदनु क्रतुं पतिः सेहनाया उपाचरेत्।। *ऋ.१०.१५९.२॥*

मैं ध्वजवत सुदूर दर्शक हूँ, मैं सचेतक उग्र भाषो उच्चारिणी हूँ, मैं सहनशील होकर कर्तव्य कारिणी हूँ, मेरे पति को भी मेरा अनुकरण करना चाहिए। भारत वर्ष की विदेशमन्त्री सुषमा स्वराज राष्ट्रसंघ, यहाँ तक कि मुस्लिम देशों की महासभा में, इसी ध्येय से आमन्त्रित होती हैं, सर्वोच्च सम्मान की अधिकारिणी बनती हैं। भारत की राष्ट्र रक्षामन्त्री निर्मला सीतारमण सैनिक गणवेश में मोर्चे पर जाकर उत्साहवर्धन करती हैं। महिलाओं की सुसज्जित रणवाहनी गणतन्त्र पर्व–परेड में मातृभूमि का अभिवादन करती है। आज की नारियाँ आत्मघाती हमले में आतंकियों द्वारा शहीद अपने पति या पुत्र के सपने को साकार करने में अग्रसर हैं। शहीद पति कृष्णसिंह का सपना पत्नी हीरा ज्वाला ने एक बेटा नौसेना, दूसरा भूसेना में भेजकर परिपूर्ण किया। बिजौली (आगरा) के मुल्तान सिंह असम–उग्रवादियों द्वारा शहीद हुए; तत्कालीन शासकों ने वादा करके भी गाँव में उनका स्मारक नहीं बनवाया, तो उनकी पत्नी सुमन देवी ने ही यह कार्य कर दिखाया। कश्मीर पुलवामा में आत्मघाती हमला करके बड़ी संख्या में मातृभूमि के वीर शहीद किए गए। भारतीय वायुसेना ने आतंकी प्रशिक्षण केंद्र को रातोंरात नष्ट करके शत्रु को सबक सिखा दिया। कश्मीर सोपिया के १६ वर्षीय किशोर इरफान रमजान शेख ने कई आतंकियों को मार गिराया। भारत के महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने उसको शौर्य चक्र प्रदान कर उत्साहित किया।

वेदमन्त्रों की भाव–व्यंजना यही है कि हर पत्नी अपने पुत्र या पति को वीर पुरुष देखना चाहती है, उसे इनका स्त्रैण कायर कुरूप कदापि स्वीकार नहीं पुंसवन संस्कार के द्वारा इसी पौरुष को प्रोत्साहित किया जाता है। हमारे निकटवर्ती नगर अतरौली की नवविवाहिता पत्नी ने अपने पति को जब शादियों की चटल रंगशालाओं में स्त्री नर्तकी वेश में चटक–मटककर घूंघट में नाज–नखरे करते देखा, तो बहुत दुःखी हुई। उसे ऐसा करने को बहुत मना किया। नहीं मानने पर उसने मरण स्वीकार किया, किन्तु पति के स्त्रीरूप को धिक्कार दिया।

कीर्ति पताका फहराए दिगदिगन्त– वीरों का ऐसा हो वसन्त। ■

विश्व शान्ति कल्याण महायज्ञ एवं वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज अन्तरवेलिया, जिला झाबुआ (म.प्र.) का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव दिनांक १७ से १९ अप्रैल २०१९ तक विश्व शान्ति कल्याण महायज्ञ के साथ सपन्न हुआ। आयोजन के प्रारम्भ में प्रातः ग्यारह बजे शोभायात्रा आयोजित की गई।

आयोजन में स्वामी सांख्यायन सरस्वती, पं. आर्यमुनिजी, बेरछा, आचार्य धर्मवीरजी शास्त्री, कानड़, पं. विनोद जी, श्री दिलीप आर्य, श्री मेगजी भाई अमलियार सदस्य जिला पंचायत झाबुआ, श्री यशवन्त जी भण्डारी, अध्यक्ष बाल कल्याण समिति झाबुआ, माननीय विधायक गुमानसिंह जी डामोर की गरिमामयी उपस्थिति होकर आपके द्वारा अपने प्रवचन, भजन, उद्बोधन से उपस्थितों को लाभान्वित किया गया।

आजाद पत्रकार संघ झाबुआ के संस्थापक हेमेन्द्र नागर को उनकी ७वीं पुण्यतिथि पर तथा वन्दना वैदिक को उनकी द्वितीय पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। संस्था के प्रधान श्री भीमसिंह जी आर्य, सचिव श्री खेमचन्द्रजी आर्य व उपाध्यक्ष श्रीमती मनीषा वैदिक द्वारा उपस्थितों व सहयोगियों का आभार व्यक्त किया गया। पं. आर्येन्द्र कुमार वैदिक सचिव पं. राजगुरु शर्मा वनवासी विद्या विकास समिति अन्तरवेलिया की कर्मठता के बूते पर आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। झाबुआ जिले के अनेक राज्यों से वनवासी बन्धुओं ने तथा रतलाम नगर के अनेक आर्य महानुभावों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफलता प्रदान की। ■

गतांक पृष्ठ २४ से आगे

सैद्धान्तिक-चर्चा, भाग-३

● पं. कमलेश कुमार अग्निहोत्री
सत्य सनातन धर्म प्रबोधक मण्डल
पुष्कर बंगलोज, कर्णावती (गुजरात)
चलभाष : ९७२४७०७१२६

राष्ट्रीय धर्म

जिनसे राष्ट्र शक्तिशाली बनें वे कार्य करना, जो प्रवृत्तियाँ राष्ट्र की एकता में सहायक हों उन्हें पनपाना और राष्ट्र को हानि पहुँचाने वालों अर्थात् रिश्वतखोरों, भ्रष्टाचारियों, चोरों-डाकुओं, तस्करों, आतंकवादियों, हत्यारों, उपद्रवियों, प्रमादियों- आलसियों, विलासियों, गद्दारों आदि को किसी भी प्रकार का प्रोत्साहन न देना **राष्ट्रीय धर्म** कहलाता है। इस **राष्ट्रीय धर्म** को स्वीकारना प्रत्येक राष्ट्रवासी के लिए अति आवश्यक है। अन्यथा धर्म प्राप्ति हेतु किए जाने वाले अन्य पुरुषार्थ व्यर्थ हैं।

हम राष्ट्रवासी **राष्ट्रीय धर्म** का विधिवत् परिपालन करके अपने राष्ट्र को सुदृढ़ और सुसम्पन्न बनाएँ यह हमारा शुभ संकल्प होना चाहिए।

जिज्ञासु– राष्ट्र के उत्थान-पतन का दायित्व तो उन पर है, जिनके हाथों में शासन की बागडोर होती है, यदि वे ऐसा न चाहे तो हम क्या कर सकते हैं?

मनीषी– प्रजातन्त्र में शासकों का चयन प्रजा किया करती हैं। अत: राष्ट्रवासी नि:स्वार्थियों, चारित्रवानों, ईश्वरभक्तों एवं बुद्धिमानों को प्रशासन का अधिकार दें। इसके अतिरिक्त दुर्व्यसनों से ग्रसित व्यक्तियों के दुर्व्यसन छुड़ाना और दुराचारियों को सदाचारी बनाना भी राष्ट्रीय धर्म है।

जिज्ञासु– आप किस-किस दुर्व्यसनी के दुर्व्यसन छुड़ाएँगे और किस-किस दुराचारी को सदाचारी बनाएँगे? आज तो यत्र-तत्र-सर्वत्र इन्हीं का बोलबाला है।

मनीषी– **'राष्ट्रीय धर्म'** का पालन न करने का ही यह दुष्परिणाम है। आपको ज्ञात होगा कि सहन करने से अन्याय, अत्याचार, अनर्थ आदि में निरन्तर वृद्धि होती जाती है। वैसे यह कार्य साहस के अभाव में नहीं हो पाता। अर्थात् जिनकी अपनी चादर मैली है, वे दूसरों के दाग नहीं बता सकते। हाँ, यदि सभी सदाचारी, धर्मात्मा ईश्वर भक्त संगठित रूप से राष्ट्रीय धर्म का परिपालन करें तो सफलता अवश्य ही प्राप्त हो सकती है। अत: हमें अपने दायित्व अवश्य निभाना चाहिए। (यह कहकर श्री महाशय मनीषीजी ने अपनी घड़ी की ओर देखा)

जिज्ञासु– हमारी आज की **'सैद्धान्तिक चर्चा'** का निर्धारित जितना समय शेष है, उसमें कृपया मुझे अपना **'वैश्व धर्म'** और बता दीजिए।

वैश्व धर्म

मनीषी– सुनिये! ईश्वरीय ज्ञान **'वेद'** का प्रकाश फैलाकर अज्ञानान्धकार मिटाना, अर्थात् असत् मत-पन्थ, पाखण्ड, गुरुडम आदि के जाल से मानवों को मुक्त करना **'वैश्व धर्म'** है। यदि और स्पष्ट करूँ तो ईश्वर को न मानने अथवा उसे देहधारी बताने, तथाकथित देवी-देवताओं की मूर्तियों के समक्ष निरपराध पशु-पक्षियों का वध करने, भूत-प्रेत, जादू-टोने, ग्रहों का प्रकोप, फलित ज्योतिष से भयभीत होने, शराब, मांस, व्यभिचार को मुक्ति का साधन समझने, अपनी कन्याओं को तथाकथित मन्दिरों में समर्पित कर वेश्याएँ बनाने एवं विभिन्न प्रकार के चमत्कारों जैसे अन्धविश्वासों से मानव समुदाय का त्राण करना **'वैश्व धर्म'** है और इस धर्म का परिपालन अपनी शक्ति सामर्थ्य के अनुसार हर वैदिक धर्मानुयायी कर रहा है। क्योंकि इसके संस्थापक महर्षि दयानन्द ने... **'वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म बताया है।'** हमें विश्वास है, वेद प्रचार के बिना ये अन्धविश्वास नहीं मिट सकते। आपको यह ज्ञात होना चाहिए कि वर्तमान में इस भूमण्डल पर ऋषि शैली में वेद का प्रचार आर्य समाज के अतिरिक्त और कोई नहीं करता।

जिज्ञासु– आज आपने धर्म और मत-पन्थों का अन्तर तथा **'धर्म का मर्म'** बताकर मुझ पर महान् उपकार किया है, तदर्थ में आपका हृदय से आभारी हूँ। मैंने वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं वैश्वधर्म की यह ज्ञानवर्धक सैद्धान्तिक जानकारी आज पहली बार प्राप्त की है। मुझे आज्ञा दीजिए कि कल मैं इसी समय पुन: आपकी सेवा में उपस्थित होकर **'वेद ही ईश्वरीय ज्ञान क्यों है?'** तथा **'आर्यसमाज क्या है?'** इत्यादि उपयोगी और आवश्यक जानकारियाँ प्राप्त कर सकूँ।

मनीषी– आप अवश्य पधारिए और यदि इस प्रकार की 'सैद्धान्तिक चर्चा' में आपके कोई साथी रुचि रखते हों तो उन्हें भी साथ लाइए, मुझे प्रसन्नता होगी। क्योंकि वैदिक धर्म प्रचार मेरा 'परम धर्म' है। मैं अपने लिए इससे अच्छा और कोई कार्य नहीं समझता। जब मैं अपने कर्तव्य का पालन करता हूँ तो मुझे सुखद अनुभूति होती है। अब आज की इस 'सैद्धान्तिक चर्चा' को हम यहीं विराम देते हैं। ■

आर्ष बोध, भाग– १३

१. सब यही कहते हैं कि वह मर गया किन्तु क्या लेकर कहाँ गया यह कोई नहीं बताता। जीव शरीर छोड़ते समय अपने पुण्य पाप की गठरी साथ लेकर और अपना यश–अपयश छोड़कर जाता है, यह याद रखें।

२. देह त्यागी जीव अपने स्वजनों, परिजनों और भौतिक ऐश्वर्यों को साथ लेकर नहीं जाता। अकेला आता और जाता है उसने कितने–कितने साथी अपनाए और छोड़े यह वह स्वयं नहीं जानता।

३. वैदिक मान्यतानुसार मोक्ष प्राप्त जीव ३१ नील १० खरब और ४० अरब मानुष वर्ष का काल पूरा कर पुन: आवागमन के चक्र में आ जाता है। क्योंकि जिसकी आदि है उसका अन्त भी अवश्य हुआ करता है।

प्रदूषण का पाप

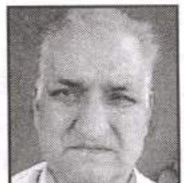

• मोहनलाल दशौरा 'आर्य'
नारायणगढ़, जनपद : मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ९५७५७९८४१२

पर्यावरण दूषित होने से सारा विश्व चिन्तित है। मानव मशीन को प्रदूषण से बहुत बड़ा खतरा हो गया है और यह खतरा दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण में सांस लेना दम घुटने जैसा काम है। शहरों में सबसे ज्यादा परेशानी है। दिल्ली, कलकत्ता जैसे शहरों की हकीकत हम देख रहे हैं। ऊपर से खान–पान में जन्मजात मिलावट (रासायनिक खाद, विषैली दवाएँ) तथा मानव द्वारा मिलावट अलग बढ़ती जा रही है, भौतिक वाद में क्वालिटी के बजाए क्वांटिटी पर अधिक ध्यान दिया जाता है। ऐसे में मानव की ईश्वर निर्मित मशीन सौ साल तक चलने वाली (देह) पचास–साठ के करीब ही दम तौड़ देती है। फिर मिर्च–मसाले का अधिक उपयोग और बीडी–सिगरेट, तम्बाखू पाऊच और शराब भी उम्र घटाने में मददगार है। तीस–चालीस में ही हार्ट, किडनी, फेफड़े, लीवर आदि जवाब दे देते हैं। चिकित्सा के विकास के साथ बीमारियों की क्वालिटी व दबाव भी बढ़ता जा रहा है। प्रदूषण का पाप बढ़ता ही जा रहा है। इस प्रदूषण के पाप के भागीदार भी हम मनुष्य ही है जो इसे कम करने के बजाए दिन पर दिन बढ़ा रहे हैं।

वन–जंगल तो साफ होते ही जा रहे हैं, परन्तु हम भी वृक्षों के बड़े दुश्मन हैं। हर जगह हरे वृक्ष कटवाने के दलाल मिल जाएँगे। करोड़ों का बजट पौधारोपण और रक्षण में चला जाता है परन्तु इतना बदलाव दिखता नहीं है। सड़क, बिजली, भवन निर्माण में कई वृक्ष साफ।

वाहन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं जिनका धुआँ और गर्मी वायुमंडल में मिलकर ग्लोबल वार्मिंग बढ़ा रही है। रैलियाँ व दुरुपयोग।

कल–कारखानों का धुआँ, गैसें और केमिकल युक्त गंदा पानी भी प्रदूषण में पूरा योग निभा रहा है। उस पानी की सब्जियाँ हम खा रहे हैं। दशहरा, दीपावली, तीज–त्योहार, विवाह, जीत–खुशी के समय की जाने वाली आतिशबाजी भी वायुमंडल को दूषित करती है।

प्रतिदिन हजारों टन फूल–पत्र, हार–मालाएँ खाद उपयोग सड़ने को सड़कों, नालियों, कुएँ, तालाब, नदियों में फेंक दिए जाते हैं जो प्रदूषण के मूल स्रोत हैं।

मरे हुए जानवर, कब्र में दफन देह भी प्रदूषण फैलाते हैं। इस प्रकार अनेक कारण जो पर्यावरण बिगाड़ते हैं। प्रदूषण पैदा कर हमारे स्वास्थ्य के दुश्मन हैं। यह महा पाप है जिसका जिम्मेदार स्वयं मनुष्य ही है। इन कारणों पर चिन्तन कर रोक या बदलाव जरूरी है। इसके लिए सख्त कानून के साथ हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी भी होनी चाहिए।

हर साल मीटिंगें, अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर होती हैं। पर्यावरण विश्व दिवस मनाया जाता है। पौध रोपण किया जाता है परन्तु प्रेक्टिकल (प्रत्यक्ष/उपाय) के बजाए औपचारिकताएँ ही अधिक दिखाई देती हैं। ■

भारत वीर सपूत : नरेन्द्र मोदी

नेता के गुण अब सुनो, सभी लगाकर ध्यान
जिसमें ये गुण हैं उसे, नेता लेना मान
नेता लेना मान, वेद पथ का जो हामी
जनसेवक निर्भीक, सत्यवादी जो नामी।।
चरित्रवान, गुणवान, सदाचारी मतवाला।
देश भक्त बलवान, वही है नेता आला।।१।।

सच्चा नेता है सुनो, नरेन्द्र मोदी वीर।
ईश्वर भक्त महान है, देश भक्त रणधीर।।
देश भक्त रणधीर, गरीबों का हितकारी।
कमजोरों का सबल सहारा, है तपधारी।।
रात–दिवस जो काम, देश हित के करता है।
हिम्मत का है धनी, न दुष्टों से डरता है।।२।।

बन्द किए हैं वीर ने बड़े बड़े सब नोट।
बेईमानों में सुनो, मारी भारी चोट।।
मारी भारी चोट, अचम्भित है जग सारा।
नेता है नीतिज्ञ, दाव मौके पर मारा।।
पापी बेईमान, देश से मिट जाएँगे।
आतंकवादी चोर, यहाँ ना रह पाएँगे।।३।।

नरेन्द्र मोदी सन्त हैं, भारत वीर सपूत।
भारत को जो हर तरह, कर देगा मजबूत।।
कर देगा मजबूत, प्रसन्न हैं सब नर–नारी।
करती है गुणगान, देश की जनता सारी।।
ईश्वर से है विनय, वर्ष सौ मोदी जीवे।
'नन्दलाल' कह वेद सुधा, जीवन भर पीवे।।४।।

प्यारे भारतवासियो! कहूँ जोड़कर हाथ।
नरेन्द्र मोदी का सभी, मिलकर के दो साथ।।
मिलकर के दो साथ, करेगा सबकी सेवा।
सेवा से ही मिले, सुयश की पावन मेवा।।
नन्दलाल है बड़ा, बहादुर यह नर बंका।
फूंकेगा हनुमान, पापीयों का गढ़ लंका।।५।।

• पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य
आर्य सदन, बहीन, जनपद : पलवल (हरियाणा)
चलभाष : ९८१३८४५७७४

सुख का आधार : गृहस्थ आश्रम

● डॉ. अशोककुमार आर्य
फन्दपुरी, जनपद : सहारनपुर (उ.प्र.)
चलभाष : ९६२७४२३३५४

धर्म की रक्षा

पति और पत्नी शब्द का मूल एक ही **'पा'**- रक्षणे धातु है, जिसका अर्थ है रक्षा करना। पति का अर्थ हुआ रक्षा करने वाला और पत्नी का अर्थ हुआ रक्षा करने वाली। परन्तु प्रश्न उठता है- किसकी रक्षा करने वाली? बस, इसी शंका की निवृत्ति के लिए धर्म शब्द साथ जोड़ दिया कि स्त्री और पुरुष धर्म की रक्षा करके ही पति पत्नी पदों पर अधिष्ठित होंगे। दोनों ने मिलकर धर्म की रक्षा करनी है। दोनों का धर्म एक ही है। पुरुष ने जब अपने को अपने धर्म की रक्षा में दुर्बल पाया तो स्त्री को सहभागिनी बनाया। इससे पत्नी का कर्तव्य हो गया कि पति के धर्म की, व्रत की, यज्ञ-संकल्प की रक्षा करें। महाराजा जनक ने अपनी पुत्री सीता का हाथ राम को सौंपते हुए यही कहा था- **'इयं सीता मम सुता सहधर्मचरी तव'** यह मेरी पुत्री सीता तेरे धर्म के अनुकूल आचरण करने वाली है। **धर्म ही वह तत्व है जो पति-पत्नी के सम्बन्ध को दृढ़ और अक्षुण्ण बनाए रखता है। रूप और रुपए पर आधारित सम्बन्ध स्थायी नहीं रहते,** धर्म पर आधारित सम्बन्ध स्थायी होते हैं। अत: पुत्री के पत्नी नाम को सार्थक करने के लिए पति के धर्म की रक्षा करनी होगी।

गृहस्थ रूपी गाड़ी की धुरी को वहन करने के कारण जहाँ तू **व + धू =** वधू कहलाएगी, गृह में प्रत्येक वस्तु को सुव्यवस्थित और संगृहीत करने के कारण जहाँ तू गृहिणी कहलाएगी, वहाँ पति के साथ धर्म-कार्यों में भागीदार बनकर धर्मपत्नी कहलाएगी।

पत्नी के बगैर पति का यज्ञ निष्फल है। भी श्रेष्ठ कर्मों में सहभागी होने से ही तू पत्नी नाम को सार्थक करेगी। पाणिनि मुनि ने तो अपने **'पत्युर्नो यज्ञसंयोगे'** (४/१/३३) सूत्र में स्त्री की पत्नी संज्ञा यज्ञ-कार्यों में सहयोग देने पर ही मानी है।

पत्नी गृहस्थ का मूल है। उसी की सहायता से पुरुष सन्तानोत्पादन करके पितृऋण से मुक्त होता है। वहीं उसके पितरों को तारने वाली है। उसी के साथ यज्ञ करके पति स्वर्गगामी होता है। इस दुनिया की दु:खपूर्ण बीहड़ यात्रा में पत्नी ही पुरुष का सहारा होती है पत्नी ही धर्म, अर्थ, काम का मूल है, संसार-सागर से तरने की नौका है। प्रियंवदा पत्नी ही एकान्त में पति की मित्र होती है। वह बियाबान मार्ग में पथिक का विश्राम स्थल है। पत्नीवान का ही विश्वास किया जाता है। पत्नी ही मनुष्यों की परम गति है। जुए में सब कुछ हारकर मूढ़वत् बैठे हुए और अप्रतिष्ठा के सागर में डूबते हुए युधिष्ठिर महाराज को उनकी साध्वी पत्नी द्रोपदी ने ही पार लगाया था। इसलिए पत्नी का कर्तव्य है कि पति की हर अवस्था में रक्षा करे, उसे कहीं किसी जगह अपमानित न होने दे।

महाभारत की शकुन्तला पत्नी के महत्व पर प्रकाश डालती हुई कहती है- मानसिक दु:खों से संतप्त तथा बिमारियों से आतुर पुरुष अपनी स्त्रियों से उसी प्रकार प्रसन्न होते हैं जैसे पसीने से नहाए व्यक्ति जल से स्नान करके प्रसन्नता प्राप्त करते हैं। पति को पत्नी का कभी अप्रिय नहीं करना चाहिए क्योंकि रति, अर्थ सार्थकता, प्रीति और धर्म उसी के हाथ में है। स्त्रियाँ सन्तान की सनातन पुण्य जन्म-भूमि हैं। ऋषियों में भी ऐसी शक्ति नहीं है कि स्त्री के बिना प्रजा की सृष्टि कर सके।

पत्नी के कर्तव्य

पत्नी का सर्वप्रथम कर्तव्य है पति की सेवा। धर्मशास्त्रों में स्त्री के प्रधान कर्तव्य पति-सेवा और पातिव्रत्य का पालन बताए गए हैं। शंख के मत में स्त्री को व्रत, उपवास, यज्ञ, दानादि से वैसा फल नहीं मिल सकता जैसा पति-सेवा से मिलता है। सीता की सम्मति में पत्नी के लिए पति-सेवा से अतिरिक्त कोई तपस्या नहीं। सत्यभामा को द्रौपदी ने धर्मराज युधिष्ठिर को अपने वश में रखने का सबसे बड़ा मूलमन्त्र पति-सेवा ही बताया था। द्रोपदी ने कहा- **''मैं उनकी आज्ञापालक, अहंकारशून्य, उनके विचारों का ध्यान रखने वाली हूँ। उनको बुरा लगने वाले कथन, स्थान, दृष्टि, बैठने, बुरा चलने तथा बुरे इशारों से सदा बचाती रहती हूँ उनके स्नान, भोजन और आसन ग्रहण करने से पहले मैं ये कार्य नहीं करती। उनके न पीने योग्य और न खाने योग्य का भी सेवन नहीं करती। उनकी आराधना करते हुए मेरे लिए दिन-रात बराबर हैं। मैं प्रात:काल उनसे पहले उठती हूँ और रात को उनके पीछे सोती हूँ।''** (महाभारत ३/१२३/४)

आर्य परिवार में सम्भवत: पति-सेवा का सर्वोच्च आदर्श सीता ने रखा है। चौदह वर्ष के वनवास की आज्ञा होने पर श्रीराम की यह इच्छा है कि कोमलांगी सीता वन्य जीवन के भयंकर कष्टों से बची रहे। किन्तु वह पति-सेवा के लिए भीषणतम् कष्ट सहने को तैयार है वा.रा. २/२६ में उन्होंने कहा था- **''हे राघव! यदि आप आज दुर्गम वन को जाते हो तो मैं आपके आगे-आगे कांटों और कुशा-घास को कुचलती हुई चलूँगी। उच्च अट्टालिकाओं तथा विमानों में बैठकर आकाश में विहार करने की अपेक्षा, सब अवस्थाओं में पति के चरणों की सेवा ही श्रेष्ठ है। यदि स्वर्ग में भी वास करना मिले,तो मैं उसे आपके बिना पसन्द न करूँगी।''** श्री राम ने जब उसे पहाड़ी कन्दराओं में गर्जने वाले सिंहों, नदियों से सर्वभक्षी ग्राहों, वनों के हाथियों और काले सर्पों का डर दिखाया, तो सीता ने उत्तर दिया- **''जब आप मेरे साथ होंगे तो मुझे इन हिंसक जन्तुओं का क्या भय है।**

मार्ग में आने वाले सरकण्डे और कांटेदार पेड़ मुझे रुई और मृगचर्म के समान स्पर्श वाले प्रतीत होंगे। आपके साथ जो वस्तु है वह मेरे लिए स्वर्ग है, आपके बिना जो कुछ है वह सब नरक है।'' (२-३०; ३-१९) अन्धेरे में छाया व्यक्ति का साथ छोड़ देती है किन्तु विपत्ति में सीता ने राम का साथ नहीं छोड़ा।

पातिव्रत्य धर्म

पत्नी के लिए पति सेवा से अतिरिक्त पातिव्रत्य धर्म का पालन है। पातिव्रत्य का आदर्श यह है कि एक बार किसी पुरुष से विवाह होने के पश्चात् उसमें न्यूनताएँ होने पर भी दूसरे पुरुष का मन में भी विचार न करना।

सावित्री को इस बात की सूचना मिल जाने पर भी कि उसके द्वारा वरण किए सत्यवान् की आयु अत्यल्प है, अपने पातिव्रत्य धर्म से विचलित नहीं हुई। उसने अपने पिता को स्पष्ट कह दिया कि **''सत्यवान् लम्बी आयु वाला हो या छोटी आयु वाला, गुणवान् हो या गुणशून्य, मैंने एक बार पति चुन लिया है। दूसरा पति नहीं चुनूँगी।''** (महाभारत २१/२९४१/२७) पिता को कन्या का आग्रह स्वीकार करना पड़ा।

गान्धारी को जब यह पता लगा कि उनका विवाह अन्धे धृतराष्ट्र के साथ होना है, तो उसने अपनी आँखों पर कई तहों वाली पट्टी बाँध ली, ताकि उसके चित्त में पति के प्रति किसी प्रकार का दुर्भाव उत्पन्न न हो। (महाभारत १/११०/१४)

पति के कर्तव्य

जहाँ पत्नी के लिए पति सेवा और पतिव्रत धर्म आवश्यक है, वहाँ पति के लिए भी दोनों ही कर्तव्य-तुल्य है। उसे भी सेवा, रक्षा और सम्मान द्वारा पत्नी को सन्तुष्ट रखना चाहिए और पत्नीव्रत-धर्म का पालन करना चाहिए। मनु ने संक्षेप में स्त्री और पुरुष का यह परम धर्म बताया है कि वे मृत्यु-पर्यन्त एक-दूसरे के प्रति सत्यवादी (वफादार) रहें। अथर्ववेद में इन्द्र से यह प्रार्थना है कि वह पति-पत्नी को एक-दूसरे के प्रति चकवा-चकवी के जोड़े की भाँति सच्चा रहने की प्रेरणा करें। इसलिए न केवल पत्नी का ही यह कर्तव्य है अपितु पति का भी कर्तव्य है कि पत्नी के प्रति पूर्ण निष्ठावान् रहे। उसे छोड़कर भिन्न स्त्री का मन से चिन्तन भी न करे। यही परस्पर का व्यवहार पत्नीव्रत और पतिव्रत धर्म है। पति के शास्त्रकथित क्या कर्तव्य है, उनका उल्लेख करना भी अयुक्त न होगा, जिससे तू उन्हें विपथगामी होने पर याद दिला सके।

पत्नी का भरण

पति द्वारा पत्नी के भरण की व्यवस्था सार्वभौम है। इसका मूल कारण जीव-शास्त्र से सम्बन्ध रखता है। अतः-संरक्षण के लिए आवश्यक है कि पति-पत्नी का भरण-पोषण करें। पक्षियों में हम यह देखते हैं कि मादा अण्डे को सेती है और नर उसकी रक्षा करता है और उसके लिए सामग्री जुटाता है। यदि ऐसा न करे तो उनकी जाति की जाति नष्ट हो जाए। मानव भी इन्हीं कारणों से पत्नी की रक्षा करने के लिए बाध्य होता है। जो पुरुष भार्या के संरक्षण में असमर्थ है वह महान् अपयश पाता है तथा नरक में जाता है।

पत्नी की रक्षा

पत्नी के भरण के साथ उसके रक्षण का भी कार्य जुड़ा हुआ है। रक्षण का सामान्य अभिप्राय है शत्रुओं तथा भौतिक संकटों से रक्षा महाराज युधिष्ठिर के लिए यह सबसे बड़ा कलंक था कि वह अपनी पत्नी की रक्षा नहीं कर सके। इसके विपरीत द्रौपदी ने ही उनको और शेष पाण्डवों को दासता से मुक्त कराया था। दुर्योधन ने अपनी पत्नी की रक्षा में असमर्थ युधिष्ठिर को नपुंसक कहा था। युधिष्ठिर के लिए उससे बढ़कर संताप और क्या हो सकता था!

पत्नी के प्रति मधुर व्यवहार

पत्नी के भरण और रक्षण के अतिरिक्त पति का यह भी कर्तव्य है कि वह पत्नी के प्रति प्रेमपूर्ण और उत्तम व्यवहार करे। विदुर के मत में पति को यह उचित है कि वह उसके साथ (प्रत्येक वस्तु) समविभाग करे, उसके साथ मीठे वचन बोले, उसके प्रति कोमल रहे और मधुर वाणी का प्रयोग करे। (५/३८/१०)। पति को मधुर वाणी के प्रयोग का ही परामर्श नहीं दिया गया अपितु पत्नी के साथ विवाद न करने तथा दुर्वचन न कहने का भी आदेश दिया और ऐसा करने वाले पुरुष की तीव्र भर्त्सना की गई है। पत्नी को गाली देने वालों के लिए नरक में स्थान बताया गया है। (महाभारत ५/३७/५)

पत्नी का सम्मान

पत्नी के प्रति उत्तम व्यवहार ही पर्याप्त नहीं है, उसका सत्कार भी होना चाहिए। पति को अपनी पत्नी का पूर्ण सम्मान भी करना चाहिए। **स्त्रियाँ मान योग्य है। हे मनुष्यों! उनका मान करो।** स्त्री से धर्म, रति और पुत्र का कार्य पूरा होता है। तुम्हारी परिचर्या और सेवा उसके अधीन है। सन्तान का निर्माण, सन्तान का परिपालन और सांसारिक जीवन में प्रीति, पत्नी के कारण होती है। इनका सम्मान करना चाहिए। इससे तुम्हारे सब कार्य सिद्ध होंगे। जो पति बहुत कल्याण चाहता है, उसे स्त्री को अलंकारों से भूषित करना चाहिए। मनु यह भी कहते हैं कि स्त्री इस प्रकार भूषित, पूजित और सम्मानित होने से शोभायमान होती है। उसके ऐसा होने पर सारा कुल चमक उठता है। यदि वह शोभायमान नहीं होती तो कुल भी नहीं चमकता। पत्नी को अलंकार, वस्त्र आदि से शोभा-सम्पन्न बनाने का यह कारण बताते हैं कि यदि वह इनसे कान्तिमती न हो तो पति को प्रसन्न नहीं कर सकती और पति को प्रसन्न न रखने से सन्तान नहीं होती। अतः सन्तानोत्पादन का वैवाहिक प्रयोजन पूरा करने के लिए पत्नी को कान्तिमती व शोभा सम्पन्न बनाना पति का कर्तव्य है। परिवार के उच्चतम आदर्श का चित्रण करते हुए मनु महाराज कहते हैं- **''जिस कुल में पति पत्नी से तथा पत्नी पति से सन्तुष्ट रहते हैं, वहाँ सदा अविचल कल्याण बना रहता है।''** ■

यजुर्वेद में गणतन्त्रात्मक शासन

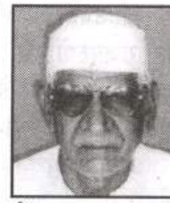

• **पं. शिवनारायण उपाध्याय**
७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी
कोटा (राज.)'
दूरभाष : ०७४४-२५०१७८५

सामान्यत: यह माना जाता है कि ऋग्वेद ज्ञान काण्ड, यजुर्वेद कर्म काण्ड, सामवेद उपासना काण्ड तथा अथर्ववेद विज्ञान काण्ड है। परन्तु वास्तव में यह पूर्ण सत्य नहीं है, प्रत्येक वेद में विविध विषयों पर वर्णन उपलब्ध है। यजुर्वेद में कर्मकाण्ड के अतिरिक्त गृहस्थ आश्रम के धर्म, शिक्षा व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, कृषि विज्ञान यज्ञ, विद्वानों के कर्तव्य और राजनीति आदि अनेक विषयों पर चर्चा हुई है। इस लेख में हम यह अध्ययन करेंगे कि यजुर्वेद में गणतन्त्रात्मक शासन के विषय में कहा गया है। हमारे देश में लम्बे समय तक गणतन्त्रात्मक शासन रहा है। भगवान बुद्ध के काल में भी कई गणतन्त्रात्मक राज्य थे। उनका स्वयं का जन्म लिच्छिवी गणतन्त्र के अन्दर ही हुआ था। इस विषय पर हम यजुर्वेद के विचार रख रहे हैं। यजुर्वेद अध्याय १८ मन्त्र संख्या २९ में तो केवल ईश्वर को सम्पूर्ण प्रजा का शासक माना गया है-

स्वर्देवाऽअगन्मामृताऽअभूम प्रजापतेः प्रजाऽअभूम वेट् स्वाहा।

पदार्थ- (देवा:) हे विद्वानों। जैसे हम लोग **(अमृता)** जन्म मरण के दुःख से रहित हुए **(स्व:)** मोक्ष सुख को **(आगन्म)** प्राप्त हो अथवा **(प्रजापतेः)** समस्त संसार के स्वामी जगदीश्वर की **(प्रजा:)** फलने योग्य प्रजा **(अभूम)** हों तथा **(वेट्)** उत्तम क्रिया और **(स्वाहा)** सत्य वाणी से युक्त **(अभूम)** हों वैसे तुम भी होओ।

क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि।
मा त्वा हिँसीन्मा मा हिँसीः। यजु. २०.१

पदार्थ **(क्षत्रस्य योनिरसि)** हे राज्य के देने वाले परमेश्वर। आप ही राज्य सुख के परम कारण हैं। **(क्षत्रस्य नाभिरसि)** आप ही राज्य के जीवन हेतु में तथा क्षत्रिय वर्ण के राज्य के कारण और राज्य के प्रबंध कर्ता हैं। हमें भी ऐसा ही कीजिए। **(मा त्वा हिंसी न्मा हिँसी)** हे जगदीश्वर। सब प्रजा आपको छोड़कर किसी दूसरे को अपना राजा कभी न माने और आप भी हमें कभी मत छोड़िए।

किन्तु आप और हम लोग परस्पर सदा अनुकूल वर्तें।
ऋग्वेवादि भाष्य भूमिका स्वामी दयानन्द सरस्वती, पृष्ठ २२८-२२९

इसी प्रकार स्वामी दयानन्द यजुर्वेद अध्याय ९ मन्त्र संख्या २१ क भावार्थ में लिखते हैं- मैं ईश्वर सब मनुष्यों को आज्ञा देता हूँ कि तुम लोग मेरे तुल्य धर्म युक्त, गुण कर्म और स्वभाव वाले पुरुष को ही प्रजा होओ अन्य किसी क्षुद्राशय पुरुष की प्रजा होना कभी स्वीकार मत करो।

फिर यजुर्वेद अध्याय ६ मन्त्र संख्या २ के भावार्थ में स्वामी दयानन्द लिखते हैं- प्रजाजनों के स्वीकार किए बिना राजा राज्य करने के योग्य नहीं होता। किसी उत्कृष्ट गुण युक्त व्यक्ति को प्रजा राजा मानकर उसे कर चुकाए।

देवीरापोऽअपां नपाद्यो वऽर्म्मिर्हविष्यऽइन्द्रियावान् मन्दितमः।
तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भागस्थ स्वाहा।। यजु. ६.२७.

पदार्थ- हे **(आपः)** श्रेष्ठ गुणों से व्याप्त **(देवीः)** शुभ कर्मों से प्रकाशमान प्रजा लोगों। तुम राजसेवी **(स्थ)** हो **(शुक्रपेभ्यः)** शरीर और आत्मा के पराक्रम के रक्षक **(देवेभ्यः)** दिव्य गुण युक्त विद्वानों के लिए **(येषाम्)** जिन **(वः)** तुम्हारा बली रूप विद्वानों का **(यः)** जो **(अपाम् नयात्)** जलों के नाश रहित स्वाभाविक **(ऊर्मिः)** जल तरंग के समान प्रजा रक्षक **(इन्द्रियावान्)** जिसमें प्रशंसनीय इन्द्रियाँ होती हैं और **(मन्दितमः)** आनन्द देने वाला **(हविष्यः)** भोग के योग्य पदार्थों से निष्पन्न **(भागः)** भाग हैं वे सब तुम (तम्) उसको **(स्वाहा)** आदर के साथ ग्रहण करो जैसे राजादि सम्यजन **(देवत्रा)** दिव्य भोग देते हैं वैसे तुम भी उनको आनन्द **(दत्त)** देओ।

भावार्थ- समाजजनों को यह उचित है कि आपस में सम्मति कर किसी उत्कृष्ट गुण युक्त सभापति को राजा मानकर राज्य पालन के लिए कर देकर न्याय को प्राप्त हों।

यजुर्वेद अध्याय १० मन्त्र संख्या २, ३ तथा ४ में राष्ट्रध्यक्ष के चुनाव का वर्णन है। इन मन्त्रों में राष्ट्राध्यक्ष के लिए आवश्यक गुणों का वर्णन करते हुए अपने में उन गुणों का होना बताते हुए मत उसको दिए जाने का आग्रह करता है।

वृष्णाऽऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मेदेहि स्वाहा वृष्णाऽर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि।
वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि।। -यजु. १०.२

भावार्थ- इस मन्त्र में स्पष्ट कहा गया है कि आप अपने राष्ट्राध्यक्ष का चुनाव कर रहे हैं, राष्ट्र की रक्षा का भार उसे देने वाले हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि मुझे राष्ट्राध्यक्ष के पद हेतु चुन लें। फिर राष्ट्राध्यक्ष के लिए उम्मीदवार में दो गुणों **(वृष्ण)** सुख के वर्षाने वाला तथा **(वृषसेनः)** श्रेष्ठ सेनापति का होना आवश्यक है और ये दोनों गुण मुझ में हैं इसलिए राष्ट्र का पालन मुझे दे दें।

फिर तीसरे मन्त्र में भी इसी प्रकार का वर्णन है-

अर्थेत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं में दत्त स्वाहार्थेत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तौजस्वती स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहौजस्वती स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्ताप: परिवाहिणी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहाप: परिवाहिणी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तापां पतिरसि राष्ट्रदा राष्ट्र मे देहि स्वाहाऽयां पतिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रमुमष्मै देह्यपां गर्भोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रं में देहि स्वाहाऽपां गर्भोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि।

भावार्थ- इस मन्त्र में भी प्रत्याशी ने राष्ट्राध्यक्ष पद के लिए निम्न गुणों का होना आवश्यक बताते हुए और स्वयं में इन गुणों का धारणकर्ता होना बताते हुए अपने लिए मत दिए जाने की याचना की है। **अर्थेत** (पदार्थ विद्या का ज्ञाता), **अमुष्मै** (वीर ब्रह्मचारी), **अपाम्** (जलाशयों का रक्षक) मन्त्र में मत देने की प्रार्थना वर्तमान् राष्ट्राध्यक्ष की पत्नी से की गई है अत: उसके

गुणों का वर्णन भी किया गया है।

चौथा मन्त्र तो इतना बड़ा है कि उसका भाष्य ही एक लेख हो जाए। मन्त्र संख्या १८ के भाष्य में स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं–

जो उपदेशक और राजपुरुष प्रजा की उन्नति चाहे तो प्रजा के मनुष्य राजा और राजपुरुषों की उन्नति करने की इच्छा क्यों न करें जो राजपुरुष और प्रजापुरुष वेद और ईश्वर की आज्ञा को छोड़कर अपनी इच्छा के अनुकूल प्रवृत्त होवे तो उनकी उन्नति का विनाश क्यों न होवे?

यजुर्वेद अध्याय १० मन्त्र संख्या ३३ राजा की तुलना सिंह वन से की गई है। मन्त्र के भावार्थ में स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं, दुष्टों से श्रेष्ठों की रक्षा के लिए राजा होता है। राज्य की रक्षा के बिना किसी चेष्टावान नर की कार्य में निर्विघ्न प्रवृत्ति कभी नहीं हो सकती और न प्रजाजनों के अनुकूल हुए बिना राजपुरुषों की स्थिरता होती है। इसलिए वन के सिंहों का सम्मान परस्पर सहायी होकर सब राजा और प्रजा के मनुष्य सदा आनन्द में रहे।

फिर यजुर्वेद अध्याय ३३ मन्त्र संख्या १९ में राष्ट्राध्यक्ष को गणपति के रूप में रखकर उसके अधिकार एवं कर्तव्यों का वर्णन हुआ है।

गणानां त्वा गणपति हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति हवामहे निधिनां त्वानिधिपतिं हवामहे वसो मम आहमजानिगर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।यजु. २३.१९

भावार्थ– हे राष्ट्रपति महोदय। हम लोग **(गणनाम्)** गणों के मध्य **(गणपतिम्)** गणों के स्वामी **(त्वा)** आपको **(हवामहे)** स्वीकार करते **(प्रियाणाम्)** अतिप्रिय व्यक्तियों के बीच **(प्रियपतिम्)** प्रिय व्यक्तियों के पालक **(त्वा)** आपकी प्रशंसा करते **(विधिनाम्)** विद्या, धनादि पदार्थों की पुष्टि करने वालों के मध्य **(निधिपतिम्)** विद्या, धनादि पदार्थों की रक्षा करने वाले **(त्वा)** आपको **(हवामहे)** स्वीकार करते हैं। हे **(वसो)** राष्ट्राध्यक्ष जिस आपके शासन में सब प्राणी बसते हैं वह आप **(मम)** मेरे न्यायाधीश बनिये! जिस **(गर्भधम्)** गर्भ के समान पूरे देश को अपने गर्भ में धारण करने वाले **(त्वम्)** आप **(आ अजासि)** जन्मादि दोष रहित ठीक प्रकार से प्राप्त होते हैं उस **(गर्भधम्)** देश के स्वामी आपको **(अहम्)** मैं **(आ अजानि)** अच्छे प्रकार जानूं।

भावार्थ– इस मन्त्र में राष्ट्राध्यक्ष के निम्न गुणों का वर्णन हुआ है।

वह गणों का स्वामी होता है। वह राष्ट्र का प्रथम पुरुष कहलाता है। अतः वह सर्वप्रिय होता है। राष्ट्र की सम्पूर्ण भूमि, खानों आदि का वही स्वामी माना जाता है। सभी संवैधानिक पदों पर नियुक्तियाँ उसी के आदेश से होती हैं। राज्य का बजट भी उसी के स्वीकारने के बाद काम में आता है। वह सम्पूर्ण राष्ट्र के पिता के समान होता है।

यजुर्वेद में राष्ट्र गीत भी दिया गया है, जो इस प्रकार है–

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइष व्योऽति व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णु यथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे– निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्। यजु. २२.२२

इस प्रकार हमने देख लिया है कि यजुर्वेद में गणतन्त्र का वर्णन हुआ है। इतिशम्। ■

आर्य समाज कल-आज और कल

महर्षि दयानन्द और आर्य समाज समग्र क्रान्ति के अग्रदूत थे। अछूतोद्धारक, पाखण्ड का खण्डन करने वाले, गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को बढ़ाने वाले, जाति प्रथा के विरोधी, सनातन संस्कारों के समर्थक, भूत-प्रेत, डाकिनि– शाकिनि, फलित ज्योतिष को गलत बताने वाले, एक ईश्वर की पूजा और सर्वव्यापक का उपदेश देने वाले व वेदोद्धारक, वेदों का सच्चा आदेश देने वाले, गौ का पालन करना, गौशाला खोलना और सबसे बड़ा विचार भारत देश की प्राचीन संस्कृति के गौरवपूर्ण इतिहास को सामने लाते हुए कहा कि माता–पिता के समान सुख देने वला विदेशी शासन भी हमको नहीं चाहिए। स्वदेशी शासन ही सर्वश्रेष्ठ होता है। स्त्री शिक्षा के लिए बालिका गुरुकुल खुलवाए, स्त्रियों को समान अधिकार, विधवा विवाह के समर्थक रहे, हिन्दी और संस्कृत के प्रबल समर्थक रहे बाल विवाह, बहुविवाह, अनमेल विवाह का विरोध किया आदि अनेकानेक सुधार देश में किए।

लेकिन आज देखते हैं कि आर्य समाज खो गया है। उसमें शिथिलता आ गई है, दो–दो, तीन–तीन धड़े सार्वदेशिक व प्रांतीय सभाओं में हो गए हैं। आज कोई भी समस्या हो देश में, समाज का कोई लेना–देना नहीं है। देश में आज बहुत सारी समस्याएँ हैं। क्या समाज को इसको हल करने के लिए सुझाव नहीं देने चाहिए? आज देश में २०१९ का लोकसभा चुनाव हो रहा है। क्या आर्य समाज को एकमत होकर, निर्णय लेकर संगठित होने का प्रचार नहीं करना चाहिए। महर्षि दयानन्द के वैदिक भाष्य को सरकारी संस्थाओं में मान्यता नहीं दी गई है क्यों? पाखण्ड, चोरी, हत्याओं, अपहरण, बलात्कार, गौहत्या, नारियों पर अत्याचार, भ्रष्टाचार आदि घटनाएँ दिनों–दिन बढ़ रही हैं। शासन व्यवस्था में अराजकता आदि कई समस्याएँ हैं। आर्य समाज को इन समस्याओं पर अपना सुझाव देकर सार्वजनिक सुधार में योगदान करना चाहिए। केवल हवन, सत्संग तक सीमित न रहकर देश की समस्याओं के निराकरण के लिए भी योगदान देना चाहिए। जैसा कि पहले किया करती थी। अब समय आ गया है। आर्य समाज में नई चेतना जागृत करके देश केसामने आना चाहिए। अगर इस पर विचार नहीं किया तो आने वाले समय में आर्य समाज का नाम लेने वाला कोई नहीं रहेगा। आर्य समाज में शास्त्रार्थ, पाखण्ड का खण्डन, आर्यवीर दल का प्रचार, गुरुकुलीय शिक्षा का प्रचार आदि कार्यों में शिथिलता आ गई है। जिसके कारण आर्य समाजों में उपस्थिति घटती जा रही है। केवल बड़े उत्सवों– सम्मेलनों में ही उपस्थिति देखने को मिलती है। दिनांक १४.२.२०१९ को कश्मीर में आतंकवादी हमले में ४४ जवान शहीद हो गए हैं। देश में छुपे हुए गद्दारों के कारण इस तरह की घटनाएँ बढ़ रही हैं। अब समय आ गया है इनको मुँहतोड़ कर जवाब देने का। अब मौका है कश्मीर के पी.ओ.के. को अपने कब्जे में लेने का और कश्मीर में ३७० धारा हटाने का। अगर अब भी हिम्मत नहीं दिखाई तो देश को गुलाम होने से कोई नहीं रोक सकता।

● **नरसिंह सोनी आर्य**
डागा सेठियो मोहल्ला, बीकानेर (राजस्थान)
चलभाष : ७०१४८०८४९९

आज भारत वर्ष की सबसे बड़ी समस्या है कुशल नेतृत्व की, महर्षि दयानन्दजी सरस्वती की दृष्टि में

राजनीति में कैसे व्यक्तियों का नेतृत्व हो

● पं. उम्मेदसिंह विशारद
वैदिक प्रचारक,
गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तरखण्ड),
चलभाष : ९४११५१२०१९, ९५५७६४१८००

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी भारत वर्ष में अखण्ड राज्य व राजधर्म वेदानुकूल व मनुस्मृतिनुसार धार्मिक सामाजिक व उच्च राजनैतिक नेतृत्व चाहते थे। इसीलिए उन्होंने जब महाराजा उदयपुर के स्थान पर भाद्रपद शुक्ल पक्ष संवत् १९३९ में अपना क्रान्तिकारी अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का लेखन शुभारम्भ किया और उसमें एक विषय छठा समुल्लास राजधर्म व राज्य नेतृत्व कैसा हो, इस पर लिखा है।

सदियों की गुलामी के बाद जो भारत को स्वतन्त्रता मिली और भारत का नेतृत्व भारतीयों के हाथ में आ गया, भारत का संविधान बना वह वेदानुकूल होता तथा वैदिक विद्वानों के नेतृत्व में प्रथम भारत वर्ष की सरकार बनती तो आज भारत में जो सबसे बड़ी भ्रष्ट राज नेतृत्व की गम्भीर समस्या बनी हुई है और चाहकर भी उच्च विचारों वाले विद्वान विवश होकर मूक दर्शक बने हुए हैं, उनका आत्मिक श्राप भारत की राजनीति को खाए जा रहा है।

नोट : इस लेख में महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में राजा और सभासदों का चरित्र का उल्लेख किया है। हम वर्तमान संविधान के अनुसार राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री व मुख्यमन्त्रियों को राजा व विधायकों को सभासद मानकर लेख में संकेत कर रहे हैं।

ऋणि राजान विद थे पुरूणि परि विश्वानि भूषथः संदासि। (ऋ., स.प्र.)

ईश्वर उपदेश करता है कि राजा और प्रजा के पुरुष मिलके सुख प्राप्ति और विज्ञानवृद्धि कारक राजा (नेता) और प्रजा के सम्बन्ध रूप व्यवहार में तीन सभा अर्थात् विद्यार्यसभा, धर्मार्य सभा, राजार्य्य सभा नियत करके बहुत प्रकार के समग्र प्रजासम्बन्धि मनुष्यादि प्राणियों को सब ओर से विद्या स्वातन्त्रय, धर्म, सुशिक्षा और धनादि से अलंकृत करें।

नोट : भारत का धर्म ग्रन्थ वेद है और भारत में प्रचलित अनेक मत होते हुए भी वेद सर्वमान्य है। भारत को स्वस्थ नेतृत्व हेतु न्यायकारी, सदाचारी, नि:स्वार्थी, सेवार्थी, पुरुषार्थी, ईमानदार नेताओं की कमी पूरी करने के लिए प्रत्येक जिले में एक पृथक राजनीति कॉलेजों की सुथापना की जाए जिसमें पाठ्यक्रम केवल वेदानुसार राजनीतिज्ञ विषय हो और प्रवेश की शर्त संस्कृत व अंग्रेजी से इंटर, बी.ए. या एम.ए. हो और आयु सीमा २५ वर्ष से ४० वर्ष तक की हो और २ वर्ष का पाठ्यक्रम हो तथा उन राजनीति कॉलेजों से उत्तीर्ण विद्यार्थियों को ही चुनाव लड़ने का अधिकार दिया जाए तो भविष्य में भारत वर्ष में राजनीति में आमूलचूल परिवर्तन आ सकता है।

स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीलू उत प्रतिष्कमे। (ऋ., स.प्र.)

अर्थात् : महाविद्वानों को विद्यासभा अधिकारी, धार्मिक विद्वानों को धर्मसभा अधिकारी, प्रशंसनीय धार्मिक पुरुषों को राजसभा का प्रतिरूप मान के सब प्रकार से उन्नति करें। तीनों सभाओं की सम्मति से राजनीति के उत्तम नियम और नियमों के अधीन सब लोग वर्तें, सबके हितकारक कामों में सम्मति करें। सर्वहित करने के लिए परतन्त्र और धर्मयुक्त कार्यों में अर्थात् जो-जो जिनके काम हैं, उन-उन में स्वतन्त्र रहें।

इन्द्रा– २ निलयमार्काणामग्नेश्च वरूणस्यच। (मनु, सत्यार्थ प्रकाश)

अर्थात् : वह समेश राजा इन्द्र अर्थात् विद्युत के समान शीघ्र ऐश्यर्वकर्ता वायु के समान सबके प्राणवत प्रिय और हृदय की बात जानने हारा यमपक्षपातरहित न्यायाधीश के समान वर्तने वाला सूर्य के समान न्याय धर्म विद्या का प्रकाशक अन्धकार अर्थात् अविद्या,. अन्याय का निरोधक, अग्नि के समान दुष्टों को भस्म करने वाला वरुण अर्थात् बाँधने वाले के सदृश दुष्टों को अनेक प्रकार से बाँधने वाला चन्द्र के तुल्य श्रेष्ठ पुरुषों को आनन्ददाता धनाध्यक्ष के समान कोषों को पूर्ण करने वाला सभापति होवे।

सत्यार्थ प्रकाश के राजधर्म विषयक में सभापति के गुण कैसे होने चाहिए

- वही प्रजा का शासनकर्ता सब प्रजा का रक्षक, सोते हुए प्रजास्थ मनुष्यों में जागता है, इसीलिए बुद्धिमान लोग दण्ड ही को धर्म कहते हैं।
- जो दण्ड अच्छे प्रकार विचार से धारण किया जाए तो वह सब प्रजा को आनन्दित कर देता है और जो बिना विचार चलाया जाय तो सब ओर से प्रजा का विनाश कर देता है।
- जो उस दण्ड को चलाने वाला सत्यवादी विचार के करने हारा, बुद्धिमान धर्म-अर्थ और काम के सिद्ध करने से पण्डित राजा है, उसी को दण्ड का चलाने हारा विद्वान लोग कहते हैं।
- जो आप्त पुरुषों के सहाय विद्या, सुशिक्षा से रहित विषयों में आसक्त मूढ़ है, वह न्याय से दण्ड को चलाने में समर्थ कभी नहीं हो सकता।
- जो पवित्र आत्मा सत्याचार और सत्पुरुषों का संगी यथावत् नीति शास्त्र के अनुकूल चलाने हारा श्रेष्ठ पुरुषों के सहाय से युक्त बुद्धिमान है वही न्यायरूपी दण्ड के चलाने में समर्थ होता है।
- सब सेना और सेनापतियों के ऊपर राज्याधिकारी दण्ड देने की व्यवस्था के सब कार्यों का अधिपात्य और सबके ऊपर वर्तमान सर्वाधीश राज्याधिकार इन चारों अधिकारों में सम्पूर्ण वेद शास्त्रों में प्रवीण पूर्ण विद्या वाले धर्मात्मा जितेन्द्रिय सुशीलजनों को स्थापित करना चाहिये अर्थात् मुख्य सेनापति, मुख्य राज्याधिकारी, मुख्य न्यायाधीश, प्रधान और राजा ये सब विद्याओं में पूर्ण विद्वान होने चाहिये।

- इसलिए तीनों अर्थात् विधानसभा, धर्मसभा और राज्य सभाओं में मूर्खों को कभी भर्ती न करें। किन्तु सदा विद्वान और धार्मिक पुरुषों का स्थापन करें।
- राजा और राजसभा के सभासद तब हो सकते हैं जब वे चारों वेदों की कर्मोपासना, ज्ञान विद्याओं के जानने वालों से तीनों विद्या सनातन दण्ड नीति, न्याय विद्या, आत्मविद्या, अर्थात् परमात्मा के गुण कर्म स्वभाव रूप को यथावित जानने रूप ब्रह्मविद्या और लोक से वार्ताओं का आरम्भ (कहना और पूछना) सीखकर सभासद व सभापति हो सकें।
- इससे सभापति को उचित है कि नित्यप्रति उन राजकर्मों में कुशल विद्वान मन्त्रियों के साथ सभा करके किसी से (सन्धि) मित्रता, किसी से (विग्रह) विरोध, स्थान, स्थिति, समय को देखकर चुपचाप रहना, अपने राज्य की रक्षा करके बैठे रहना (समुदायम) जब अपना उदय अर्थात् वृद्धि हो तब दुष्ट शत्रु पर चढ़ाई करना (गुप्तिम) मूल कोश आदि की रक्षा (लब्ध प्रशमनानि) जो–जो देश प्राप्त हों, उस–उस में शान्ति स्थापना उपद्रव रहित करना इन छः गुणों का विचार नित्य प्रति किया करें।
- विचार से करना कि उन सभासदों का पृथक–पृथक अपना–अपना विचार और अभिप्राय को सुनकर बहुपक्षानुसार कार्यों में जो कार्य अपना और अन्य का हितकारक हो, वह करने लगना।
- राज्य कार्यों में विविध प्रकार के विद्वान अध्यक्षों का सभा नियम करे, इनका यही काम है। जितने–जितने जिस काम में राजपुरुष हों वे नियमानुसार वर्त कर यथावत् काम करते हैं या नहीं, जो यथावत् करें तो उनका सत्कार और जो विरोध करें तो उनको यथावत दण्ड दिया करें। सदा जो राजाओं का वेद प्रचार रूप अक्षय कोष है उसके प्रचार के लिए जो कोई यथावत् ब्रह्मचर्य से वेदादि शास्त्रों को पढ़कर गुरुकुल से आवे, उसका सत्कार राजा और सभा यथावत् करे तथा उन सबका भी जिनके पढ़ाए हुए विद्वान होवे। ऐसा करने से राज्य में विद्या की उनति होती है।

आत्म निवेदन

ये थोड़े से सांकेतिक रूप में नेतृत्व करने वाले सभासद का चरित्र कैसा होना चाहिये, प्रस्तुत किया है। विस्तार के लिए सत्यार्थ प्रकाश का छठवाँ समुल्लास पढ़िये।

क्या आर्य समाज ही देश को वेदानुकूल कुशल नेतृत्व दे सकता है? जी हाँ। पर कैसे?

- आर्य समाज धार्मिक संगठन के अतिरिक्त राष्ट्रीय उत्थान का संगठन भी है और इतिहास प्रमाण है कि आर्य अनुयायियों ने राष्ट्र हित हेतु सर्वाधिक अपने प्राणों की आहूतियाँ दी थी।
- आज आर्य समाज को जागना होगा और अपने मूल लक्ष्य की ओर बढ़ना होगा। हम आगे कैसे बढ़ें? इस पर विचार करते हैं।
- अविलम्ब आर्य नेतृत्वों को अपनी महत्वाकांक्षाएँ और दम्भ को छोड़ना पड़ेगा, करके आर्य जगत् को एक सर्वमान्य सार्वदेशिक सभा का गठन करना होगा।
- आर्य जगत् के राज्यों में जो दो–दो प्रतिनिधि सभा चल रही है सभी को भंग करके एक–एक प्रतिनिधि सभा बनानी होगी।
- आर्य जगत् के जो न्यायालयों में मुकदमे चल रहे हैं वह सभी समाप्त करने होंगे। धर्मार्य सभा का गठन करना होगा।
- आगामी २०१९ के लोकसभा के चुनावों में सभी गुरुकुलों से छाँटकर विद्वान स्नातकों को समस्त आर्य जगत् सहयोग से चुनाव मैदान में अपने आर्य नेतृत्वों के माध्यम से चुनाव लड़ाए।
- भारत सरकार से माँग करे कि प्रत्येक प्रान्त में राजनीति कॉलेजों की स्थापना की जावे और उसमें प्रवेश की गुणवत्ता इन्टर से एम.ए. तक उत्तीर्ण अभ्यार्थी की हो, आयु २५ से ४० वर्ष तक हो और केवल भविष्य में उन्हीं को सरकार चुनाव का टिकट दे जो राजनीतिक कॉलेजों से उत्तीर्ण हों। सारा आर्य जगत् एक स्वर से माँग करे कि गुरुकुलों के स्नातकों को प्राथमिकता दी जावे। यदि ऐसा हो जाये तो कालान्तर में आर्य समाज भारत को कुशल नेतृत्व देने के लिए मील का पत्थर साबित होगा और महर्षि दयानन्दजी का स्वप्न पूरा होगा। ■

भगवान विश्वकर्माजी की ज्ञान-गंगा : वेद/सुखदायक

भगवान विश्वकर्माजी के हाथ में वेद को दिखाया गया है। अर्थात् हम विश्वकर्मा रूप गुणीजन विश्व धरोहर वेद भगवान की सार्थक पहचान जानकर, इसके विज्ञान को जानें और निरन्तर नदियों के जल की धारा को संचित क्षेत्रों में ला–ला कर अधिक खेती के कार्यों की उपयोगिता में लावें। ऐसा आदेश ऋग्वेद से प्राप्त हुआ। अवलोकनार्थ प्रस्तुत हेतु उपलब्ध है।

ओ३म् शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु....शं नस्त्वष्टाग्नाभिरिह।

–ऋग्वेद ७/३५/६

अर्थ : दिव्य गुणयुक्त सूर्य हमें सुखदायक हो, उत्तम गुण वाला जल सूर्य की किरणों के साथ हमें सुखदायी हो, जीवों की अभिलाषा पूरी करने वाला, ज्ञानदाता परमेश्वर दुष्टों को दण्ड देने, गुणों के साथ हमारे लिए सुखकर हो, विश्वकर्मा जगदीश हमारी प्रार्थना द्वारा हमें शान्तिदायक हो।

निर्मल नीर निरोगी होवे, मान सुख बरसाये।
विश्वकर्मा की ज्ञान–गङ्गा में गोता सदा लगावे।।

इसी अध्याय में ७/३५/१२ के मंत्रांश पर आगे सविस्तार पूर्वक समझाया गया है। अवलोकनार्थ प्रस्तुत है। अर्थ है : सत्य के पालन करने हारे हमें सुखदायक हो, उत्तम घोड़े और गौवें हमें सुखदायक हों, श्रेष्ठ बुद्धिवाले विज्ञानी जन, बड़े–बड़े काम करने वाला, शिल्प क्रिया के चतुर जन हमारे लिए सुख देने वाले हों। यज्ञादि के उत्तमोत्तम कार्यों में रक्षक माता–पितर हमें सुखकारी हों। जो कि विद्वान विज्ञानी, आविष्कारक, सुख देने वाले भौतिक जगत् में, उत्तम–उत्तम योजनाओं के निर्माणकर्ता, विश्वकर्मा के मानस पुत्र जो सर्वत्र सबका कल्याण चाहते हैं, सदा सुख की वर्षा करें।

तथाकथित जन्मना ब्राह्मणवाद की गिरफ्त से बाहर निकलें

• आचार्य रामगोपाल सैनी

फतेहपुर शेखावाटी, जनपद : सीकर (राज.)

चलभाष : ९८८७३९३७७३, ७७९०८०३४०८

हजारों सालों से भारत में जन्मना ब्राह्मणवाद ने पूरे हिन्दू समाज को बुरी तरह जकड़ रखा है। हजारों तरह के जाल उसने लोगों से पैसा झटकने के लिए बिछा रखे हैं। मजदूर, नौकरीपेशा, किसान, व्यापारी आदि बहुत मशक्कत के बाद कुछ धन कमा पाते हैं। तथाकथित जन्मना किन्तु ब्राह्मणवादी लोग, घरेलू पुरोहित, पण्डित, मन्दिर का महन्त, पण्डा-पुजारी, ज्योतिषी, कुलगुरु, कथावाचक, मुहूर्त निकालने वाला, तीर्थों का पण्डा, पूजा-पाठ कराने वाला, गृहशान्ति करवाने वाला आदि अनेक रूप धारण कर मेहनतकशों की गाढ़ी मेहनत की कमाई को अपने वाग्जाल के द्वारा आसानी से झटक लेते हैं।

आम आदमी की ईश्वर, धर्म तथा शास्त्रों के प्रति श्रद्धा होती है। इस बात को ये लोग अच्छी तरह समझते हैं। इसी अंधश्रद्धा का फायदा उठाकर ये लोग धर्म की मनमानी व्याख्या श्रद्धालुओं के सामने प्रस्तुत कर उनकी पॉकेट की पूँजी निकलवा लेते हैं क्योंकि वर्तमान शिक्षा पद्धति में शास्त्रोक्त ज्ञान का अभाव होने से सामान्यजन अनभिज्ञ होता है।

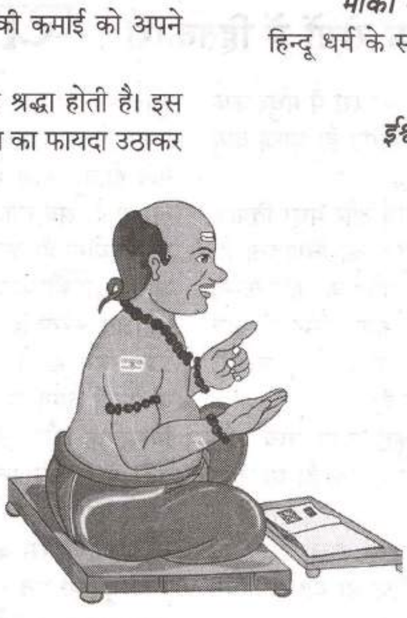

पण्डितों द्वारा ठगी के कुछ उदाहरण यहाँ दे रहे हैं- हमारे कुछ महान पूर्वज पुराने समय में हुए थे। उन्होंने मानवता की सेवा के महान कार्य किये थे, किन्तु १०० वर्षों की आयु प्राप्त हो जाने पर वे सब लोग दिवंगत हो गये। किन्तु पण्डित लोगों ने उन लोगों की मूर्तियाँ बनवा ली और उन मूर्तियों की पूजा लोगों से करवाकर उन पर धन, वस्त्र, सोने-चाँदी के छत्र आदि चढ़वाकर ठगी कर रहे हैं जबकि मन्दिरों में मात्र प्रतिमाएँ हैं, देवी-देवता नहीं।

इसी प्रकार किसी भी तीर्थ पर कोई देवी-देवता नहीं होता है जबकि विभिन्न तीर्थों पर जाने-आने में तथा वहाँ चढ़ाने में भारत के लोग साल भर में अरबों-खरबों रुपया खर्च कर देते हैं। इन रुपयों को गरीबों, जरूरतमन्दों की सहायता, शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार में खर्च किया जाये तो कमजोर वर्ग का उत्थान हो सकता है जबकि इस अपार सम्पदा को बड़े-बड़े पण्डे-पुजारी अपने एयरकण्डीशन्ड निवास भवन बनवाने, चमचमाती कारों में घूमने और शानौ-शौकत से जीने में करते हैं। समय व्यर्थ नष्ट होता है सो अलग।

धर्म तथा ईश्वर भारतीय लोगों के **'सॉफ्ट कॉर्नर'** हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती, सन्त कबीर, सन्त रैदास, गुरु नानक, महात्मा फुले आदि ने लोगों को खूब समझाया है कि मात्र मन्दिरों-मस्जिदों में ईश्वर-देवता नहीं हैं। वह सर्वत्र विद्यमान है। ईश्वर की कोई प्रतिमा नहीं होती है। कोई भी प्रतिमा देवी-देवता नहीं होती है। ईश्वर निराकार है, उसकी कोई प्रतिमा नहीं बना सकता है। वह सर्वव्यापी है। उसका ध्यान आप अपने घर में ही बैठकर करें।

सन्त कबीर ने लिखा है-

ना मैं मन्दिर, ना मैं मस्जिद, ना मैं काबा कैलाश में।
मोको कहाँ ढूँढे रे बन्दे, मैं तो तेरे पास में।।

हिन्दू धर्म के सबसे बड़े ग्रन्थ वेद कह रहे हैं-

न तस्य प्रतिमा अस्ति।
ईश्वर की कोई प्रतिमा नहीं होती है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ईश्वर, धर्म तथा शास्त्रों की सही व्याख्या अपने ग्रन्थों में की है। उस व्याख्या को उनके ग्रन्थों से समझने की आवश्यकता है। हमें ईश्वर, धर्म तथा शास्त्रों में विश्वास करना है, उन्हें मानना है किन्तु वास्तव में ईश्वर, धर्म, शास्त्र आदि क्या हैं? इसे समझना चाहिये। हमको ठगबाजों द्वारा असली ईश्वर के स्थान पर नकली ईश्वर, देवी-देवताओं को पुजवाया जा रहा है। हमारे सामने नकली धर्म, नकली शास्त्र प्रस्तुत किये जा रहे हैं जबकि असली ईश्वर का स्वरूप आराधना विधि हमें नहीं सिखाई जा रही है।

वैदिक (हिन्दू) धर्म के सैकड़ों शास्त्रों में से वेद, ब्राह्मण आरण्यक, वेदाङ्ग, उपनिषद्, दर्शन, स्मृतियाँ आदि पचासों बड़े शास्त्रों में देवी-देवताओं का, मन्दिरों का, तीर्थों का, प्रतिमा पूजन का, अवतारों का उल्लेख नहीं है जबकि पुराण आदि छोटे मनगढ़न्त ग्रन्थों का बहुत बढ़-चढ़कर महिमामण्डन किया जा रहा है।

कथा श्रवण से आदमी बैकुण्ठ चला जाता है, वह सर्वपापों से मुक्त हो जाता है, पुण्य प्राप्त करता है, सब दुःखों से छुटकारा पा लेता है आदि बातों से लोगों को बहकाया जाता है। तीर्थों पर जाने से तथा वहाँ स्थित नदी, सरोवर, कुण्ड आदि में स्नान करने से पवित्र होता है, पाप मुक्त होता है, पुण्य मिलता है आदि बातों से भ्रमित किया जाता है।

आवश्यक है कि जन्मना अर्थात् जो ब्राह्मण, पुरोहित, पुजारियों के यहाँ जन्म लेने मात्र से ब्राह्मण, पुरोहित, पुजारी, महन्त बन गये हैं, जिन्हें शास्त्रोक्त ज्ञान नहीं है ऐसे तथाकथित ब्राह्मण, महन्तों तथा पण्डों-पुजारियों से दूर रहें। भेड़चाल में न फँसकर परम पिता परमात्मा प्रदत्त बुद्धि का सदुपयोग करें। इसी में अपनी, अपने परिवार तथा संसार की भलाई है। क्योंकि अन्धविश्वास, पाखण्ड, ठगी को रोकना भले मनुष्यों का कर्तव्य है तथा इनका प्रचार-प्रसार करना मूर्खों व धूर्तों को प्रिय है। ■

गतांक पृष्ठ ४२ से आगे...

यात्रा वृतान्त परमपिता परमात्मा की असीम तथा महती कृपा है...

९ मार्च को प्रातः मोदीनगर रेल स्थानक पर जवाई सा. श्री अर्जुन जी लेने आ गए। आपके निवास पर पहुँचकर परिजनों से कुशल क्षेम वार्ता उपरान्त स्नानादि से निवृत्त हो बिटिया भाग्यश्री तथा जंवाई सा. श्री अर्जुन जी के मुख्य यजमानत्व में देवयज्ञ किया। समधी श्री श्यामलालजी (दादाजी), श्री अशोक जी (पिताजी) तथा श्रीमती अनिता शर्मा (काकीजी) व सबके लाड़ले दुलारे चि. भव्य (भतीजा) भी यज्ञ में उपस्थित रहे। बिटिया की ननद के श्वसुर श्री गंगाराम जी शर्मा बैंगलौर से अपनी माताजी को अपने गाँव छोड़ने हेतु आए हुए थे। हमारे आगमन की सूचना प्राप्त होने पर आप भी भेंट करने आ गए। हम डॉ. श्रद्धानन्दजी के स्वास्थ्य समाचार लेने गए। वहाँ से लौटकर भोजनादि से निवृत्त हो अर्जुन जी के साथ मेरठ श्री दयानन्द जी शर्मा से भेंट करने गए। वापसी में यातायात बाधित होने से रात्रि को मोदीनगर पहुँचे। भोजनादि से निवृत्त हो वार्ता पश्चात् शयन किया।

दिनांक १० मार्च को प्रातः बिटिया भाग्यश्री को साथ लेकर मोदीनगर से प्रस्थान किया। रेल स्थानक मेरठ तक अर्जुन जी छोड़ने हेतु साथ आए। मेरठ से अमृतसर– इन्दौर द्रुतगति लौहपथ गामिनी में हमारे यात्रा टिकट आरक्षित थे। सहयात्री के रूप में हापुड़ का एक परिवार वृन्दावन जा रहा था तथा मुरैना निवासी दो बहनें निजामुद्दीन रेल स्थानक से शिवपुरी अपने मामा के यहाँ जाने के लिए बैठी। आप लोगों से वैदिक सिद्धान्त विषयक वार्ता हुई। आपको वैदिक संसार की प्रति देकर आर्य समाज के सत्संग में जाने तथा वैदिक साहित्य स्वाध्याय की प्रेरणा दी। रात्रि २.३० बजे इन्दौर पहुँचे।

दिनांक ११ से १३ मार्च तक मार्च माह की पत्रिका का त्रुटि निवारण कार्य तथा फरवरी मास का यात्रा वृतान्त व अन्य लेखन कार्य को सम्पन्न किया।

दिनांक १३ मार्च को झोकर के लिए इन्दौर– जबलपुर द्रुतगति रेल से १८.४० पर मक्सी के लिए प्रस्थान किया। मक्सी रेल स्थानक पर श्री रमेशचन्द्र जी पाटीदार (इन्द्रिया) लेने आ गए। आपके साथ ग्राम झोकर स्थित आपके निवास पर पहुँचकर संध्या, भोजन, वार्ता आदि उपरान्त शयन किया।

दिनांक १४ मार्च को स्नानादि से निवृत हो श्री पुरालाल जी देवड़ा, श्री रमेशचन्द्र जी पाटीदार (वकील सा.), श्री दयाराम जी सिसौदिया के निवास पर पहुँचकर आप बन्धुओं से भेंट वार्ता की।

झोकर के समीप ग्राम बैसरापुर के श्री माँगीलाल जी विश्वकर्मा सेवानिवृत्त शिक्षक का निधन हो जाने पर आयोजित पगड़ी रस्म में हम सभी श्री रमेशचन्द्रजी 'अधिवक्ता' महोदय के चार पहिया वाहन द्वारा पहुँचे। सामाजिक बन्धुओं से भेंट तथा वैदिक सिद्धान्तों से जुड़ने, वैदिक संसार की प्रति देकर स्वाध्याय करने सम्बन्धी वार्ता हुई। दिवंगत आत्मा के प्रति मौन रखकर श्रद्धासुमन अर्पित करवाने का दायित्व निवर्हन किया। भोजनादि से निवृत्त हो हमने प्रस्थान किया। श्री रमेशचन्द्र जी ने सह्रदयता परिचय देते हुए मुझे मक्सी रेल स्थानक तक पहुँचा दिया। दोपहर २ बजे कोटा–इन्दौर (द्वारा रूठियाई) लौहपथ गामिनी से इन्दौर लौट आया।

दिनांक १५ मार्च को प्रातः समाचार प्राप्त हुआ कि श्री रमेशचन्द्र जी शर्मा (बोस) निवासी बड़वानी का निधन हो गया है। प्रातः ९ बजे इन्दौर से बस द्वारा प्रस्थान कर दोपहर दो बजे बड़वानी पहुँचा। अन्तिम संस्कार के पश्चात् भानजी श्रीमती निर्मला शर्मा के यहाँ बहन प्रमिला शर्मा तथा अन्य परिजनों को मृत्यु तथा मानव जीवन विषयक वैदिक सिद्धान्तों से अवगत करवाया व पारिवारिक वार्ता पश्चात् शयन किया।

दिनांक १६ मार्च को प्रातः बहन प्रमिला के साथ सेन्धवा के लिए बस द्वारा प्रस्थान किया। बस के सेवक (क्लीनर) की एक परिचित यात्री से अपनी पत्नी के कान दर्द उपचार सम्बन्धी वार्ता हो रही थी। यात्री ने उसे परामर्श दिया कि बड़ौदा ले जाओ। मैंने उसे मना किया क्योंकि साधारण आय वाले व्यक्ति का लगभग २५० किलोमीटर दूर जाकर उपचार करवाने में समय व धन दोनों अत्यधिक उपयोग होता है तथा उपचार हेतु अनेक बार जाना होता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति पूर्णरूपेण उपचाार नहीं करवा पाता है। अतः निकटवर्ती शासकीय चिकित्सालय में उपचार करवाना अधिक उपयुक्त होगा, ऐसा मेरे द्वारा उसे परामर्श दिया गया।

वार्ता के समय मैंने ध्यान दिया कि बस का सेवक मुँह में कुछ चबा रहा है। मैंने उससे पूछा क्या तुम पाउच (तम्बाकू) खा रहे हो? उसने प्रत्युत्तर में हाँ कहा। मैंने उसे सचेत किया कि अभी तो पत्नी के उपचार के लिऐ व्यथित हो, अगर तुम्हें कुछ हो गया तो बताओ क्या होगा? वार्ता का विस्तार होकर समीप के अन्य और यात्री भी सम्मिलित हो गए।

समीप बैठे निजी महाविद्यालय के एक युवा प्राध्यापक भी मुँह में तम्बाकू दबाए बैठे थे। उन्हें भी चेताया, धर्म का वास्तविक स्वरूप, मानव जीवन जीने की शैली तथा मर्म समझाया। वैदिक संसार की प्रतियाँ देकर सद् साहित्य स्वाध्याय मानव जीवन हेतु अत्यावश्यक बता कर स्वाध्याय की प्रेरणा दी। लगभग डेढ़–दो घण्टा वार्ता से अनेक सहयात्री प्रभावित तथा अभिभूत हुए। **यह सब परमपिता परमेश्वर की कितनी असीम तथा महती कृपा है कि जब मैं अपने अतीत की ओर देखता हूँ तो पाता हूँ कि कितना अज्ञानता का अन्धकार, दुर्गुण–दुर्व्यवसनों की भेंट चढ़ा हुआ अतीत था मेरा** और आज वही व्यक्ति अन्यों को उन दुर्गुण–दुर्व्यसनों के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक कर रहा है,मानव जीवन की महत्ता बताते हुए इसका सदुपयोग कर भरपूर आनन्द लेने व जीवन को सफल बनाने की प्रेरणा दे रहा है। यह परमपिता परमात्मा की कृपा नहीं तो और क्या है?

सेन्धवा पहुँचने पर बहन के देवर श्री जवाहर जी शर्मा (बबलू जी) से भेंटवार्ता हुई। आपने आग्रह किया कि खेत पर आरा मशीन लगाई है, चलो देखकर आते हैं। मैंने मना किया कि मेरी कोई रूचि नहीं है। उन्होंने पुनः अनुरोध किया, चलो ज्यादा समय नहीं लगेगा, अभी आते हैं। हम चल दिए वर्षों बाद खेत पर जाना हुआ। वहाँ देखा लकड़ी के विशालकाय ठूंठ पड़े हुए हैं। अभी–अभी काम जमाया है। मशीनें खुले आकाश में लगी हैं। बबलूजी के साले श्री अनूप जी गरोठ से ३–४ कामगारों को साथ लेकर आए थे। उन सबका भोजन–विश्राम खेत पर ही होता है। बबलूजी और उनके साले की परस्पर वार्ता से कार्य की कठिनाइयों का बोध हुआ। मेरे जीवन का पूर्व व्यवसाय होने से इस व्यवसाय से भलीभाँति परिचित तो हूँ ही। यह सब दृश्य देखकर अनायास अतीत का चलचित्र मन–मस्तिष्क पटल पर उभर आया। लड़कियों के विशाल लठ्ठों को कान्धे पर, साइकिल पर, मोटर साइकिल पर, हाथ ठेले पर ढोते मारे–मारे भागते रहते थे, न सोने के समय का ठोर–ठिकाना, न भोजन का। पालनहार, तारनहार प्रभु स्मरण की कौन कहे। एक भारवाहक पशु के तुल्य अमूल्य मानव जीवन व्यर्थ नष्ट कर रहे थे।

(जीविकोपार्जन हेतु किया गया कोई भी कार्य निम्न स्तरीय नहीं होता, किन्तु केवल और केवल उसी में डूब जाना तथा मानव जीवन महत्ता और लक्ष्य को भूल जाना निश्चित रूप से भारवाहक पशु के तुल्य व्यर्थ जीवन नष्ट करना ही है और ऐसा जीवन इस भूमि पर भार ही है) कुछ वर्षों पूर्व परिचितों के मुखारबिन्द से सुनाई देता था कि बहन के देवर अहंकार के मद में युक्त होकर लकड़ी का कार्य करने वालों को हेय दृष्टि से देखते हैं तथा निम्न स्तरीय भाषा का उपयोग कर उनका उपहास उड़ाते हैं। अहो! मात्र कुछ वर्षों में कितना कुछ बदल गया। यह प्रभु कृपा के साथ-साथ अपने किए गए कर्मों का फल नहीं तो और क्या है? **कोटिशः धन्यवाद है उस परमपिता परमेश्वर का जिसने दोष-दुर्गुणादि के दल-दल में सिर से लेकर पांव तक डूबे, गधे के तुल्य मूर्खता में जीवन जी रहे इस तुच्छ जीव पर असीम तथा महती कृपा करते हुए अपनी वाणी वेद के ज्ञान से समृद्ध कर दिया और समृद्ध ही नहीं किया अन्यों के जीवन में भी वेद ज्ञान का प्रकाश फैलाने का अधिकारी बना दिया।**

बहन के समस्त परिजनों को वैदिक सिद्धान्त विषयक उपदेश दिया तथा भानजी सौ.कां. स्तुति के विवाह की योजना पर विचार-विमर्श कर भोजनोपरान्त प्रस्थान किया। सेन्धवा निवासी सामाजिक कार्यकर्ता श्री विश्वेश्वर शर्मा के साथ बस स्थानक पहुँचा। सामाजिक विषयों को लेकर विश्वेश्वर शर्मा से विस्तारपूर्वक वार्ता हुई।

दिनांक १७ को मार्च माह की पत्रिका का कार्य पूर्ण कर मुद्रण होने भेजा।

दिनांक १८ मार्च को एक दिवसीय भ्रमण योजना बनाकर दो पहिया वाहन (मोटर साइकिल) से प्रातः १० बजे इन्दौर से प्रस्थान कर वेद विद्या मन्दिर धरमपुरी के संचालक श्री मोहनलालजी शर्मा से भेंटवार्ता की, पश्चात् सांवेर प्रस्थान किया। सांवेर में कृषि विभाग में सेवारत श्री ख्यालीराम जी शर्मा चन्द्रावतीगंज वालों से भेंटवार्ता हुई। आप आत्मीय स्नेह भाव रखते हैं। आपने वैदिक संसार को सहयोग राशि प्रदान की। सांवेर से प्रस्थान कर उज्जैन में श्री भोलाराम जी शर्मा के निवास पर पहुँचकर आपसे भेंटवार्ता की। उज्जैन से प्रस्थान कर ग्राम चन्दूखेड़ी में ९५ वर्षीय स्वामी ओमानन्द जी महाराज के निवास पर पहुँचा। विगत दिनों स्वामीजी की धर्मपत्नी का देहान्त हो गया था। स्वामीजी से भेंटवार्ता उपरान्त विक्रमनगर (मौलाना) के लिए प्रस्थान किया। मौलाना में आर्यत्व के धनी श्री भेरूलालजी आर्य से भेंट हुई। आप अल्पाहार का व्यवसाय करते हैं। आपने आग्रहपूर्वक मिष्ठान्न आदि का अल्पाहार करवाया। कुशल क्षेम का आदान-प्रदान किया पश्चात् बड़नगर के लिए प्रस्थान किया। पूर्व वार्तानुसार श्री मनोज प्रजापत न्यायालय चौराहे पर मिल गए। आपके साथ आर्य समाज के मन्त्री नाथूलाल जी शर्मा के निवास पर गए, मन्त्री जी से भेंटवार्ता की। मनोज जी के आदेशानुसार वैदिक सम्पत्ति, सन्मार्ग दर्शन, मूर्ख कौन? तथा सत्यार्थ प्रकाश साथ लाया था, जो उन्हें सुपुर्द किया। मनोज जी के द्वारा जलपान करवाया गया, पश्चात् मनोज जी के साथ ग्राम बिरगोदा के लिए प्रस्थान किया। आर्य समाज बड़नगर की नवनिर्वाचित प्रधान श्रीमती सरिता आर्या के पतिदेव श्री राजेन्द्र जी यादव का यह गृहग्राम है। आपको प्रधान निर्वाचित होने पर शुभकामनाएँ व्यक्त की तथा आपसे वार्ता उपरान्त मनोज जी ने बड़नगर के लिए व मैंने देपालपुर के लिए प्रस्थान किया।

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के इन्दौर सम्भाग के उपप्रधान श्री गोविन्दराम जी आर्य का निवास स्थान देपालपुर तहसील मुख्यालय पर है। आप पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ थे। आपके निवास आर्य इलेक्ट्रॉनिक्स पर पहुँचकर आपसे भेंटकर आपका कुशलक्षेम जाना, पश्चात् विस्तारपूर्वक वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार विषयक वार्ता हुई। जलपान ग्रहण कर इन्दौर के लिए प्रस्थान किया। **लगभग १८५ किलोमीटर की मोटर साइकिल से एक दिवसीय यात्रा** का समापन रात्रि ८ बजे इन्दौर निवास स्थान पर पहुँचकर हुआ।

दिनांक १९ मार्च को बहु प्रीति शर्मा द्वारा असत्य दोषारोपण कर दहेज प्रताड़ना तथा घरेलू हिंसा के थोपे गए प्रकरणों की पेशी तारीख होने से न्यायालय में उपस्थित रहे।

दिनांक २० मार्च को मार्च माह की पत्रिका का आवरण पृष्ठ कार्य सम्पादित किया।

दिनांक २१ मार्च को समस्त परिजन सुपुत्र नितिन शर्मा के राऊ ग्राम स्थित निवास स्थान पर एकत्रित हुए। **'नवान्न सस्येष्टि पर्व'** का वृहद देवयज्ञ सभी ने मिलकर किया। समस्त परिजनों को प्रेरणादायक मार्गदर्शन दिया। भोजनोपरान्त रिक्त समय में लेखन कार्य किया। रात्रि को धर्मपत्नी के साथ इन्दौर स्थित निवास पर लौट आया।

दिनांक २२ मार्च को अप्रैल माह की पत्रिका हेतु दिनांक ११ फरवरी को रेल में लिखे गए सम्पादकीय को व्यवस्थित किया तथा प्रकाशन सामग्री का चयन कर संगणक को देने पश्चात् मार्च माह का यात्रा वृतान्त लेखन कार्य किया।

दिनांक २३-२४ मार्च को मार्च माह की पत्रिका प्रेषण हेतु डाक पते की सूची में नूतन सदस्यों के नाम प्रविष्ट किए गए तथा सूची संशोधन कार्य के साथ कार्यालयीन कार्यों को सम्पादित किया।

दिनांक २५ मार्च को मार्च माह की पत्रिका का प्रेषण आर.एम.एस. (रेल मेल सर्विस) इन्दौर से किया। पत्रिका प्रेषण कार्य रेल स्थानक से सम्पन्न करने के पश्चात् दिल्ली-इन्दौर लौहपथ गामिनी से बिटिया भाग्यश्री के दादा श्वसुर श्री श्यामलालजी शर्मा तथा जंवाई सा. श्री अर्जुनजी पधार गए। रेल स्थानक पर आपकी अगवानी कर आपको सुपुत्र नितिन के निवास स्थान राऊ ले गए। स्नान-भोजनादि से निवृत्त होने के बाद आपको लेकर बड़वानी के लिए प्रस्थान किया। मार्ग के मध्य बड़वानी जनपद के ग्राम कुआँ स्थित आर्य समाज के सदस्य श्री मोहनलालजी आर्य तथा अन्य बन्धुओं से भेंटवार्ता हुई। बड़वानी पहुँचकर अतिथियों को बड़वानी स्थित गृह का अवलोकन करवाया तथा जग प्रसिद्ध सिद्ध क्षेत्र चूलगीरी (बावनगजा, जैन तीर्थ) का भ्रमण करवाया। भोजन तथा रात्रि विश्राम श्यालः श्री जगदीश शर्मा के निवास पर किया।

दिनांक २६ मार्च को प्रातः ६ बजे अतिथियों को लेकर बड़वानी से ५ किलोमीटर दूर नर्मदा नदी गए, सभी ने स्नान किया। बड़वानी लौटकर अन्य परिजनों के निवास पर जाकर भेंटवार्ता कर इन्दौर के लिए प्रस्थान किया। इन्दौर निवास पर पहुँचकर भोजनादि उपरान्त बेटी भाग्यश्री तथा अतिथियों को विदा किया।

दिनांक २७ मार्च को प्रातः ४.३० बजे इन्दौर-जोधपुर लौहपथ गामिनी से धर्मपत्नी, बहन प्रमिला शर्मा, भानजी श्रीमती निर्मला शर्मा, भानजे जंवाई श्री कैलाश जी शर्मा तथा सुपुत्र नितिन शर्मा के साथ ब्यावर के लिए प्रस्थान किया। पिपलिया मण्डी रेल स्थानक पर पं. सत्येन्द्रजी आर्य, आपके सुपुत्र श्री वेदप्रकाश आर्य तथा श्री बंशीलाल जी आर्य भेंट करने आए। आपको साथ में लाया गया साहित्य दिया और हमारी रेलगाड़ी चल दी। सायंकाल ४ बजे ब्यायजी श्री किशनलालजी आर्य के मोतीनगर (ब्यावर) स्थित निवास पर

पहुँचे। समस्त परिजनों ने मिलकर देवयज्ञ किया। भोजनोपरान्त १७–१८ मई को प्रस्तावित **सौ.कां. स्तुति संग चि. अक्षय के विवाह** कार्यक्रम पर विस्तारपूर्वक वार्ता कर कार्यक्रम का निर्धारण किया गया।

दिनांक २८ मार्च को प्रातः दोनों परिवार के सदस्यों द्वारा मिलकर देवयज्ञ किया गया। अक्षय जी की दादीजी श्रीमती कल्पना जी जांगिड सेवानिवृत्त शिक्षिका द्वारा सुमधुर भजन सुनाए गए। मेरे द्वारा देवयज्ञ तथा वैदिक सिद्धान्तों को जानने, समझने तथा आत्मसात करने हेतु प्रेरक उद्‌बोधन दिया गया।

हम सभी सदस्य ब्यावर स्थित विश्वकर्मा भवन जहाँ विवाह आयोजन होना है पर गए। भवन का अवलोकन किया। भवन विशाल तथा सर्वसुविधायुक्त है। भवन के एक भाग में जांगिड ब्राह्मण समाज द्वारा संचालित आरा मशीन जो किराए पर दी जाती है। वर्तमान में आरा मशीन का संचालन कर रहे श्री आत्माराम जी जांगिड तथा अन्य ३–४ बन्धुओं से भेंटवार्ता हुई। आपको वेदज्ञानी ब्राह्मण बनने की प्रेरणा दी। वहाँ से लौटकर भोजनादि उपरान्त पुनः वार्ता हुई श्री किशनलाल जी के बहनोई श्री मोहनलालजी शर्मा से दिवंगत पितरों के विषय पर विस्तारपूर्वक वार्ता हुई। **आपको गीता आदि के प्रमाण से समझाने की प्रयास किया कि पितर शब्द जीवित माता–पिता, दादा–दादी आदि के लिए उपयोग होता है न कि दिवंगतों के लिए।** सायंकाल ४ बजे ब्यावर से अजमेर के लिए प्रस्थान किया। रात्रि ९ बजे अजमेर से इन्दौर हेतु हमारा यात्रा टिकट जयपुर–भोपाल–इन्दौर द्रुतगति लौहपथ गामिनी में आरक्षित था।

दिनांक २९ मार्च को इन्दौर निवास पर पहुँचे। डाक पार्सल से भेजी जाने वाली पत्रिका का प्रेषण कार्य किया।

दिनांक ३० मार्च को डाक पार्सल प्रेषित की। यात्रा की थकान थी अथवा अन्य कोई कारण। कुछ अवस्थता अनुभूत हुई अतः विश्राम किया।

दिनांक ३१ मार्च को धर्मपत्नी के साथ पारिवारिक बृहद देवयज्ञ कर आर्य समाज दयानन्द गंज के साप्ताहिक सत्संग में ८.३० बजे पहुँचा। यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की। यज्ञ पश्चात् **'वैदिक वाङ्मय में राष्ट्र रक्षा'** विषय पर श्री कृष्णकुमार जी अष्ठाना प्रधान सम्पादक **'देवपुत्र'** की अध्यक्षता में तथा डॉ. अनन्त जी शर्मा जयपुर के मुख्य वक्तृत्व में विशेष रूप से व्याख्यान आयोजित था। मंच को शोभायमान किया इन्दौर सम्भाग के उप प्रधान श्री गोविन्दराम जी आर्य ने। कार्यक्रम का संचालन डॉ. दक्षदेव जी गौड़ ने किया। कार्यक्रम की प्रस्तावना डॉ. अखिलेश जी शर्मा ने प्रस्तुत की। व्याख्यान के पूर्व देवयज्ञ पश्चात् श्री हरिश जी शर्मा, कु. सिद्धि आर्या, सुश्री ज्योति आर्या आदि ने सुन्दर भजनों की प्रस्तुति दी। आभार आर्य समाज दयानन्द गंज के संयोजक श्री दिनेश जी गुप्ता ने व्यक्त किया। सहभोज पश्चात् समापन हुआ। घर लौटकर उपरोक्त यात्रा वृतान्त को अन्तिम रूप देकर लेखनीबद्ध किया तथा अन्य लेखन कार्यों को सम्पन्न किया।

दिनांक १ अप्रैल को डाक पार्सल से भेजे जाने वाले पत्रिका बण्डल जो दिनांक ३० को प्रेषित नहीं किए जा सके थे को प्रेषित किए। इस प्रकार मार्च माह के अंक का प्रेषण कार्य पूर्ण हुआ। जिन सदस्यों का चन्दा समाप्त हो गया था उन्हें पत्रिका में पर्ची के द्वारा चन्दा भेजे जाने की सूचना दी जा चुकी थी। ऐसे सदस्यों को चलभाष पर पत्रिका की प्राप्ति तथा अनवरत पत्रिका भेजे जाने के विषय में उनकी सहमति व चन्दा भेजे जाने सम्बन्धित निवेदन सम्बन्धी वार्ताएँ कीं।

आर्य समाज संयोगिता संघ (छावनी), इन्दौर में दिनांक ५ को आर्य समाज स्थापना दिवस इन्दौर नगर की समस्त आर्य समाजों के संयुक्त तत्वावधान में प्रतिवर्षानुसार मनाया जाना था। आर्य समाज छावनी के प्रधानश्री वेदरत्नजी तथा मन्त्री श्री मनोजजी सोनी से आर्य समाज दयानन्द गंज के साप्ताहिक सत्संग से ३१ मार्च को भेंट हुई थी। आप महानुभाव गहन आत्मिक सम्मान तथा स्नेह प्रदान करते हैं। आपका अनुरोध था कि दिनांक ५ अप्रैल को होने वाले आयोजन में वैदिक साहित्य विक्रयार्थ रखा जाए। दिनांक ६ से १० तक आर्य समाज खामखेड़ा जनपद : सीहोर का भी वार्षिकोत्सव आयोजित था। आर्य समाज खामखेड़ा के प्रधान श्री प्रकाशजी आर्य तथा मन्त्रीजी श्री नरेन्द्रजी चौधरी का भी आग्रह था कि वैदिक साहित्य उपस्थितों को सुलभ करवाया जाय।

इन्दौर निवास पर स्थानाभाव के कारण वैदिक साहित्य का भण्डारण तथा वेद प्रचार वाहन को रिक्त समय में मेरे द्वारा वेद मन्दिर धरमपुरी जो इन्दौर शहर से २० कि.मी. दूरी पर उज्जैन मार्ग पर स्थित श्री मोहनलालजी शर्मा द्वारा अपने निवास पर स्थापित तथा संचालित है पर रखा जाता है।

दिनांक २ अप्रैल को वेद विद्या मन्दिर धरमपुरी गया। वैदिक साहित्य का चयन किया तथा वेद प्रचार वाहन में इन्दौर लाया। धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गा शर्मा तथा सुपुत्र नितिन शर्मा को आर्य समाज छावनी के आयोजन में सपरिवार उपस्थिति देने तथा साहित्यिक सेवा करने का दायित्व सौंपा।

दिनांक ३ अप्रैल को कार्यालयीन कार्यों को सम्पादित किया। रतलाम निवासी श्री गोवर्धनलालजी वण्डेला का सन्देश प्राप्त हुआ कि आप रतलाम से आकर धामनोद (धार) प्रस्थान कर रहे हैं आपसे रेल स्थानक पर भेंट करने आऊँ। अतः आपसे भेंट करने गया। आपको विगत कुछ माहों से डाककर्मियों की कार्य शिथिलता के चलते पत्रिका प्राप्त नहीं हो रही थी। आपको वैदिक संसार के विगत माहों के अंक दिए। आपने वैदिक संसार को आजीवन सदस्यता सहयोग किया।

सायंकाल लगभग ५ बजे इन्दौर–उदयपुर लौहपथगामिनी से पिपलिया मण्डी के लिए प्रस्थान किया। देवास से श्री प्रेमनारायणजी पाटीदार प्रभात आयुर्वेदिक संस्थान वाले भी साथ हो लिए। रात्रि ११ बजे पिपलिया मण्डी पहुँचे। बूढ़ा वाले श्री बद्रीलालजी लोहार रेल स्थानक पर प्रतिक्षारत मिले, आपके साथ ग्राम बूढ़ा पहुँचे।

दिनांक ४ से ६ तक श्री प्रेमनारायणजी पाटीदार के साथ भ्रमण, संध्या तथा देवयज्ञ सम्पन्न किए और वैदिक साहित्य सेवा के साथ स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती पलवल (हरियाणा) तथा श्री कुलदीप आर्य बिजनौर (उ.प्र.) के उपदेशों का अमृतपान किया। दिनांक ६ को दोपहर में बूढ़ा से प्रस्थान कर सायंकाल ५ बजे पिपलिया मण्डी से इन्दौर के लिए रेल द्वारा प्रस्थान किया।

दलौदा रेल स्थानक पर पं. सत्यपाल शर्मार्य, देहरी भेंट करने पधारें। पश्चात् श्री शान्तिलालजी आर्य निवासी धामनोद (सैलाना) से पूर्व वार्तानुसार आपके सुपुत्र श्री देवीलालजी अपने साथियों के साथ नामली रेल स्थानक पर आ गए। आपको धामनोद में दिनांक १८ से २१ अप्रैल तक आयोजित रामकथा हेतु वैदिक साहित्य दे दिया।

रात्रि १० बजे के लगभग इन्दौर पहुँचा। परिजनों से सम्पर्क करने पर ज्ञात हुआ कि वे सभी आर्य समाज छावनी में हैं। सुपुत्र गजेश शास्त्री रेल स्थानक पर लेने आ गए। मैं भी आर्य समाज छावनी पहुँच गया। पदाधिकारियों से भेंटवार्ता की, भोजन ग्रहण कर घर पहुँचे।

संगणक संचालक द्वारा अप्रैल माह की प्रकाशन सामग्री का टंकण कार्य

पूर्ण कर त्रुटि शोधन हेतु पृष्ठ तैय्यार कर दिए गए थे। दिनांक ७ अप्रैल को त्रुटि शोधन कार्य किया।

दिनांक ८ अप्रैल को आर्य समाज खामखेड़ा में आयोजित वार्षिकोत्सव के लिए वेद प्रचार वाहन से प्रस्थान किया। देवास से श्री प्रेमनारायणजी पाटीदार को साथ लिया और लगभग तीन बजे खामखेड़ा जा पहुँचे।

दिनांक ६ से १० अप्रैल तक प्रात:कालीन यज्ञ-भजन-प्रवचन ग्राम खामखेड़ा के मध्य में निर्मित आर्य समाज भवन में तथा भोजन पश्चात् दोपहर १ बजे से ४ बजे तक ग्राम के छोर पर नवनिर्मित विशाल महर्षि दयानन्द सरस्वती माँगलिक भवन पर आचार्य योगेन्द्रजी याज्ञिक (होशंगाबाद) व पं. भानुप्रकाशजी शास्त्री बरेली के मुखारबिन्द से वैदिक ज्ञान की गंगा प्रवाहित हो रही थी। मैंने वैदिक साहित्य का स्टाल लगाया तथा पाटीदारजी ने आयुर्वेदिक औषधियों का स्टाल लगाकर सेवा की तथा भजन-प्रवचन का लाभ प्राप्त किया। प्रतिदिन पाटीदारजी के साथ देवयज्ञ किया।

दिनांक ११ अप्रैल को प्रात:काल ५ बजे खामखेड़ा से इन्दौर के लिए प्रस्थान किया।। श्री प्रेमनारायणजी पाटीदार को आपके निवास स्थान (देवास) छोड़ते हुए इन्दौर पहुँचा।

अप्रैल माह के अंक के त्रुटि शोधित पृष्ठ कम्प्यूटर संगणक को दिए तथा दिनांक ११ से १३ अप्रैल तक भानजी स्तुति के विवाह की निमन्त्रण पत्रिका बनवाने का कार्य किया। वेदज्ञान विहीन युवक-युवतियों के विवाह होकर वे गृहस्थाश्रम की महत्ता से अनभिज्ञ होते हैं। अत: वैदिक सिद्धान्तों से युक्त आर्य महानुभावों द्वारा रचयित गृहस्थाश्रम विषयक सामग्री से युक्त पुस्तक प्रकाशन कर विवाह अवसर पर वर-वधू तथा पधारे अतिथियों व भविष्य में विवाह बन्धन में बन्धने वाले नवयुगलों को उपहार स्वरूप भेंट करने का मानस बना 'आदर्श वैदिक परिवार' पुस्तक सम्बन्धित कार्य कर सामग्री कम्प्यूटर संगणक को दी।

● आर्य समाज खामखेड़ा (सीहोर) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न
● आर्य समाज, रेलवे कॉलोनी, रतलाम का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक १४ अप्रैल को प्रात: ४.३० पर इन्दौर-जोधपुर लौहपथगामिनी से वैदिक साहित्य रेलवे कॉलोनी द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्य विद्यालय परिसर में दिनांक १२ से १४ तक वार्षिकोत्सव का आयोजन पं. योगेन्द्रजी याज्ञिक (होशंगाबाद) तथा पं. भानुप्रकाशजी शास्त्री बरेली की गरिमामयी उपस्थिति में किया जा रहा था। समापन सत्र पर पहुँचकर स्नानादि से निवृत्त हो श्री श्यामजी तबला वादक के साथ देवयज्ञ किया। वैदिक साहित्य का स्टाल लगाकर साहित्यिक सेवा की। सायंकाल ५ बजे रतलाम-इन्दौर- ग्वालियर लौहपथगामिनी से प्रस्थान कर इन्दौर पहुँचा।

दिनांक १५ अप्रैल को लेखन तथा कार्यालयीन कार्यो को पूर्ण कर रात्रि ९ बजे इन्दौर से बस द्वारा बड़वानी प्रस्थान किया। रात्रि १२ बजे बड़वानी पहुँचकर श्री कैलाशजी शर्मा के यहाँ शयन किया।

दिनांक १५ अप्रैल को प्रात:कालीन देवयज्ञ डॉ. दीपक शर्मा (सपत्निक) के मुख्य यजमानत्व में तथा श्याल: श्री जगदीश शर्मा व सौ.का. स्तुति के सह यजमानत्व में देवयज्ञ किया।

बड़वानी में वैदिक-धर्म प्रचार-प्रचार की भावी योजना को ध्यान में रखकर निजी आवास की समस्याओं का निराकरण सम्बन्धी तथा भानजी स्तुति के दिनांक १७-१८ मई को किए जाने वाले विवाह विषयक परिजनों से मन्त्रणा पश्चात् सायंकाल ५ बजे बड़वानी से प्रस्थान कर रात्रि १० बजे इन्दौर पहुँचा।

दिनांक १७ अप्रैल को वैदिक संसार की सदस्यता सूची में नवीन सदस्यों के नाम प्रविष्ट किए तथा अन्य संशोधन आदि कार्यो को पूर्ण किया।

दिनांक १८ अप्रैल को उपरोक्त यात्रा वृतान्त लेखन कार्य किया तथा मई माह की पत्रिका सामग्री कार्य प्रारम्भ कर दोपहर को इन्दौर-कोटा (रूठियाई) लौहपथगामिनी से इन्दौर से शाजापुर के लिए प्रस्थान किया। शाजापुर में ज्येष्ठ सुपुत्र निलेश शर्मा के फूफा श्वसुर श्री गोविन्दराम जी खण्डेलवाल की सुपुत्री के आयोजित विवाह समारोह में उपस्थिति हेतु आना हुआ था। स्नेहीजनों से भेंट वार्ता हुई। श्री प्रवीण विश्वकर्मा को वैदिक साहित्य स्वाध्याय के विषय में अन्य बन्धुओं की उपस्थिति में प्रेरणा प्रदान कर इसकी महत्ता से अवगत करवाया। **नवदम्पति सौ.का. अश्विनी संग चि. अश्विनी को उपहार स्वरूप सत्यार्थ प्रकाश तथा सैद्धान्तिक चर्चा पुस्तक भेंटकर उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ देकर** रात्रि १२ बजे अमृतसर-इन्दौर रेल से इन्दौर के लिए प्रस्थान किया।

दिनांक १९ अप्रैल मेरे जीवन में विशेष स्थान रखता है। ४० वर्ष पूर्व १९ अप्रैल १९७९ को मैंने धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गा शर्मा के साथ गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया था विवाह की ४० वर्ष की पूर्णता पर विशेष वृहद यज्ञ सुपुत्र प्रितेश शर्मा व गजेश शास्त्री के साथ किया। गजेश शास्त्री द्वारा विवाह वर्षगाँठ विषयक विशेष आहुतियाँ प्रदान करवाई गईं। दोपहर तीन बजे आम्बेडकर नगर (महू) से निम्बाहेड़ा को चलने वाली रेल द्वारा इन्दौर से रतलाम के लिए धर्मपत्नी के साथ प्रस्थान किया। रतलाम से बस द्वारा लगभग १५ किलोमीटर की दूरी पर स्थित धामनोद पहुँचे। धामनोद में दिनांक १८ से २१ अप्रैल तक वैदिक रामकथा का आयोजन आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान, युवा संन्यासी स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती दर्शनार्थ, दर्शन योग महाविद्यालय प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर, रोहतक हरियाणा तथा पं. कमल किशोरजी शास्त्री, बैरसिया (भोपाल) के मुखारबिन्द से पाटीदार समाज धर्मशाला (श्रीराम मन्दिर) में प्रारम्भ हो चुका था। सायंकालीन संध्या- भोजन से निवृत्त हो वैदिक साहित्य तथा महापुरुषों की चित्र प्रदर्शनी विक्रयार्थ लगाई।

दिनांक २० अप्रैल को आचार्य अमितेषजी पुरोहित आर्य समाज रेलवे कॉलोनी, रतलाम के ब्रह्मत्व में सम्पादित देवयज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की। इस अवसर पर **श्री अंकित शर्मा तथा आपकी धर्मपत्नी श्रीमती दीपिका शर्मा भी यजमान के रूप में उपस्थित थे। आपके परिवार में नवीन सदस्य का आगमन होना है अत: इस अवसर पर सिमन्तोनयन संस्कार भी सम्पन्न किया गया।** स्वामी शान्तानन्दजी द्वारा मेरे विवाह के ४० वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर विशेष आहुतियाँ प्रदान करवाई गई तथा आशीर्वाद प्रदान कर ५०वीं वर्षगाँठ को भव्य रूप में आयोजित कर ५० कुण्डीय देवयज्ञ में ऐसे दम्पतियों को यजमान बनाया जाए जो मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक अथवा दैनिक देवयज्ञ का संकल्प लेने वाले हो। इस आयोजन में आर्य जगत् के ५० संन्यासी, ५० वानप्रस्थी, ५० आचार्य- भजनोपदेशक विद्वान तथा ५० ब्रह्मचारियों को आमन्त्रित करने की भावी योजना का निर्देश कर संकल्पित करवाया तथा स्वामीजी ने उद्घोषणा की कि इस अवसर पर मैं वैदिक संसार के ४० सदस्य बनवाऊँगा।

सायंकाल आर्य समाज सैलाना के कर्मठ सदस्य श्री शेखरजी अपनी तूफान चार पहिया वाहन से हम सभी को लेने आ गए। आपके साथ सैलाना

नगर के महलवाड़ा (राजभवन) को देखने गए। भवन के पीछे की ओर मध्य एशिया में अपनी ख्याति अर्जित करने वाले **'कैक्टस गार्डन'** का दृश्यावलोकन किया। अद्भुत देश-विदेश में पाई जाने वाली विभिन्न प्रजाति के कैक्टस (नागफणियों) का विशाल संग्रहण वहाँ पर था। स्वामी शान्तानन्दजी तथा हम सभी कैक्टसों के मध्य रिक्त स्थान पर बैठे, **स्वामीजी ने चित्रं देवाना मुद्गादनिकं.... मन्त्र की व्याख्या करते हुए परमात्मा की सृष्टि संरचना और कैक्टसों को जीवात्मा द्वारा किए गए नि:कृष्ट कर्मों के कारण कैसी-कैसी योनियों में जाकर दण्ड भोगना होता है उपदेशित किया,** जिसका वीडियो शेखर आर्य द्वारा बनाया गया। पश्चात् सैलाना नगर से लगभग चार किलोमीटर की दूरी पर स्थित केदारेश्वर गए। उपरोक्त स्थान विशाल पर्वतों के मध्य गहरी खाई में स्थित अत्यन्त रमणीय प्राकृतिक स्थल है। जिसे अज्ञानी अन्धविश्वासी जनमानस द्वारा मन्दिर आदि निर्माण कार्य कर प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ खिलवाड़ किया जाकर केदारेश्वर नाम देकर मनोविनोद का माध्यम बना लिया गया है जबकि इन **अनुपम, विशाल विहंगम रचनाओं को देखकर उस रचनाकार परमपिता प्रभु के विराट स्वरूप को जानने का प्रयास करना चाहिए। सायंकालीन संध्या का समय हो चुका था। स्वामीजी के सान्निध्य में हम सभी ने पंक्तिबद्ध होकर संध्योपासना मन्त्रों का पाठ किया।** शेखरजी आर्य द्वारा ईश्वरोपासना के मन्त्रोच्चारण के साथ परमपिता परमात्मा द्वारा निर्मित ऊँचे-ऊँचे पर्वतों, हरे-भरे वृक्षों, जलाशय तथा बन्दर, पक्षियों आदि वन्य प्राणियों का वीडियो बनाकर इस अद्भुत विलक्षण दृश्य को अन्यों तक पहुँचाने व स्मृतियों को सुरक्षित करने का कार्य भी साथ-साथ किया। केदारेश्वर से प्रस्थान कर श्री शेखरजी आर्य के यहाँ हम सभी ने भोजन ग्रहण किया पश्चात् धामनोद लौट आए।

दिनांक २१ अप्रैल समापन दिवस पंच महायज्ञों को समर्पित रहा। प्रतिदिन प्रात:काल सम्पादित होने वाले ध्यान-उपासना प्रशिक्षण सत्र के माध्यम से ब्रह्मयज्ञ किया गया। पश्चात् एक यज्ञवेदी पर मुख्य यजमान के रूप में श्री भँवरलालजी पांचाल निवासी नागदा जंक्शन सपत्निक, श्री नन्दकिशोरजी जायसवाल प्रमुख आर्य समाज आक्याकलां सपत्निक, श्री अशोक कुमार जी सोलंकी, सैलाना सपत्निक व अन्य आर्यजन सहयजमान बने। दूसरी यज्ञ वेदी पर मैं सपत्निक मुख्य यजमान तथा श्री शेखरजी के काका श्री मदनलाल जी राठौर, सैलाना सपत्निक, श्री अंकितजी शर्मा, धामनोद सपत्निक व आर्य जगत् रतलाम सम्भाग के पुरोधा श्री भगवानदासजी अग्रवाल की धर्मपत्नी व पुत्रवधू तथा डॉ. रामलालजी पांचाल, आक्याकलां व शेखरजी आर्य ने सहयजमान के रूप में आहुतियाँ प्रदान की। समस्त उपस्थितों ने भी तीन गायत्री मन्त्र के साथ आहुतियाँ प्रदान कर पंच महायज्ञ के द्वितीय सोपान देवयज्ञ को पूर्ण किया।

तृतीय सोपान पितृयज्ञ से पूर्व योजनानुसार उपस्थितों द्वारा अपने माता-पिता तथा अन्य पारिवारिक वरिष्ठजनों को फूलमाला पहनाकर उनके चरण स्पर्श कर उन्हें वस्त्र-मिष्ठान्न आदि भेंटकर उनका सम्मान किया गया। इसे हेतु उपस्थित आर्यजनों को संकल्पित भी करवाया गया कि वे अपने वरिष्ठजनों की सेवा-सम्मान प्रतिदिन करेंगे। पितृयज्ञ पश्चात् अतिथि यज्ञ के द्वारा स्वामीजी तथा शास्त्रीजी आचार्यजी व वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा (सपत्निक), तबला वादक श्री संजय आर्य व उपस्थित समस्त विद्वानों के चरण प्रक्षालन कर उनका यथोचित मान-सम्मान करते हुए उन्हें दक्षिणा रूप मुद्रा प्रदान कर अतिथियज्ञ किया गया। बलिवैश्व देव यज्ञ के द्वारा सांकेतिक रूप से गाय की पूजा कर उसे खीर खिलाई जाकर गौमाता संरक्षण-संवर्धन की प्रेरणा दी गई। इस प्रकार पंच महायज्ञ को सम्पादित करने के पश्चात् समस्त उपस्थितजनों का पंच महायज्ञ को अपने जीवन का अंग बनाने का संकल्प धारण करने की प्रेरणा दी गई। पश्चात् श्रीराम-श्रीकृष्ण, श्री लक्ष्मण, श्री हनुमान, श्री सुग्रीव आदि के प्रेरणादायी प्रसंगों के माध्यम से जीवन को उत्कृष्टता की ओर ले जाने की प्रेरणा स्वामी शान्तानन्दजी महाराज द्वारा दी गई। स्वामीजी महाराज द्वारा प्रेरणादायी उद्‌बोधन के साथ-साथ वेद मन्त्रों का भाव विभोर होकर गीत रूप में प्रस्तुतीकरण अत्यन्त प्रभावी रहा। पं. कमल किशोरजी तथा आपकी दोनों सुपुत्रियों, नागदा से पधारी गायत्री आर्या व संजय आर्य द्वारा भी सुमधुर भजनों की सुन्दर प्रस्तुति द्वारा सबका मन मोह लिया गया। प्रेरणादायी स्मृतियों को संजोए हुए आयोजन का समापन हुआ। सायंकाल इन्दौर के लिए प्रस्थान किया। यात्रा के मध्य नागदा जंक्शन रेल स्थानक पर आर्य समाज नागदा के प्रमुख श्री कमलजी आर्य से पूर्व वार्तानुसार दिनांक १ से ५ मई तक सुश्री अंजलि आर्या के मुखारबिन्द से आयोजित राम-कृष्ण ज्ञान कथा के आयोजन हेतु कमल आर्यजी के परिवार के दो नवयुवक वैदिक साहित्य लेने आ पहुँचे। साहित्य आपको देते हुए उज्जैन व उज्जैन से बस द्वारा रात्रि १२.३० पर इन्दौर पहुँचे। दिनांक २२ से २३ अप्रैल को अप्रैल माह की पत्रिका के प्रेषण कार्यों को सम्पन्न किया।

दिनांक २४ अप्रैल को प्रात: ४.३० पर इन्दौर-जोधपुर लौहपथगामिनी से नीमच के लिए प्रस्थान किया। पिपलिया मण्डी रेल स्थानक पर वैदिक संसार के अभिन्न सहयोगी श्री बंशीलालजी आर्य पूर्व वार्तानुसार पधार गए। आपको क्षेत्र की वैदिक संसार प्रतियाँ वितरित करने हेतु दी। नीमच पहुँचकर बस द्वारा छोटी सादड़ी बाईपास पहुँचा। श्री गौरीशंकर आर्य गोमाना वालों को चलभाष पर सूचित करने पर आप लेने आ गए। आपके सुपौत्र **चि. पवन का विवाह दिनांक १९ अप्रैल को सौ.का. भागवन्ता उर्फ हेमलता के संग** सम्पन्न हुआ था। मैं धामनोद के आयोजन में होने के कारण उपस्थित नहीं हो सका था। आप दैनिक अग्निहोत्री हैं और आपका निवास सुपुत्रों से पृथक होने से एकान्त, शान्त स्थल साधना स्थली जैसे सुरम्य वातावरण में देवयज्ञ किया। आपके छोटे सुपुत्र श्री मोहन पाटीदार के यहाँ जाकर भोजन ग्रहण किया। नवपौत्रवधू तथा सुपौत्र को शुभआशीष प्रदान किया। पश्चात् वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि श्री माँगीलालजी प्रजापत से भेंट वार्ता की तथा अप्रैल माह की गोमाना निवासी पाठकों की वैदिक संसार की प्रतियाँ दीं। माँगीलालजी के निवास के समीप गोमाना बस स्टैंड पर चिकित्सा सेवा दे रहे **डॉ. नासीर खान से वैदिक धर्म विषयक तथा इस्लाम की उत्पत्ति और भारत में आगमन को लेकर विस्तारपूर्वक वार्ता हुई। आपने स्वैच्छापूर्वक वैदिक संसार पत्रिका के त्रैवार्षिक सदस्य बनकर स्वाध्याय की इच्छा प्रकट की, आपको सदस्य बनाया।** श्री माँगीलालजी के सुपुत्र श्री नरसिंहजी प्रजापत ने मुझे छोटी सादड़ी बस स्टैंड तक छोड़ दिया। जहाँ से मैंने खेड़ी आर्यनगर के लिए प्रस्थान किया। प्रतापगढ़-निम्बाहेड़ा राजमार्ग पर खेड़ी आर्यनगर के मार्ग पर वैदिक संसार के अभिन्न सहयोगी श्री ताराचन्दजी आर्य प्रतिक्षारत मिले। आपके साथ खेड़ी आर्य नगर पहुँचे। आपको क्षेत्र के पाठकों की वैदिक संसार की अप्रैल माह की प्रतियाँ दी। खेड़ी आर्य नगर निवासी श्री जगदीशजी आर्य से भी मेरा घनिष्ठ सम्पर्क है, आपके भतीजे **चि. सिकेन्द्र का विवाह दिनांक २५ अप्रैल को आयुष्मति रानू,**

निवासी : कुचडौद जागीर (म.प्र.) के साथ होना था तथा **चि. विक्रम का विवाह दिनांक १९ अप्रैल को सौ.कां. कविता के संग** हो चुका था। इस अवसर पर प्रीतिभोज तथा आशीर्वाद समारोह का आयोजन दिनांक २४ को सायंकाल होना था आपका विनम्र आग्रह था कि मैं अवश्य आऊँ अतः उपस्थिति देकर जलपान ग्रहण कर बच्चों को आशीर्वाद प्रदान कर निम्बाहेड़ा के लिए प्रस्थान किया।

आर्य समाज निम्बाहेड़ा के प्रमुख श्री पृथ्वीराज जी आंजना जिनका पूरा परिवार वैदिक धर्म सिद्धान्तों को प्राण-प्रण से समर्पित है। आपके निवास व व्यवसाय स्थल पर पहुँचा। श्री पृथ्वीराजजी एवं श्री विक्रमजी से भेंटवार्ता हुई। क्षेत्र में वैदिक धर्म गतिविधियों को संचालित कर रहे आचार्य कर्मवीरजी तथा आपके साथ एक नैष्ठिकजी ब्रह्मचारी जी भी आंजना जी के निवास पर पधारे हुए थे। आपसे भी भेंट तथा वैदिक संसार के प्रकाशन को लेकर विस्तारपूर्वक वार्ता हुई। **आपने वैदिक संसार पत्रिका के प्रकाशन की गुणवत्ता को तथा निरन्तरता को लेकर विस्मय प्रकट करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की तथा धन्यवाद प्रदान किया।** वैदिक संसार के संरक्षक महानुभाव श्री रतनलालजी राजौरा आप निम्बाहेड़ा न्यायालय में अधिवक्ता हैं तथा आपके सुपुत्र दन्त चिकित्सक तथा चार्टर्ड अकाउंटेंट का कार्य कर रहे हैं। आपसे मैंने अनुरोध किया था कि मुझे निम्बाहेड़ा से जावदा द्वितीय जो लगभग ८-१० किलोमीटर की दूरी पर उदयपुर मार्ग पर स्थित है वहाँ जाने के लिए मोटर साइकिल की आवश्यकता होगी। आपने सहर्ष आश्वस्त कर दिया था कि व्यवस्था हो जाएगी। आप जब निम्बाहेड़ा पहुँचे मुझे सूचित कर दें। मेरे सूचना देने पर राजौराजी एक्टिवा लेकर आ गए। मैं एक्टिवा से जावदा द्वितीय निवासी श्री सागरमलजी आर्य के निवास पर पहुँचा। आप तथा आपकी धर्मपत्नी दिनांक १६ अप्रैल को अपने परिवार के चित्तौड़गढ़ में आयोजित माँगलिक कार्यक्रम में भाग लेकर मोटर साइकिल से लौट रहे थे। पीछे से एक बूलेट मोटर साइकिल सवार ने आपके वाहन को तीव्रगति से टक्कर मार दी, फलस्वरूप आप दोनों पति-पत्नी गिर पड़े और आपकी मोटर साइकिल में आग लग गई, मोटर साइकिल पूरी तरह जलकर खाक हो गई। आपको दोनों हाथ, दोनों घुटनों में चोंट आई तथा आपकी धर्मपत्नी के दोनों पैरों की अस्थियाँ टूट गईं। ईश्वर की कृपा से आप दोनों के प्राण बच गए व अत्यधिक शारीरिक हानि से भी आप बच गए। आपके कुशलक्षेम समाचार प्राप्त किए तथा ८ मार्च को आपके सुपुत्र राजकुमार का विवाह सम्पन्न हुआ था। आपके सुपुत्र तथा पुत्रवधू को वैदिक सिद्धान्तों विषयक कुछ प्रेरणा के साथ आशीर्वाद प्रदान कर वहाँ से प्रस्थान किया। निम्बाहेड़ा पहुँचकर कुछ परिचित महानुभावों से भेंटवार्ता के साथ वैदिक संसार की प्रति दी तथा राजौराजी के निवास पर पहुँचा। आप कार्यवश कहीं गए हुए थे। आपके छोटे सुपुत्र ने मेरे अनुरोध पर मुझे बस स्थानक छोड़ दिया, जहाँ से मैंने बस द्वारा ब्यावर के लिए प्रस्थान किया। रात्रि १२.३० बजे ब्यावर पहुँचा, बस स्टैंड पर समधी श्री किशनलालजी आर्य के दोहित्र चि. अभिषेकजी प्रतिक्षारत मिले।

दिनांक २५ अप्रैल को श्री किशनलालजी आपकी धर्मपत्नी तथा मैंने मिलकर देवयज्ञ किया। श्री किशनलालजी के साथ जांगिड ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष श्री जसराजजी जांगिड तथा आर्य समाज के अध्यक्ष श्री रूद्रदेवजी आर्य व आर्य समाज के पुरोहित पं. अमरसिंहजी विद्यावाचस्पति से भेंटकर आपको विवाह में साथी- सहयोगियों के साथ पधारने का अनुरोध किया।

लगभग ११ बजे समधी श्री राकेशजी बानमौर से पधार गए। हम सबने भोजन ग्रहण किया, पश्चात् विवाह की व्यवस्था के लिए विश्वकर्मा भवन जाकर वार्ता आदि की। श्री भँवरलालजी देपड़ा के द्वारा आपके निवास पर भोजन का आग्रह था अतः सायंकाल आपके यहाँ भोजन ग्रहण कर अजमेर के लिए बस द्वारा प्रस्थान किया। अजमेर से रात्रि ९ बजे जयपुर-भोपाल-इन्दौर रेल में यात्रा टिकट आरक्षित था।

दिनांक २६ अप्रैल को ९.३० बजे इन्दौर पहुँचा। स्नानादि से निवृत्त हो समीप निवासी श्रीमती सुभद्राजी धीमान जिन्हें बच्चे-बूढ़े सभी मौसी कहते हैं। मौसी ने उनका नया मकान बनवाया था, **आपका आग्रह था कि आपके नवनिर्मित आवास में हमारे द्वारा देवयज्ञ करवाया जाए। मौसी के पुत्र धर्मेन्द्र तथा पुत्रवधू के मुख्य यजमानत्व व सुपुत्री तथा दोहिते व मौसी के सहयजमानत्व में वृहद देवयज्ञ किया।** वैदिक सिद्धान्तों का परिचय देकर वैदिक साहित्य स्वाध्याय व आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में भाग लेने की प्रेरणा प्रदान की। पश्चात् विश्राम किया। सायंकाल मई माह के अंक हेतु प्रकाशन सामग्री चयन किया। दिनांक २७ अप्रैल को लेखन कार्यों को किया तथा प्रकाशन सामग्री को संगणक संचालक को दिया।

दिनांक २८ अप्रैल को धर्मपत्नी के साथ इन्दौर से राऊ सुपुत्र नितिन शर्मा के यहाँ भोजन करने के बाद वहाँ रखे वेद प्रचार वाहन द्वारा सेन्धवा के लिए प्रस्थान किया। सायंकाल सेन्धवा पहुँचकर बहन प्रमिला तथा परिजनों से भेंटवार्ता पश्चात् बहन प्रमिला व भानजी स्तुति के साथ बड़वानी प्रस्थान किया। बड़वानी पहुँचकर संध्या-भोजन से निवृत्त हो स्तुति के विवाह के निमन्त्रण स्नेहीजनों को दिए। श्री कैलाश जी शर्मा के यहाँ शयन किया। दिनांक २९ अप्रैल को हम सभी के साथ भानजी श्रीमती निर्मला के परिजन तथा श्याल: जगदीश शर्मा व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अंजना शर्मा नर्मदा (राजघाट) स्नान हेतु गए। वापसी श्री कैलाश जी शर्मा के निवास पर आए। आपके ज्येष्ठ पुत्र डॉ. दीपक शर्मा धर्मपत्नी श्रीमती चंचल शर्मा के मुख्य यजमानत्व में हम सभी ने संध्या मन्त्र पाठ तथा वृहद देवयज्ञ किया। आप सभी को ईश्वर के ध्यान-उपासना की महत्व पर प्रकाश डालते हुए ईश्वर से निकटता बढ़ाकर ईश्वर के गुणों को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी। शेष रहे नियन्त्रण पत्रों को सगे-सम्बन्धियों, स्नेहीजनों के निवास पर जाकर दिए उनसे भेंटवार्ता पश्चात् सायंकाल इन्दौर के लिए प्रस्थान किया। अंजड़, धामनोद, महूगाँव के निमन्त्रण पत्र देते हुए रात्रि लगभग ११.३० पर ग्राम लोदरिया के आर्य श्री राधेश्याम जी गोयल जिनकी उत्कृष्ट काव्य रचनाएँ वैदिक संसार में प्रकाशित होती रहती है; आपके निवास पर पहुँचे। पूर्व वार्तानुसार आप प्रतिक्षारत मिले। आप वस्त्रों की सिलाई का कार्य करते हैं। बहुत दिनों से मन में था कि इस बार आपसे वस्त्र सिलवाए जाएँ। आपको कुर्ते-पायजामा बनाने के वस्त्र देकर राऊ के लिए प्रस्थान किया। रात्रि शयन सुपुत्र नितिन के यहाँ राऊ पहुँचकर किया। दिनांक ३० को राऊ से प्रातः ५.३० पर रेल द्वारा प्रस्थान कर इन्दौर आए स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत हो देवास के लिए प्रस्थान किया। बिटिया जयश्री तथा अन्य स्नेहीजनों के निमन्त्रण पत्र देकर इन्दौर आए। इन्दौर निवासी स्नेहीजनों के निमन्त्रण पत्र उनके निवास पर जाकर दिए। इस प्रकार अप्रैल माह की पूर्णता के साथ भानजी स्तुति के विवाह के निमन्त्रण पत्रों के वितरण कार्य भी सम्पन्न हुआ। परमपिता परमेश्वर की महती तथा असीम अनुकम्पा से मार्च तथा अप्रैल माह की यात्रा पूर्ण होकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। आगामी यात्रा वृतान्त जैसा भी घटित होगा जून माह के अंक में प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा, आगे प्रभु इच्छा सर्वोपरि है। ■

वैदिक संसार को आप महानुभावों का आर्थिक सहयोग (दान)

विगत मार्च अंक का शेष भाग तथा १६ मार्च २०१९ से १५ मई २०१९ तक

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि के रूप में वैदिक संसार को संरक्षण प्रदान वाले **आचार्य सर्वेश सिद्धान्ताचार्य जी** के विषय में जितना भी लिखा जाए कम ही है। आप त्यागी–तपस्वी विचारधारा के ऋषि अभियान को समर्पित व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति हैं। **आप वेदयोग महाविद्यालय (गुरुकुल) केहलारी, जनपद खण्डवा** के संस्थापक तथा संचालक हैं। वर्तमान में ५० ब्रह्मचारी गुरुकुल में अध्ययनरत हैं। आप बालकों को माता–पिता दोनों का अपुनम स्नेह प्रदान कर वात्सल्य भाव से उनका पालन–पोषण तथा सर्वांगीण विकास कर रहे हैं। पाठकों से अनुरोध है कि एक बार गुरुकुल जाकर आचार्य जी के कार्यों का प्रत्यक्ष अवलोकन करें तथा वैदिक धर्म सिद्धान्तों के माध्यम से बालकों के निर्माण रूपी जो यज्ञ आचार्य जी द्वारा किया जा रहा है उसमें अपनी भी आहुति प्रदान कर पुण्य के भागी बनें।

आचार्य जी के विषय में इसके पूर्व मार्च २०१५ के अंक में पृष्ठ ३९ पर, सितम्बर २०१५ के अंक में पृष्ठ ४१ पर, सितम्बर २०१६ के अंक में पृष्ठ ४० पर तथा अक्टूबर २०१७ के अंक में पृष्ठ ४५ पर विस्तृत रूप से प्रकाशित किया जा चुका है। आप वैदिक संसार परिवार के अभिन्न सदस्य हैं। वैदिक संसार परिवार आपके स्वस्थ, दीर्घायु, यशस्वी जीवन की कामना करता है। आपका चलभाष क्र. ९१७९१८३८३३ तथा ९१६५१६८१५८ है। आपकी प्रेरणा से अनेक महानुभाव वैदिक संसार के सदस्य बने जो निम्नानुसार हैं–

आजीवन सदस्य : महाराष्ट्र, जनपद– अमरावती : पं. देवदत्त जी शर्मा– आर्येन्द्र इलेक्ट्रिकल, अमरावती।

वार्षिक सदस्य :

मध्यप्रदेश, जनपद–खण्डवा : श्री नरेन्द्रसिंह जी सोलंकी– केहलारी, डॉ. दिलीप जी– हिन्दुजा हॉस्पिटल खण्डवा, श्रीमान थाना प्रभारी महोदय– पुलिस थाना जावर, श्रीमान थाना प्रभारी महोदय– पुलिस थाना मून्दी, श्री नरेन्द्रसिंह गोपाल जी तोमर– केहलारी, श्री राजेश जी जायसवाल 'सरपंच सा.' केहलारी, श्री तेजसिह मोटर ट्रेनिंग स्कूल– खण्डवा, श्रीमान देवेन्द्रजी वर्मा **'विधायक महोदय'**– खण्डवा, डॉ. पियूष जी– पीयूष हॉस्पिटल खण्डवा, श्री सुभाष जी कोठारी **'महापौर'**– खण्डवा, शास्त्री हरिओम् जी यादव– राजगढ़ रैय्यत।

जनपद– शाजापुर : श्री शेखर शंकरलाल जी आर्य– करजू।

जनपद– विदिशा : श्री योगेन्द्र नारायण सिंह जी आर्य– पड़रिया जागीर।

जनपद– भोपाल : श्रीमती मेथा आर्या– न्यू मिनाल रेसीडेंसी, भोपाल।

जनपद– मन्दसौर : श्री भेरूलाल जी सूर्यवंशी– लखमाखेड़ी।

जनपद– बुरहानपुर : डॉ. मालती प्रजापति– बुरहानपुर।

दिल्ली : श्री वेदप्रकाश जी नारंग– गोविन्दपुरी (कालका जी), दिल्ली।

हरियाणा, जनपद– करनाल : श्री केवलराम कुकरेजा ट्रस्ट– सेक्टर ८, करनाल।

महाराष्ट्र, जनपद– लातूर : श्री सन्तोष भीमाशंकरजी आर्य– होनमाल, न्यू गायत्री गायकवाड़ ऑटो पार्ट्स, लातूर।

जनपद– अकोला : श्री नरेन्द्र जी शास्त्री– अकोला, श्री प्रधानजी/मन्त्री जी आर्य समाज, अकोला।

जनपद– अमरावती : श्री अध्यक्ष महोदय– स्वस्तिकाम चेरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती।

....................ꟹ ꟸ....................

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि श्री मनीरामजी चौहान, सुपुत्र श्री आनन्दीलाल जी चौहान, निवासी शिवतला, जनपद : रायसेन (म.प्र.) सरलता, सहृदयता के साथ वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार को समर्पित श्री चौहान जी ७५ वर्ष आयु अवस्था तथा शारीरिक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के उपरान्त भी सामाजिक कार्यों में सदा सक्रिय रहते हैं। आपके ही कारण रायसेन जनपद के साथ–साथ सीहोर और भोपाल जनपदों के अनेक परिवारों को वैदिक संसार के माध्यम से वैदिक धर्म सिद्धान्तों का लाभ प्राप्त हो रहा है अन्यथा रायसेन जनपद में वैदिक संसार का प्रचार–प्रसार दयनीय अवस्था में था। वैदिक संसार परिवार आपका हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करते हुए आपके स्वस्थ, दीर्घायु, यशस्वी जीवन की कामना करता है। आपका विस्तृत जीवन परिचय जून २०१८ के पृष्ठ ४०–४१ पर प्रकाशित किया गया था। आपका चलभाष क्रमांक ९९९३१९५६३० है। आपकी प्रेरणा से वैदिक संसार के वार्षिक सदस्य निम्नानुसार बने–

मध्यप्रदेश, जनपद– रायसेन : श्री महेश शंकर सिंह जी चौहान 'नेताजी'– शिवतला, श्री देवीसिंह काशीराम जी चौहान– कुटनासिर, श्री अरुण नरेश जी ठाकुर– शिवतला, श्री आर.एस. साहू, सुपुत्र– श्री शिवप्रकाश जी साहू– बाड़ी, श्री ब्रजभूषण मंगलसिंह जी पटेल– शिवतला, श्री हनमन्त सिंह सुन्दरलालजी विश्वकर्मा– समनापुर काछी, श्री किशोरसिंह मोतीलाल जी पटेल– मोकलवाड़ा, श्री विजयसिंह गोपालसिंह जी परमार– बाड़ी, श्री बाबूसिंह हरनामसिंह जी भदौरिया– बाड़ी, श्री अजय हरिशंकर जी श्रीवास्तव– बाड़ी, श्री दलसिंह हल्केराम जी चौहान– बाड़ी, ठा. धनराजसिंह धर्मराज सिंह जी– हरसिली, श्री प्रधान/मन्त्रीजी आर्य समाज– बाड़ी, श्री चन्नूलाल नन्हेलाल जी सिलावट–बाड़ी, श्री सुरेन्द्र कपूर सिंह जी पटेल– चन्दवार।

जनपद– सीहोर : श्री शेरसिंह हनमतसिंह जी चौहान– डोबी, श्री

लखनलाल शंकरलाल जी राठौर– डोबी (त्रैवार्षिक)।

जनपद– भोपाल : श्री रमेशचन्द्र जी नामदेव (वर्षा ट्रेडर्स)– बैरसिया।

....................☙ ❧....................

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि ७५ वर्षीय श्री बंशीलाल जी आर्य, सुपुत्र : श्री डालूराम जी आर्य (विश्वकर्मा), निवासी– बरखेड़ा पंथ, जनपद : मन्दसौर (म.प्र.) मिलनसार, सेवाभावी, कर्मठ तथा जुझारू प्रतिभा के धनी आर्य जी वर्तमान में मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान (रतलाम सम्भाग) के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधियों की सूची में आप अग्रणी स्थान रखते हैं। आपके तथा श्री मोहनलालजी दशोरा के सहयोग से सम्पूर्ण भारत भर में सर्वाधिक वैदिक संसार के सदस्य मन्दसौर जनपद में होकर सामान्यजनों को वैदिक धर्म सिद्धान्तों का लाभ प्राप्त हो रहा है। जिसके लिए वैदिक संसार परिवार आपका हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए आपके स्वस्थ, दीर्घायु, यशस्वी जीवन की कामना करता है। आपका विस्तृत जीवन परिचय अगस्त २०१८ के अंक में प्रकाशित किया गया था। आपका सम्पर्क क्रमांक ९८२६७२०१६४ है। आपकी प्रेरणा से बने वार्षिक–त्रैवार्षिक सदस्य निम्नानुसार हैं–

मध्यप्रदेश, जनपद– मन्दसौर : श्री दिलीपकुमार बाबूलाल जी आर्य– कनघट्टी, श्री देवीलाल बालू जी आर्य– कनघट्टी, श्री समरथमल जी आर्य– कनघट्टी, श्री भेरूलाल गोविन्दराम जी कुमावत– कनघट्टी, श्री रामचन्द्र पन्नालाल जी कुमावत– कनघट्टी, श्री रवि प्रसाद महेश जी शर्मा– बरखेड़ा देव डुंगरी, श्री भागीरथ चेनराम जी लाइनमेन– बरखेड़ा पंथ, श्री नाथूलाल जी यादव 'वकील सा.'– नारायणगढ़, श्री नन्दकिशोर राधाकिशन जी सुतार– लूनाहेड़ा श्री मोहनलाल जी राठौर 'पोस्ट मास्टर'– पीपल्या मण्डी (त्रैवर्षिक), श्री रामप्रसादजी आर्य– पीपल्या मण्डी, श्री ओमप्रकाश रामकिशनजी गेहलोद– पीपल्या मण्डी, श्री श्यामलाल जोगचन्द जी– पीपल्या मण्डी, श्री विजयसिंह मूलचन्द जी आर्य– बादरी, श्री सुधीर जी गुप्ता **'सांसद महोदय'**– मन्दसौर, श्री कमलेश माँगीलाल जी आर्य– कनघट्टी, श्री माँगीलाल हीरालाल जी आर्य– कनघट्टी, श्री दिलीप बाबूलाल जी आर्य– कनघट्टी, श्री नन्दलाल प्रभुलाल जी आर्य– बूढ़ा।

जनपद– नीमच : श्री देवकरण जगमोहन जी उज्जैनिया– बघाना, श्री बाबूलाल जी लाइनमेन– बामन बरड़ी (त्रैवार्षिक), श्री घनश्याम कालूराम जी शर्मा– नीमच, श्री दिनेश कन्हैयालाल जी शर्मा– नीमच।

राजस्थान, जनपद–कोटा: श्री ओमप्रकाश जी शर्मा– तलवण्डी कोटा (त्रैवार्षिक), श्री कन्हैयालाल जी नेवड़िया– दादावाड़ी कोटा (त्रैवार्षिक)।

....................☙ ❧....................

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि श्री शंकरलाल जी पाटीदार, सुपुत्र : श्री जगन्नाथ जी पाटीदार, निवासी– कसरावद, जनपद : खरगोन (म.प्र.) आपका जन्म खरगोन जनपद की महेश्वर तहसील के नान्द्रा ग्राम में दिनांक १.११.१९४३ को हुआ। आप बाल्यकाल से आर्य समाज द्वारा संचालित आर्यवीर दल से जुड़े। आपके पिता का बाल्यकाल में ही

निधन हो जाने से आप अपने पिता के स्नेह से वंचित रहे। बी.एससी., बी.एड. तक शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् आपका चयन शिक्षा विभाग में हो गया। आपने ३० रुर्षो तक बालसमुद, जनपद : खरगोन में अपनी सेवाएँ प्रदान कर स्कूल में अध्यापन कार्य के पश्चात् अतिरिक्त समय में अपने विद्यार्थियों को निःशुल्क अध्यापन सेवाएँ देकर विद्यादान का पुनित कार्य कर एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया। आपसे शिक्षा प्राप्त आपके शिष्य डॉक्टर, इंजीनियर, नौसेना आदि उच्च पदों पर पहुँचकर मानव जाति तथा राष्ट्र की उन्नति में अपना योगदान देकर अपनी तथा आपकी कीर्ति पताका फहरा रहे हैं। आपका विवाह १९७४ में अक्षय तृतीया पर सुन्द्रेल जनपद : धार निवासी श्री नारायणजी जेवी की सुपुत्री सौ.कां. विमलादेवी से हुआ। आपके एक सुपुत्र श्री रवीन्द्र पाटीदार तथा एक सुपुत्री श्रीमती गायत्री रूपेश जी पटेल, निवासी : येवला (महाराष्ट्र) आजीवन सदस्य वैदिक संसार हैं। आपका परिवार वैदिक सिद्धान्तों को समर्पित है। आपको कसरावद वाले बालकृष्ण जी आर्य का विशेष स्नेह तथा आशीर्वाद प्राप्त है। आपके द्वारा खरगोन जनपद में स्थान–स्थान पर प्रेरणा देकर वैदिक संसार के सदस्य बनाए गए हैं तथा डाक विभाग की शिथिलता के चलते कसरावद की समस्त पत्रिका पार्सल से अपने पास मंगवाकर स्वयं वितरण करते हैं। वैदिक संसार परिवार आपका हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए आपके स्वस्थ, दीर्घायु, यशस्वी जीवन की कामना करता है। आपका सम्पर्क क्रमांक ९७५२३९३८३५ है। आपकी प्रेरणा से बने सदस्य निम्नानुसार हैं–

आजीवन : मध्यप्रदेश, जनपद– खरगोन : श्री बालकृष्ण शंकरलाल जी आर्य– कसरावद, श्री जगन्नाथ हीरालाल जी पाटीदार– बालसमुद।

त्रैवार्षिक : मध्यप्रदेश, जनपद– खरगोन : श्री कन्हैयालाल जी पाटीदार– भीलगाँव, श्री घीसीलाल जोगीलाल जी पाटीदार– कसरावद, श्री बालकृष्ण शंकरलाल जी आर्य– कसरावद, श्रीमान प्राचार्य महोदय, सरदार वल्लभ भाई पटेल उ.मा.वि.– कसरावद, श्री महादेव जी आर्य– कसरावद, श्री जगन्नाथ हीरालाल जी पाटीदार– बालसमुद, श्री मदनसिंग धन्नालाल जी पटेल– बालसमुद, श्री राजेश गजानन्द जी बड़ोले– कसरावद, श्री दयानन्द शंकरलाल जी पाटीदार– कसरावद, श्री अशोक गुलाबचन्द जी पटेल– बालसमुद, श्री सुभाषचन्द्र नत्थू जी पाटीदार 'अधिवक्ता'– कसरावद, श्री सत्यप्रिय ओमप्रकाश जी आर्य– बालसमुद।

जनपद– देवास : श्री अंतरसिंह जी पर्वतसिंह जी पाटीदार– हाटपीपल्या।

वार्षिक : मध्यप्रदेश, जनपद– खरगोन : श्री महादेव जी आर्य– कसरावद, श्री बालकृष्ण शंकरलालजी आर्य– कसरावद, श्री राजेश गजानन्द जी बडोले– कसरावद, श्री डोंगरलाल जी पुरुषार्थी– कसरावद, श्री जगन्नाथ हीरालाल जी पाटीदार– बालसमुद, सरदार वल्लभ भाई पटेल उ.मा.वि.– कसरावद, श्री मदनसिंह जी पटेल– बालसमुद, श्री अशोक गुलाबचन्द जी पटेल– बालसमुद, श्री विजय कैलाशचन्द्र जी पाटीदार– कसरावद, श्री सत्यप्रिय ओमप्रकाश जी आर्य– बालसमुद, श्री शंकरलाल लक्ष्मण जी पटेल– बालसमुद, श्री कृष्ण पाटीदार (मन्त्रीजी)– कसरावद।

....................☙ ❧....................

अन्य महानुभावों द्वारा किया गया विविध सहयोग

आजीवन :

मध्यप्रदेश, जनपद– रतलाम : श्री गोवर्धनलाल जी वण्डेला– रतलाम।

जनपद– मन्दसौर : आर्य बाल मन्दिर बूढ़ा।

जनपद– उज्जैन : श्री कमल सेवाराम जी आर्य– नागदा जंक्शन

पंचवर्षीय :

दिल्ली : श्री रामपालसिंह हरपाल सिंह जी आर्य– नांगलोई, नई दिल्ली।

त्रैवार्षिक :

मध्यप्रदेश, जनपद– रतलाम : श्री मयंक सुभाष जी सोनी– रतलाम, श्री विजयकुमारजी जायसवाल 'काण्डरवासा वाले'– नामली, श्री रवि श्यामलाल जी कसेरा– सैलाना, श्री दिलीप रणछोड़ जी परिहार– सैलाना, श्री अशोककुमार अम्बालाल जी सोलंकी– सैलाना।

जनपद– सीहोर : श्री नरेन्द्र देवकरणजी चौधरी– खामखेड़ा (बैजनाथ), श्री प्रकाश कोदरमलजी आर्य– खामखेड़ा (बैजनाथ), श्री भरत हरिनारायणजी आर्य– खामखेड़ा (बैजनाथ), श्री प्रेमलाल भगवतसिंह जी आर्य– खामखेड़ा (बैजनाथ), श्री मुकेश हजारीलाल जी आर्य– खामखेड़ा (बैजनाथ)।

जनपद– इन्दौर : श्री ओमप्रकाश केशवदासजी गाबा– इन्दौर ०१, श्री प्रधानजी/ मन्त्रीजी आर्य समाज– दयानन्द गंज, इन्दौर।

जनपद– शाजापुर : श्री सीताराम ओंकारसिंहजी वर्मा– खाटसूर, श्री धर्मसिंह माखनसिंहजी वर्मा– खाटसूर।

जनपद– मन्दसौर : श्री चेनराम माँगीलालजी लोहार– बूढ़ा, श्री घनश्याम रामेश्वरजी लोहार– बूढ़ा, श्री सुरेशचन्द्र रामप्रसाद जी पाटीदार– बूढ़ा, श्री संजीव रामभजन जी आर्य– बूढ़ा।

जनपद– नीमच : श्री प्रधान/मन्त्रीजी, आर्य समाज– नीमच, श्री सुनील वीरेन्द्र कुमार जी पाटीदार– जावी, श्री घनश्याम बद्रीलाल जी पाटीदार– सावन।

जनपद– उज्जैन : श्री उच्छवलाल रामरतन जी पाटीदार– खरसौदकलां, श्री बाबूलाल रामेश्वर जी पाटीदार– खरसौदकलां, श्री महेश मोहनलालजी सोनी– नागदा जंक्शन, डॉ. प्रदीप गणेशीलाल जी चतुर्वेदी– नागदा जंक्शन।

जनपद– खरगोन : श्री सत्यदेव कृष्णकुमार जी आर्य– महेश्वर।

जनपद– बड़वानी : श्री मोहनलाल द्वारकाप्रसाद जी पाटीदार– कुआँ तथा आपकी प्रेरणा से– श्री विजय देवव्रतजी पाटीदार– कुआँ, श्री प्रकाश नत्थू पाटीदार– कुआँ, श्री सत्येन्द्र चन्द्रशेखर जी सेन– कुआँ, श्री दीपक सुभाषचन्द्र जी पाटीदार– श्री एकेडमी कुआँ, श्रीमती सुशीला पन्नालाल जी वर्मा– बड़वानी।

जनपद– देवास : श्री विनयकुमार अम्बाराम जी गामी– देवगढ़।

राजस्थान, जनपद– प्रतापगढ़ : डॉ. नासीर साबिर खॉन– गोमाना।

जनपद– चुरू : श्री नरेन्द्र रामस्वरूप जी भारतीय– काजला।

उत्तरप्रदेश, जनपद– मेरठ : श्रीमती वन्दना चौधरी धर्मपत्नी श्री सौरभ जी जावा– मेरठ।

जनपद– शामली :श्री रामेश्वरदयालजी– शामली।

उत्तराखण्ड, जनपद– पौड़ी गढ़वाल : श्री राजेन्द्रसिंह जी आर्य– शिवपुर, श्री नवीन जी उनियाल– सतफुली।

ओडिशा, जनपद– भुवनेश्वर : श्री अमूल्य चरणदासजी आर्य– पूबा शासन (कौशल्यागंगा)।

हरियाणा, जनपद– पानीपत : श्री रूपनारायण भीमसिंह जी जांगड़ा– आट्टा।

जनपद– पलवल : श्री महेन्द्रसिंह बुधसिंह जी आर्य– हसनपुर।

कर्नाटक, जनपद– बैंगलोर : श्री अरुण कुमार जी त्रिवेदी– बैंगलोर।

जनपद– बीदर : श्री मानव मित्र जी आर्य– बीदर।

पंजाब, जनपद– लुधियाना : श्री श्रवणकुमार ज्ञानचन्द जी आर्य– अरबन स्टेट डुंगरी।

गुजरात, जनपद– कच्छ : योगाचार्य कुलदीप सुरेशचन्द्र जी आर्य– गान्धीधाम।

वार्षिक

गुजरात, जनपद– अहमदाबाद : श्री मुकेश श्रीचन्द जी खियाणी– नाना चिलोड़ा।

जनपद– अरवल्ली : श्रीमती मधुबेन राजूभाई पटेल– मोड़ासा।

हरियाणा, जनपद– महेन्द्रगढ़ : श्री जगमाल सिंह जी आर्य 'बाबूजी'– गणीयार।

जनपद– रेवाड़ी : श्री सुरेन्द्र सुरेशकुमार जी शास्त्री– मीरपुर, श्री युद्धवीर धीरजसिंह जी आर्य– रेवाड़ी, श्री सत्यपाल दातारामजी आर्य– नैचाना।

जनपद–करनाल : श्री नरसिंह फूलीराम जी आर्य– चोर कोरसा।

जनपद– रोहतक : डॉ. बलवीर हरकेराय जी शास्त्री– रोहतक।

राजस्थान, जनपद– प्रतापगढ़ : श्री चान्दमल हीरालाल जी साहू– छोटी सादड़ी।

जनपद– अजमेर : श्री मधुसुदन किशनलाल जी जांगिड– कोटड़ा, श्री सी.पी. यादव सुपुत्र श्री आर.पी. यादव जी– अजमेर, श्री विष्णुदेव महादेव जी आर्य– ब्यावर, श्री रामेश्वरप्रसाद देवीलाल जी शर्मा– बाड़ी, श्री प्रधान/ मन्त्रीजी, आर्य समाज– विजयनगर।

जनपद– जोधपुर : श्री ताराचन्दजी जांगिड– जोधपुर, श्री शंकरलाल हनुमानप्रसाद जी शर्मा– जोधपुर।

जनपद– पाली : श्री कान्तिलाल जी रांका– पाली, श्री नरसिंह बाबूलाल जी आर्य– पाली, श्री रमेश स्वरूपरामजी चौधरी– पाली, श्री प्रधानजी/मन्त्री जी आर्य समाज– पाली, श्री मुकेश चम्पालाल जी कुमावत– पाली, श्री भरतकुमार रामलाल जी मीणा– पाली, श्री रत्केश ओमप्रकाश जी ओझा– पाली, श्री कैलाश नारायणलाल जी सेन– पाली, गाँधी पुस्तकालय– पाली, श्री महेन्द्रदत्त घीसूलालजी जोशी पाली।

जनपद– जालौर : श्री कार्तिक चरण जी– रामसीर, श्री नरपतसिंह जी आर्य– धोराढाल।

जनपद– अलवर : श्री सत्यपालसिंह जंगीराम जी यादव– भूपखेड़ा (बूढ़वाल)।

जनपद– सिरोही : श्री विनोद देवहरिजी पाठक– रोहिड़ा।

जनपद– सीकर : श्री मदनलाल जगन्नाथ प्रसाद जी जांगिड– कोटड़ी धायलान, आचार्य विनोदजी शास्त्री– फतेहपुर शेखावटी, डॉ. नरेश निरंजनलाल जी सैनी– फतेहपुर शेखावटी, श्री सुमनसिंह धड़सीराम जी मील– फतेहपुर शेखावटी।

जनपद– हनुमानगढ़ : श्री जगदीश भूरारामजी देहमण– हनुमानगढ़ टाउन, श्री रवि नत्थुरामजी खण्डेलवाल– हनुमानगढ़ टाउन, श्री सत्यपाल विश्वम्बर दयाल जी खण्डेलवाल– हनुमानगढ़ टाउन।

जनपद– बीकानेर : श्री रमेश कुमार बाबूलालजी तंवर– बीकानेर, श्री मुकेश कुमार जेठमल जी लदरेचा– बीकानेर, श्री नरसिंह गंगाराम जी सोनी– बीकानेर।

जनपद– बांसवाड़ा : डॉ. युधिष्ठिर जी की प्रेरणा से– श्रीमती शकुन्तला बहादुर जी बर्मन– बांसवाड़ा, श्री अभिषेक प्रदीप जी त्रिवेदी– बांसवाड़ा, डॉ. यशवंत जी बर्मन– बांसवाड़ा, श्री आर.के. पाण्डेय जी– बांसवाड़ा।

मध्यप्रदेश, जनपद– खण्डवा : श्री कैलाश धन्नालालजी पालीवाल– मून्दी।

जनपद– सीहोर : श्री शान्तिप्रकाश नन्दकिशोर जी आर्य– खामखेड़ा (बैजनाथ)।

जनपद– धार : श्री ओमदत्त जी आर्य– बगड़ीपुरा (सुन्द्रेल)।

जनपद– इन्दौर : श्री अनिल जी डाकवाले– इन्दौर–१२, सुश्री सुशीला बद्रीप्रसाद जी शर्मा– इन्दौर–०७, श्री मनीराम जी शर्मा– इन्दौर–०२।

जनपद– मन्दसौर : श्री पंकज रामप्रसाद जी राठौर– शामगढ़, श्री मदनलाल भगवतीलाल जी सोनी– शामगढ़, श्री लक्ष्मीचन्द माँगीलालजी लोहार– बूढ़ा।

जनपद– नीमच : श्री जगदीश प्रसाद जी आर्य– गिरदौड़ा **(द्विवार्षिक)**

जनपद– शिवपुरी : श्री हरिनिवासजी गुप्त की प्रेरणा से– श्री राधेश्याम जी लोधी– सिरसौद, श्री सुरेश जी बन्धु करैरा, श्री साहूलाल जी सेठ– सिरसौद, श्री अरुण कुमार जी लाक्षाकार– सिरसौद।

जनपद– होशंगाबाद : श्री लखनसिंह जी राजपूत– इटारसी।

जनपद– रतलाम : श्री चान्दमल घनश्याम जी सोनी– धामनोद, श्री हरिनारायण पन्नालाल जी राव– धामनोद, श्री देवीसिंह प्रतापसिंह जी सिसौदिया– धामनोद, श्री सतीशचन्द्र मोहनलालजी दय्या– रतलाम, डॉ. सुशील जी कपूर– सरवन, श्री संजय बाबूलालजी कसेरा– सैलाना, श्री चान्दमल घनश्याम जी सोनी– धामनोद।

जनपद– शाजापुर : श्री राधेश्याम रामगोपाल जी आर्य– करजू।

जनपद– खरगोन : श्री शंकरलाल लक्ष्मणजी पटेल– बालसमुन्द।

जनपद– आगर : श्री मनोहर जी ऊंटवाल 'माननीय विधायक महोदय'– आगर मालवा, श्री प्रेमनारायण भालूरामजी देवड़ा– बड़ौद।

जनपद– झाबुआ : श्री खेमचन्द बाबू जी आर्य– सुजापुरा।

जनपद– छतरपुर : श्री मन्त्रीजी आर्य समाज– महाराजपुर।

उत्तरप्रदेश, जनपद– सहारनपुर : श्री प्रेमसिंह सुधनसिंह जी आर्य– समसपुर।

जनपद– देवरिया : आचार्य रामज्ञानी जी आर्य 'उपदेशक'– लारटाउन।

जनपद– बलिया : श्री रामनाथ नामनरेश जी चौरसिया– राजपूत नेउरी।

जनपद– मथुरा : डॉ. सत्यदेव वल्लभसिंह जी– मथुरा।

जनपद– मीरजापुर : श्री सिद्धनाथसिंहजी– कैलहट बाजार, श्री अमरनाथ रामनारायण सिंह जी आर्य– विशुनपुरा।

जनपद– गाजियाबाद : श्री अरविन्द हरप्रसाद जी पथिक– टीला, **डॉ. कृपालसिंह जी वर्मा, प्रधान : वेद विद्या प्रचार समिति, गाजियाबाद आपकी प्रेरणा से–** श्री कमलसिंह छंगासिंह जी– गोविन्दपुरम, श्री रमेशजी सुपुत्र श्री एस. सिंह जी चन्द्रा– गोविन्दपुरम, श्री डी.वी. सिंह जी सूबेदार– गोविन्दपुरम, श्री एस.डी. दिवाकर जी– गोविन्दपुरम, श्री डी.वी. सिंह जी– गाजियाबाद, श्री राजेन्द्र सिंह जी प्रधान आर्य समाज– गोविन्दपुरम, श्री इन्द्रजीत जी भदौरिया– गोविन्दपुरम, श्री सतीश जी सहारन– गोविन्दपुरम। **(शेष आगामी अंक में)**

शोक सूचना

श्री जे.आर. शर्मा जी, निवासी– प्रयागराज (इलाहाबाद), उ.प्र. की धर्मपत्नी **श्रीमती प्रेमकुमारी जी शर्मा** का निधन ८ मई २०१९ को ७० वर्ष की आयु में कोलकाता में हो गया। आप पिछले कई वर्षों से अस्वस्थ होकर अपने छोटे सुपुत्र के पास कोलकाता में उपचार लाभ ले रही थीं।

आपका पीहर बलिया का था। १४ मई १९६२ को आपका विवाह विद्याभवन नारायणपुर, जनपद : बलिया निवासी श्री जे.आर. शर्मा जी के साथ हुआ था। शर्माजी उत्तरप्रदेश चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं में पेथालॉजिस्ट थे। विभिन्न चिकित्सालयों में सेवा देते हुए महिला चिकित्सालय इलाहाबाद से सेवानिवृत्त हो गए। सेवाकाल के समय से ही आपने प्रयागराज को अपना स्थायी निवास स्थान बना लिया था। आप आर्य समाज प्रयागराज से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं।

आपके दो सुपुत्र श्री बालेश्वरनाथ शर्मा महिन्द्रा एंड महिन्द्रा के ट्रक–बस प्लांट पूणे में इंजीनियर पद पर सेवारत हैं तथा छोटे सुपुत्र श्री प्रभातरंजन जी शर्मा बी.एस.एफ. में द्वितीय कमान अधिकारी के पद पर कोलकाता में पदस्थ होकर देश सेवा कर रहे हैं। एकमात्र सुपुत्री श्रीमती तृप्ति कंचन विश्वकर्मा धर्मपत्नी डॉ. ज़ितेन्द्र कुमार विश्वकर्मा प्रोफेसर पॉलिटिकल साइंस वर्धमान डिग्री कॉलेज बिजनौर है।

माताजी का अन्तिम संस्कार रतनघाट कोलकाता पर पूर्ण वैदिक विधि विधान से आर्य समाज विधानसरणी, कोलकाता के आचार्य श्री वेदव्रतजी तिवारी तथा आ. वेदप्रकाश जी शास्त्री द्वारा सम्पन्न करवाया गया। अस्थि संचय पश्चात् शुद्धि यज्ञ एवं शान्तिपाठ दिनांक ११ मई को बी.एस.एफ. कैम्पस, टैगोर विला, कोलकाता पर किया गया।

दिनांक २० मई को निज निवास सूबेदार गंज, प्रयागराज में शन्तिपाठ एवं श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न हुई। वैदिक संसार परिवार दिवंगत आत्मा के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

आर्य समाज बूढ़ा, मन्दसौर (म.प्र.) द्वारा आर्य समाज स्थापना दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया।

संस्था प्रधान बद्रीलालजी लोहार, रामभजनजी पाटीदार, तथा अन्य सहयोगी आर्यजन देवयज्ञ में आहूतियाँ प्रदान करते हुए ।

विहंगम शोभायात्रा में स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती के साथ चलते प्रधान श्री बद्रीलालजी, श्री रामभजनजी तथा अन्य आर्यजन।

आगामी वर्ष के समारोह हेतु आर्य समाज टकरावद के पदाधिकारियों को ओ३म् ध्वज सौंपते आर्यजन।

आयोजन में विशाल संख्या में उपस्थित श्रद्धालुजन।

विस्तृत समाचार पढ़ें यात्रा वृत्तान्त में

आर्य समाज धामनोद, रतलाम (म.प्र.) का वार्षिकोत्सव रामकथा तथा पंच महायज्ञ द्वारा सम्पन्न

रामकथा के माध्यम से वेद ज्ञानामृत वर्षा करते स्वामी शान्तानन्दजी सरस्वती, दर्शनाचार्य : दर्शन योग महाविद्यालय, प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर (रोहतक), हरियाणा

प्रातःकालीन देवयज्ञ में आहुतियाँ प्रदान करते उपस्थित वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा तथा विभिन्न स्थानों से पधारे आर्यजन।

मंचस्थ स्वामीजी, प. कमलकिशोरजी शास्त्री, बाल भजनोपदेशिकाएँ तथा अन्य विद्वत्गण।

आर्य समाज धामनोद के सक्रिय सेवाभावी बन्धुओं का अभिनन्दन कर आशीर्वाद प्रदान करते स्वामीजी।

विस्तृत विवरण पढ़ें यात्रा वृत्तान्त में

एम.पी.एच.आई.एन.-२०१२/४५०६९ • सम्पादक : गजेश शास्त्री • डाक पंजीयन : एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१८-२०

आर्य श्री मोहनलालजी दशोरा सम्मानित किये गये

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि तथा स्वतन्त्र, निःस्वार्थी रचनाकार **श्री मोहनलालजी दशोरा**, निवासी : नारायणगढ़, जनपद : मन्दसौर (म.प्र.) को वर्ष २०१८-१९ में श्रेष्ठ, मौलिक एवं प्रेरणास्पद लेखन के लिये पाटीदार जागृति न्यास, मन्दसौर (म.प्र.) द्वारा दिनांक २४ अप्रैल २०१९ को न्यास की वार्षिक साधारण सभा के अवसर पर सम्मानित किया गया। न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका **'पाटीदार जागृति'** में श्री दशोराजी की रचनाएँ प्रमुखता से प्रकाशित होती हैं। **वैदिक संसार परिवार** आपकी इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आपके स्वस्थ, दीर्घायु, यशस्वी जीवन की कामना करता है।

वैदिक संसार के सम्माननीय संरक्षक महानुभाव

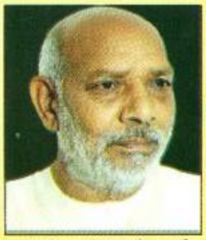
ठा. विक्रमसिंह जी आर्य
अध्यक्ष
राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली

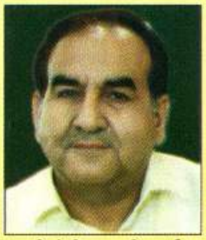
श्री नेमीचन्द जी शर्मा
भामाशाह-राज सरकार
गान्धीधाम (गुजरात)

श्री पूनाराम जी बरनेला
बरनेला चेरिटेबल ट्रस्ट
जोधपुर (राजस्थान)

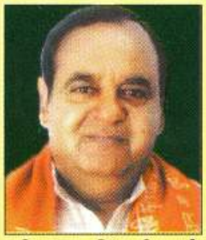
श्री रामफलसिंह जी आर्य
प्रा. वरिष्ठ उपप्रधान
सुन्दर नगर (हिमाचल प्रदेश)

अधि.रतनलाल जी राजौरा
उपमन्त्री-आर्य समाज
निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

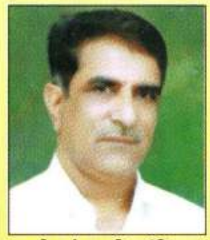
श्री नरेश जी जांगिड
वरिष्ठ समाजसेवी
जोधपुर (राजस्थान)

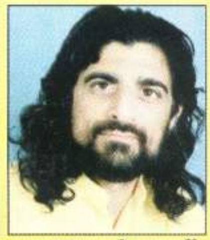
आ. आनन्द जी पुरुषार्थी
अ. वैदिक प्रवक्ता
होशंगाबाद (म.प्र.)

श्री विनोद जी जायसवाल
वरिष्ठ समाजसेवी
रायपुर (छत्तीसगढ़)

श्री वेदप्रकाश जी आर्य
आई.ओ.सी.एल.
सवाई माधोपुर (राज.)

श्री लेखराज जी शर्मा
टी.पी.टी. कॉन्ट्रेक्टर
भरतपुर (राज.)

श्री सुनील जी शर्मा
जा.ब्रा. प्रदेशाध्यक्ष
पौण्डा (गोवा)

श्री नानूराम जी जांगिड
जा.ब्रा. जिलाध्यक्ष
धुलिया (महाराष्ट्र)

श्री गजानन्द जी जांगिड
जा. ब्रा. जिलाध्यक्ष.
जालना (महाराष्ट्र)

श्रीमती सुमित्रा जी शर्मा
योग प्रशिक्षिका
अहमदाबाद (गुजरात)

श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य
प्रधान सार्वदेशिक सभा
अहमदाबाद (गुजरात)

आचार्य सोमदेवजी आर्य
वैदिक धर्मोपदेशक
आर्यवन (गुजरात)

सुश्री अंजलि जी आर्या
वैदिक भजनोपदेशिका
घरोंडा (हरियाणा)

श्री अर्जुन जी झलोया
वरिष्ठ समाजसेवी
मन्दसौर (म.प्र.)

श्री ओमप्रकाशजी शर्मा
वरिष्ठ समाजसेवी
आगरा (उ.प्र.)

श्री महेन्द्र जी आर्य
वरिष्ठ समाजसेवी
अहमदाबाद (गुजरात)

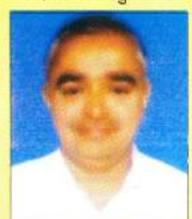
श्री किशन जी रड़े
वरिष्ठ समाजसेवी
भुसावल (महाराष्ट्र)

श्री सांवरमल जी शर्मा
वरिष्ठ समाजसेवी
वास्को डीगामा, गोवा

श्री अनिल जी शर्मा
युवा समाज चिन्तक
इन्दौर (म.प्र.)

आ. सर्वेशजी सिद्धान्ताचार्य
वैदिक शिक्षाविद्
गुरुकुल केहलारी (म.प्र.)

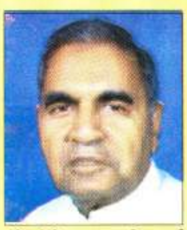
श्री गोविन्दराम जी आर्य
वैदिक धर्म प्रचारक
देपालपुर (इन्दौर)

श्री मोहनलाल जी दशोरा
चिन्तनशील साहित्यकार
नारायणगढ़ (म.प्र.)

श्री बंशीलाल जी आर्य
आर्य नेता
बरखेड़ापन्थ (म.प्र.)

श्री ज्ञानकुमार जी आर्य
वैदिक मनीषी
लातूर (महाराष्ट्र)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : सुखदेव शर्मा, इन्दौर द्वारा इन्दौर ग्राफिक्स, २४, कुँवर मण्डली से मुद्रित एवं १२/३, संविद नगर, इन्दौर-१८ से प्रकाशित